www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

हिन्दी–अ

रचनात्मक मूल्यांकन
हेतू
शिक्षक संदर्शिका

कक्षा– X

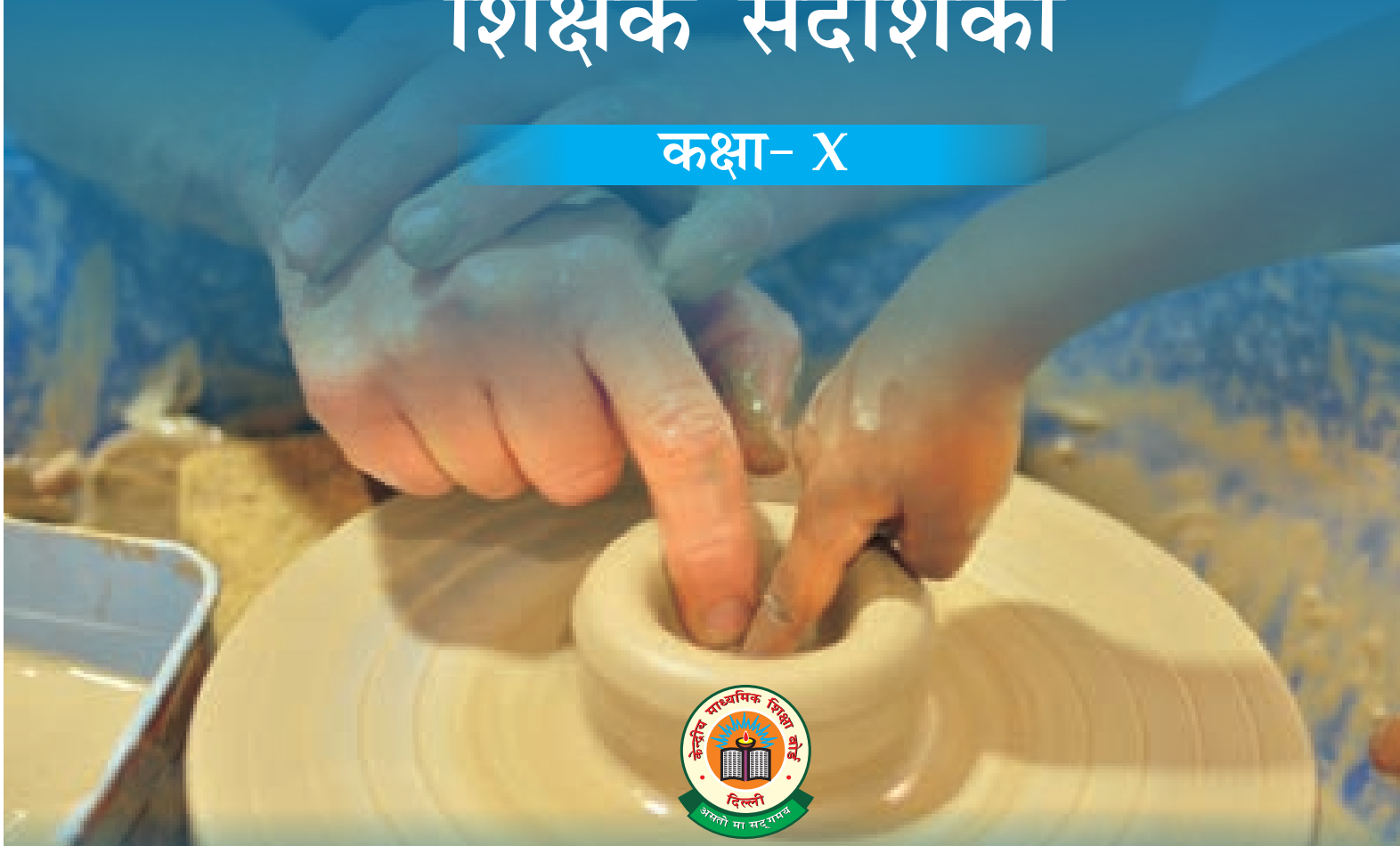

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2–समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली–110092

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

नया आगाज़

आज समय की माँग पर
आगाज़ नया इक होगा
निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।

परिवर्तन नियम जीवन का
नियम अब नया बनेगा
अब परिणामों के भय से
नहीं बालक कोई डरेगा

निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।

बदले शिक्षा का स्वरूप
नई खिले आशा की धूप
अब किसी कोमल-से मन पर
कोई बोझ न होगा

निरंतर योग्यता के निर्णय से
परिणाम आकलन होगा।
नई राह पर चलकर मंज़िल को हमें पाना है
इस नए प्रयास को हमने सफल बनाना है
बेहतर शिक्षा से बदले देश, ऐसे इसे अपनाए
शिक्षक, शिक्षा और शिक्षित
बस आगे बढते जाएँ
बस आगे बढते जाएँ
बस आगे बढते जाएँ.....

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक मूल्यांकन
हेतु
शिक्षक संदर्शिका

हिंदी (पाठ्यक्रम- अ)

कक्षा - दसवीं

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2 - समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली- 1100092

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कक्षा दसवीं के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु रचनात्मक मूल्यांकन के लिए शिक्षक संदर्शिका

मूल्य : ₹

प्रथम संस्करण, 2010 केमाशिबो, भारत

द्वितीय संस्करण, 2013 केमाशिबो, भारत

प्रतियाँ : 20,000

कॉपीराइट : केमाशिबो, भारत

प्रकाशक : सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2, सामुदायिक केन्द्र, शिक्षा केन्द्र, दिल्ली- 110092

अक्षर संयोजन तथा विन्यास : **मल्टी ग्राफिक्स,** 8A/101, डब्लू.ई.ए करोल बाग, नई दिल्ली- 110005 फोन : 011-25783846

मुद्रक :

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण [1][प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा
और [2][राष्ट्र की एकता और अखंडता]
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई॰ को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्त्तव्य

51 क. मूल कर्त्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले;

[1](ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिये शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

1. संविधान (छयासीवां संशोधन) अधिनियम, 2002 की धारा 4 द्वारा (12.12.2002) से अंत: स्थापित।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1][SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC] and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the[2] [unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

1. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

FUNDAMENTAL DUTIES

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

[1](k) who is a parent or guardian to provide opportunities for education to his/her child or, as the case may be, ward between age of six and forteen years.

1. Ins. by the constitution (Eighty - Sixth Amendment) Act, 2002 S.4 (w.e.f. 12.12.2002)

www.FirstRanker.com

प्रस्तावना

रचनात्मक आकलन इस तथ्य पर बल देता है कि शिक्षार्थी भी निर्णय-निर्माता हैं, यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन हमारी विगत आकलन व्यवस्था में इसकी उपेक्षा की गई। परंपरागत आकलन का झुकाव आकलन की आवृत्ति बढ़ाने की ओर था जिससे शिक्षार्थियों द्वारा कथित मानकों पर अधिकार को सुनिश्चित किया जा सके और दूसरी ओर सीखने के लिए आकलन का बल अधिगम के दैनंदिन विकास पर है जिससे वांछित मानकों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों के शैक्षणिक सहयोग को बढ़ाया जा सके। यह शिक्षकों को बताता है कि शिक्षार्थी ज्ञान, व्याख्या और कौशलों के बुनियादी तत्वों को अर्जित कर रहे हैं। संक्षेप में, शिक्षार्थी की सफलता केवल अधिक बार परीक्षण के साथ नहीं जुड़ी है, न ही इसके साथ जुड़ी है जो शिक्षक और प्राचार्य परिणाम के साथ करते हैं और न ही इसके साथ कि कितने बेहतरीन तरीके से आंकड़ों को व्यवस्थित किया जाता है, भले ही ये चीज़ें शिक्षार्थी की सफलता में योगदान दे सकती हैं।

के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर सतत और समग्र मूल्यांकन को प्रारंभ करके के.मा.शि.बो. ने यह संदेश दिया है कि आकलन को शिक्षार्थी के व्यक्तित्व-विकास के सभी पक्षों का ध्यान रखना चाहिए और चूंकि सीखना एक सतत प्रक्रिया है, आकलन को भी सतत होना होगा। आकलन को सीखने-सिखाने के संपूर्ण ढांचे के अभिन्न अंग के रूप में देखते हुए सीसीई (सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन) ने सैद्धांतिक रूप से परीक्षण के स्थान पर सीखने पर बल दिया है। जब कक्षायी अभ्यासों में इसे शामिल किया जाता है तो आकलन अपनी वैयक्तिक पहचान खो देता है और अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में घुल-मिल जाता है। इस प्रकार की संकल्पना रचनात्मक आकलन पर अधिक बल देने को अनिवार्य बना देती है। यह रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर करता है, क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सुधार लाते हुए सीखने को सुगम बनाना है।

विद्यालयी शिक्षा से जुड़े पणधारियों में रचनात्मक आकलन-अभ्यासों के संबंध में अवधारणागत स्पष्टता का अभाव है जिसके परिणामस्वरूप ऐसे अनेक उपकरण और तकनीक, जो रचनात्मक आकलन के प्रतीत होते हैं, असल में योगात्मक प्रकृति के होते हैं। उदाहरण के लिए, एक समय विशेष में, नापने के अभ्यासों में शिक्षार्थियों का सीखना विषय-वस्तु के मानकों के सापेक्ष होता है। प्रभावी रचनात्मक आकलन उपकरणों का निर्माण करने को अनेक शिक्षक एक चुनौती के रूप में पाते हैं, वे इन्हें

कक्षाकक्षीय अनुदेशनों में एकीकृत करने में भी कुछ कठिनाई का अनुभव करते हैं। इस संबंध में अवधारणागत स्पष्टीकरण उपलब्ध कराने के लिए और शिक्षकों को रचनात्मक आकलन–कार्यों के कुछ उदाहरण देने के लिए बोर्ड ने कक्षा IX और X के सभी मुख्य विषयों में संदर्शिका की एक शृंखला निकाली है। यह शृंखला रचनात्मक आकलन की अवधारणा को समझने और कक्षा में रचनात्मक आकलन को प्रशासित करने में शिक्षकों की मदद करेगी।

हमें ऐसा लगता है कि साल–दर–साल और अधिक प्रभावी तरीके से सीसीई को समझने एवं उसे क्रियान्वित करने में हमारा जैसे विकास हो रहा है, शिक्षकों को उपलब्ध कराए जाने वाली शिक्षण–अधिगम सामग्री को एक बार फिर से देखा जाना चाहिए रचनात्मक आकलन संबंधी शिक्षक–संदर्शिका की गुणवत्ता के संबंध में बोर्ड द्वारा के.मा.शि.बो. मान्यता प्राप्त स्कूलों के शिक्षकों द्वारा व्यापक रूप से प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई थी। संदर्शिका के पहले संस्करण के प्रकाशन के बाद प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों एवं इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की राय को भी ध्यान में रखा गया। त्रुटियों को दूर करने के लिए सभी संदर्शिकाओं का गहन परीक्षण किया गया और लगभग हर संदर्शिका के हर पाठ मे सुधार दृष्टिगत होता है।

संशोधित संदर्शिकाएँ प्रभावी कार्यों की योजना बनाने में शिक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए रचनात्मक आकलन हेतु नवीन और व्यावहारिक विचार तथा नीतियां प्रस्तुत करती हैं जिन्हें कक्षा में उपयोग में लाया जा सकता है। उपलब्ध कराए गए कार्यों में विविधता है और ये कार्य बड़े एवं छोटे आकार की – दोनों कक्षाओं की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि कक्षा में किसी कार्यकलाप को पूरा करने में लगने वाला समय निर्धारित अथवा अनुबंधित समय के भीतर ही हो। स्पष्ट व्याख्याएँ और उदाहरण शिक्षकों का इस रूप में मार्गदर्शन कर सकेंगे कि वे रचनात्मक आकलन के लिए स्वयं अपने कार्यों का विकास कर सकें। प्रत्येक कार्यकलाप के अंत में दिए गए आकलन–मानदंडों को शिक्षक अपनी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित कर सकते हैं।

शिक्षार्थियों के अधिगम की व्यापक समझ के लिए जहां भी उचित हो शिक्षक आकलन के भिन्न–भिन्न साधनों का प्रयोग अवश्य करें। इसके उपरांत शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों से प्रतिपुष्टि ली जा सकती है जिसके आधार पर वे यह निर्णय ले सकें कि सीखने और सिखाने में सुधार लाने के लिए क्या करना है। इस प्रकार स्वीकृत अपेक्षाओं के संबंध में वर्तमान संप्राप्ति–स्तर का निरंतर निरीक्षण करने के लिए शिक्षार्थी शिक्षकों के साझेदार बन सकते हैं। जिससे वे यह निर्धारित कर सकें कि आगे क्या सीखना है

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

और अपनी प्रगति को स्वयं प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकें। शिक्षार्थी एक-दूसरे को, अपने शिक्षकों को, और अपने परिवारों को अपने सीखने के साक्ष्यों को संप्रेषित करने में विशेष भूमिका निभाते हैं तथा वे ऐसा केवल तब नहीं करते जब सीखना पूरा हो चुका हो, बल्कि वे सफलता की पूरी यात्रा के साथ ऐसा करते हैं। संक्षेप में, सीखने के दौरान शिक्षार्थी आकलन प्रक्रिया के भीतर होते हैं, स्वयं की वृद्धि को देखते हैं, अपनी सफलता को नियंत्रित रूप से महसूस करते हैं और यह विश्वास करते हैं कि यदि वे निरंतर प्रयास करते रहें तो सफलता उनकी पहुंच के भीतर है।

संदर्शिका में दी गई उद्देश्यपूर्ण तकनीकों और कार्यकलापों के विविध रंग आकलन को सर्वत्र अनुदेशन और अधिगम में बुनते हैं। और मुझे आशा है कि शिक्षक दिए गए सुझावों और विचारों को व्यावहारिक एवं उद्देश्यपूर्ण क्रियाओं में रूपांतरित कर सकेंगे जो उनकी अपनी कक्षाओं में सीखने-सिखाने को और अधिक प्रभावी बनाएंगे। संशोधित संदर्शिका का उद्देश्य है - शिक्षकों को ऐसा मार्गदर्शन और आवश्यक तकनीक उपलब्ध कराना कि वे स्वयं अपनी सामग्री तैयार कर सकें जिसके फलस्वरूप उनकी पाठ्यचर्या-संपादन मूल्यवान बन सके।

यह संशोधित दस्तावेज़ शिक्षकों के समूह द्वारा तैयार किया गया है और मैं उनके प्रति बोर्ड का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। मैं डॉ. साधना पराशर, आचार्य एवं निदेशक (शैक्षणिक, शोध, प्रशिक्षण और नवाचार), के.मा.शि.बो. के मूल्यवान मार्गदर्शन और भागीदारिता के लिए और संदर्शिका के संशोधन कार्य से जुड़े समस्त शैक्षणिक अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस समृद्ध सामग्री की उपलब्धता के साथ के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में शिक्षक और अधिक प्रभावी तरीके से आकलन को सीखने के साथ एकीकृत कर सकेंगे।

संदर्शिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

विनीत जोशी
अध्यक्ष

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

आभार

सलाहकार

श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष

डॉ० साधना पराशर, आचार्य एवं निदेशक (शैक्षणिक, नवाचार, शोध एवं प्रशिक्षण)

अनुवीक्षण एवं संपादकीय समिति

श्री अल हिलाल अहमद, सहायक प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक

कु० अंजलि छाबड़ा, सहायक प्राध्यापक एवं उप-निदेशक

सामग्री निर्माण समूह

श्रीमति सुनीता जोशी, टी०जी०टी०, केन्द्रीय विद्यालय, पश्चिम विहार, नई दिल्ली

श्री अरविन्द झा, पी०जी०टी०, डी०ए०वी० स्कूल, श्रेष्ठ विहार, नई दिल्ली

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - अ

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	
2.	आभार	
3.	विद्यालय - आधारित आकलन	1
4.	रचनात्मक आकलन - एक विहंगावलोकन	11
5.	रचनात्मक आकलन	35
	क्षितिज भाग - 2	
6.	नेता जी का चश्मा	38
7.	बाल गोबिन भगत	44
8.	लखनवी अंदाज	50
9.	मानवीय करुणा की दिव्य चमक	56
10.	एक कहानी यह भी	73
11.	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	70
12.	नौबतखाने में इबादत	76
13.	संस्कृति	82
14.	पद	87
15.	राम लक्ष्मण - परशुराम संवाद	93
16.	सवैया एवं कवित्त	99
17.	आत्मकथ्य	105
18.	उत्साह, अट नहीं रही है	111
19.	यह दंतुरित मुस्कान, फसल	117
20.	छाया मत छूना	123
21.	कन्यादान	129
22.	संगतकार	134
	कृतिका भाग - 2	
23.	माता का आँचल	140
24.	जॉर्ज पंचम की नाक	146
25.	साना साना हाथ जोड़ि	152
26.	एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!	160
27.	मैं क्यों लिखता हूँ?	167

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	व्याकरण	
28.	क्रिया	174
29.	विशेषण	176
30.	पद परिचय	179
31.	वाक्य के भेद	181
32.	वाक्य रचनांतरण	183
33.	वाक्य के आधार पर	185
34.	सार लेखन	187
35.	निबन्ध	189
36.	पत्र लेखन	191

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

विद्यालय–आधारित आकलन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया के अभिन्न हिस्से के रूप में आकलन के अभ्यास पर बल देती है जो प्रामाणिक प्रतिपुष्टि देने के माध्यम से शिक्षार्थियों और शिक्षा–व्यवस्था दोनों को लाभ पहुंचाने की क्षमता रखता है। यह इस बात को भी स्वीकार करता है कि जिस तरह की आकलन प्रक्रियाएं और अभ्यास आजकल जारी हैं वे शिक्षार्थियों के उन संकाय–समुच्चय की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं जो बहुत संकीर्ण होती हैं। इस प्रकार के आकलन अभ्यास शिक्षार्थियों की योग्यताओं की जो तस्वीर उपलब्ध कराते हैं वह अधिकतर अधूरी होती हैं और इनका प्रयोग शिक्षार्थियों के विकास में बाधा डालता है।

मूल्यांकन की **सतत और समग्र आकलन (सीसीई)** व्यवस्था को प्रारंभ करने के पार्श्व में निहित दृष्टिकोण था – शिक्षार्थियों के अधिगम और विकास में सहायता प्रदान करने के लिए आवृत्तिगत अंतरालों पर उन्हें उनकी योग्यताओं के बारे में प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना। विद्यालयों में प्रयोग में लाए जाने वाले आकलन–अभ्यासों की रूपरेखा को सुदृढ़ और उन्नत बनाने के लिए शिक्षण और अधिगम के उपागम में आवश्यक प्रतिमान–परिवर्तन किया जा सके जो अंततः शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने की ओर अग्रसर करेगा। इस विचार के साथ अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत *आधुनिक आकलन सिद्धांत और व्यवहार* को शुरू किया गया जो यह बदलाव लाने में मार्गदर्शन करेगा कि पूरे देश के विद्यालयों में किस प्रकार से शिक्षार्थियों का आकलन करने की आवश्यकता है।

सतत और समग्र आकलन (सीसीई) में आधुनिक आकलन सिद्धांत

आधुनिक आकलन सिद्धांत सीसीई की भावना से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थी को केंद्र में रखता है और शिक्षकों को सक्षम आकलन और प्रबंधन तकनीक के योग्य बनाता है। इसके मूल में *विकासात्मक सांतत्यक* है जो प्रत्येक विषय में शिक्षार्थियों के लिए वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रामाणिक और ठोस साक्ष्यों की सहायता से शिक्षिका विकासात्मक सांतत्यक पर प्रत्येक शिक्षार्थी का स्थान निर्दिष्ट करने के लिए उनके बारे में अपने *पेशेवर निर्णय* का निरूपण कर सकती है। आकलन कार्य और ग्रेडिंग स्केल इस प्रकार से बनाए जाएं जो शिक्षार्थियों को इस योग्य बना सके कि वे सीखने के उद्देश्यों के अनुरूप समुचित योग्यताओं को प्रदर्शित कर सकें। इसे यथार्थ रूप देने के लिए शिक्षार्थियों को यह ज़रूर बताया जाए कि उन्हें किन योग्यताओं का विकास करना है जिससे वे एक उद्देश्य के साथ विकासात्मक सांतत्यक से गुज़र सकें। शिक्षक सहज और सरल रूप से समझ आने वाली भाषा में शिक्षार्थियों को सीखने के उद्देश्यों को बता दें

www.FirstRanker.com

जिससे उन्हें निरंतर यह जानकारी मिलती रहे कि उन्हें संकल्पनाओं और कौशलों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए किस मार्ग पर चलना है। इस प्रकार इस सिद्धांत का प्रमुख आधार उस रूपरेखा से निर्मित है जो शिक्षण–अधिगम अभ्यासों का मूल है, विकासात्मक सांतत्यक है, जो शिक्षार्थियों के निष्पादन को परिभाषित करती है। सैद्धांतिक बारीकियों को सरलता से व्यवहार में क्रियान्वित किया जा सकता है जब शिक्षार्थियों की छवि को उस पर निर्मित किया जाए।

आधुनिक आकलन सिद्धांत और रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों की शैक्षणिक और सह–शैक्षणिक प्रगति को विकासात्मक सांतत्यक के साथ बहुत संभावना उपलब्ध कराता है। विकासात्मक सांतत्यक को एक सीढ़ी के रूप में देखा जा सकता है, जहां हर चरण शिक्षार्थी को ज्ञान, समझ और निष्पादन के उच्च से उच्चतर क्षेत्र में ले जाएगा। प्रत्येक शिक्षार्थी का निष्पादन जो वह जानता है और जो वह कर सकता है – के सदृश है जिसे विकासात्मक सांतत्यक पर निर्धारित किया जा सकता है। इसके द्वारा बच्चे की प्रगति और विकास को व्यापक रूप से देखा जा सकता है और उसे उन खंडित श्रेणियों में नहीं रखा जा सकता जिस प्रकार से एक लंबे समय तक आकलन और परीक्षण के इतिहास में किया जाता रहा है, बल्कि उसे सांतत्यक के साथ उस निरंतरता और सचेत अनुक्रम में रखा जा सकता है जो शैक्षणिक सत्र के दौरान शिक्षार्थी की वृद्धि और विकास को साकार रूप देगा।

रचनात्मक और योगात्मक आकलन की समझ

विद्यालय–आधारित आकलन का प्रतिमान आकलन को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाती है जो सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करता है और आगे सीखने को बढ़ाता है।

कक्षाकक्ष में आकलन जिस रूप में प्रशासित किया जाता है, उसका प्रसार असंचित, जैसे – शिक्षक–शिक्षार्थी, शिक्षार्थी–शिक्षार्थी बातचीत से उच्च संरचित, जैसे – पेपर–पेंसिल परीक्षा अथवा कार्य निष्पादन की तरह हो सकता है।

जब शिक्षार्थी अथवा उनके सहपाठी कार्य के दौरान अपने ज्ञान की साझेदारी कर रहे हों तो वे असंरचित अथवा थोड़े–से संरचित आकलन के लिए साक्ष्य के स्रोत हो सकते हैं। इस तरह के कार्यों के लिए स्व–आकलन अथवा सहपाठी – आकलन को शिक्षार्थियों को उनके उपलब्धि–स्तर के बारे में प्रतिपुष्टि देने के लिए किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

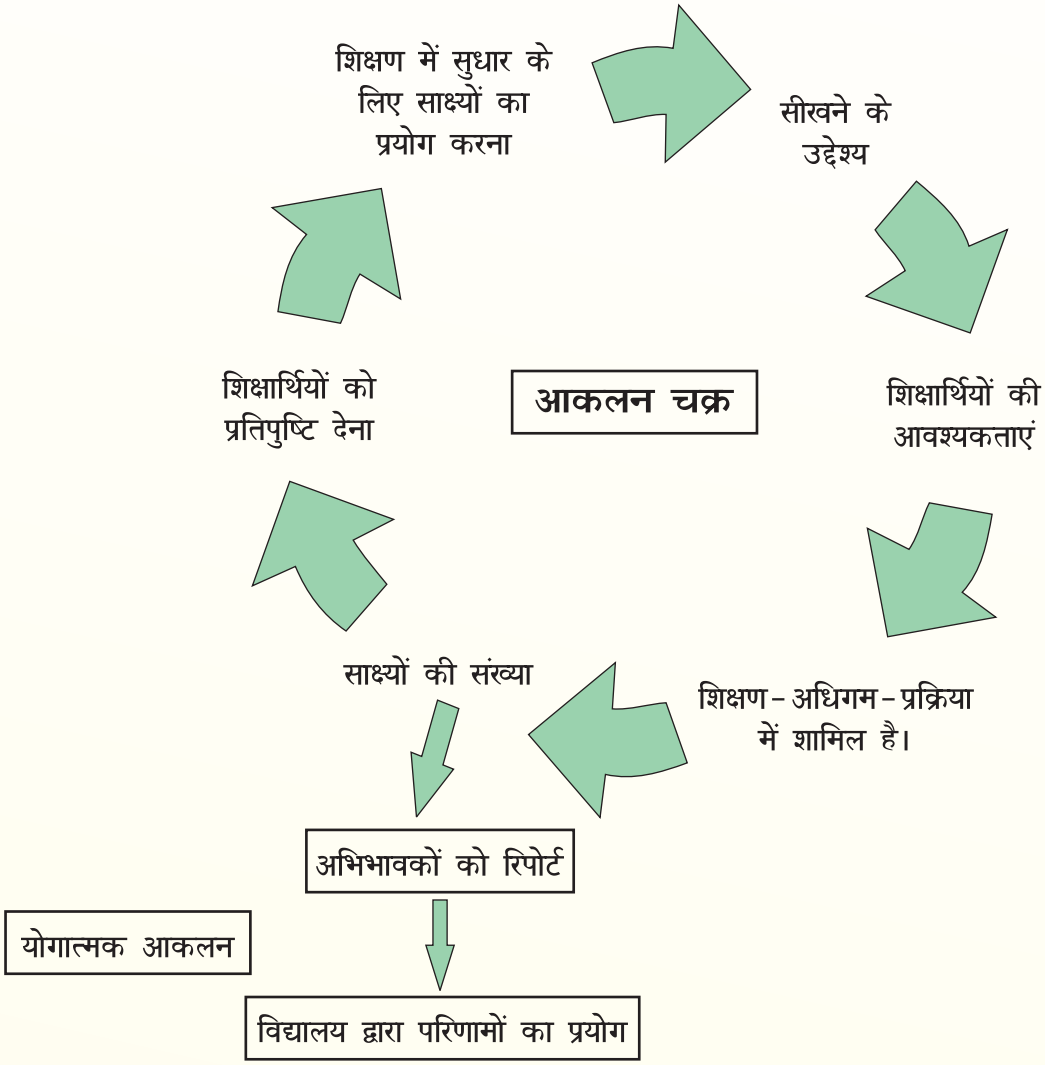

उपर्युक्त चक्र से साक्ष्य के रूप में, किसी भी आकलन को रचनात्मक अथवा योगात्मक आकलन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह आकलन के उद्देश्यों और रिपोर्टिंग के भिन्न तरीकों पर निर्भर करता है। आकलन से एकत्र साक्ष्य जो आगे सीखने के आधार नहीं बनाते वे वास्तव में रचनात्मक आकलन नहीं हैं। अत: इस बात पर ध्यान किया जाना चाहिए कि यदि सिर्फ शिक्षक ही आगे की अधिगम-प्रक्रिया में शिक्षार्थियों के लिए अपनी अंत: दृष्टि और प्रतिपुष्टि शामिल करते हैं तभी उस आकलन को 'रचनात्मक आकलन' कहा जा सकता है। उपर्युक्त बताए गए सिद्धांतों से आगे जाते हुए एक बार फिर किया जाने वाला आकलन 'योगात्मक आकलन' होगा, क्योंकि यह शिक्षार्थी के निष्पादन पर आधारित शिक्षक द्वारा शिक्षण निवेश में आगे योगदान नहीं देगा और बच्चे के लिए अधिगम-चक्र चक्र को समाप्त कर देगा।

www.FirstRanker.com

आकलन को शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक स्तरों के साथ जोड़ना

शिक्षक सीखने के उद्देश्यों से भली-भांति परिचित हैं कि शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया के परिणाम के रूप में शिक्षार्थियों को संप्राप्ति करनी है। इसके बाद हम पाठ-योजना, कार्यकलाप और शिक्षण-पद्धतियों की ओर बढ़ते हैं जो सीखने के संज्ञानात्मक स्तरों की संकल्पना पर केंद्रित होते हैं जिसमें से ब्लूम के संज्ञानात्मक अधिगम के छह स्तर बहुत प्रचलित हैं।

ब्लूम टेक्सोनॉमी के संज्ञानात्मक अधिगम के छह स्तर इस प्रकार हैं -

- स्मरण
- बोध
- अनुप्रयोग
- विश्लेषण
- मूल्यांकन
- सृजन

चूंकि हमारी शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया इस टेक्सोनॉमी पर आधारित है, अत: आकलन को भी संज्ञानात्मक स्तरों के साथ जोड़ना होगा। उदारहण के लिए -

स्मरण (बहुविकल्पी)

1. द्रव के अणु -

   क) अधिक व्यवस्था में होते हैं

   ख) यादृच्छिक तरीके से गति करते हैं

   ग) में अधिक आणविक स्थान होता है

   घ) एक-दूसरे पर फिसल सकते हैं

अनुप्रयोग (बहुविकल्पी)

हूपर के संदर्भ में, लेखक कहता है, "सभी कुछ उसके लिए चल रहा था।" इसका क्या तात्पर्य है?

www.FirstRanker.com

क) उसके पास सब कुछ था जो एक आदमी की आकांक्षा होती है

ख) लोग उसकी प्रशंसा करते थे

ग) उसने वह किया जो वह करना चाहता था

घ) वह खेल खेलने के योग्य था

विश्लेषण

1. निजी क्लंच का ज्ञान कैसे उजागर हो गया जबकि सार्जेंट की कक्षाएं चल रही थीं?

मूल्यांकन और सृजन

1. क्या आप हेरोल्ड के माता-पिता के इस निर्णय से सहमत हैं कि उससे यह तथ्य छिपाया जाए कि उसके पिता बॉक्सर थे।

2. लोकतंत्र सिद्धांतों में अच्छा लगता है लेकिन व्यवहार में उतना अच्छा नहीं है। समुचित तर्क के साथ इस कथन को सिद्ध कीजिए।

बहुविकल्पी प्रश्न लिखने के दिशा-निर्देश

बहुविकल्पी प्रश्न आकलन का एक रूप है जिसमें प्रश्न उत्तरदाता को यह निर्देश देता है कि वह उपलब्ध कराए गए विकल्पों की सूची में से सही उत्तर के रूप में एक विकल्प का चयन करे। शिक्षार्थियों की अधिगम-उपलब्धि को मापने के लिए विद्यालयों द्वारा आकलन के एक उपकरण के रूप में बहुविकल्पी प्रश्नों का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है।

बहुविकल्पी प्रश्नों के लाभ

बहुविकल्पी प्रश्न वैविध्यपूर्ण प्रतिभा का स्तर उपलब्ध कराते हैं, क्योंकि ये अधिगम-परिणामों के विविध स्तरों के लिए अपनाए जाते हैं जिसमें शामिल हैं - ज्ञान का सामान्य स्मरण, प्राक्घटना का विश्लेषण, सिद्धांतों का अनुप्रयोग, कार्य-कारण संबंधों की व्याख्या आदि। इनमें उच्च स्तर की वैधता होती है, क्योंकि शिक्षार्थियों को अधिक प्रश्न दिए जा सकते हैं और इसलिए अधिक पाठ्यक्रम को शामिल किया जा सकता है। अंकन में वस्तुनिष्ठता के कारण बहुविकल्पी प्रश्नों में अधिक विश्वसनीयता होती है। साथ ही यह कार्यक्षमता को बढ़ाने में मदद करता है, क्योंकि पेपर सरलता से जांचे जा सकते हैं और उनका अंकन किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

बहुविकल्पी प्रश्न के अंग

बहुविकल्पी प्रश्न में एक प्रश्न या 'स्टेम' होता है, ध्यान भंग करने वाले अथवा विकर्षक (डिस्टेक्टर्स) होते हैं और कुंजी होती है यानी उत्तर। बहुविकल्पी प्रश्न में 'स्टेम' एक प्रत्यक्ष प्रश्न के रूप में हो सकता है अथवा वाक्य-पूर्ति रूप में अथवा चित्र या आरेख के रूप में हो सकता है। उदाहरण के लिए

प्रश्न 1. एक टिन फॉयल जिसकी लंबाई a है और चौड़ाई b है, को बेलन बनाने के लिए मोड़ा जाता है। इस बेलन का आयतन क्या होगा?	'स्टेम'
a) $ab^2/4\pi$	विकर्षक
b) $4\pi a^2b$	
c) πa^2b^2	
d) $a^2b/4\pi$	कुंजी d

प्रभावी तरीके से अच्छे बहुविकल्पी प्रश्न बनाने की कई दिशा-निर्देश हैं -

- प्रश्न को सीखने के उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए।
- बहुविकल्पी प्रश्न को महत्वपूर्ण संकल्पना पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- जब उच्च संज्ञानात्मक स्तर का परीक्षण किया जाना हो तो बहुविकल्पी प्रश्न एक से अधिक संकल्पना को शामिल कर सकता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट और एकार्थी होनी चाहिए।
- उत्तर-विकल्प विश्वसनीय लगने वाले और संदर्भ, विचार एवं ध्यान-केंद्र में समान होते हैं।
- यह सुनिश्चित करें कि विकल्प एक-दूसरे के साथ व्याप्त (ओवरलैप) न करें।
- 'उपर्युक्त सभी' और 'इनमें से कोई नहीं' का प्रयोग किफायत से करना चाहिए।
- 'स्टेम' और उत्तर-विकल्प सकारात्मक शब्दावली में रचे जाने चाहिए।
- उत्तर-विकल्प में विलोम नहीं होने चाहिए।

www.FirstRanker.com

आधुनिक आकलन सिद्धांत और निष्पादन मानक

आधुनिक आकलन सिद्धांत में अंक और ग्रेड्स शिक्षार्थियों का आकलन करने के निर्धारक कारक **नहीं** हैं। ये वर्णनात्मक मानक हैं जो विकासात्मक सांतत्यक के साथ बच्चे की स्थिति बताने में मदद करते हैं जो प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए उपलब्धि मानकों की व्याख्या करता है। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि समूह के साथ बच्चे की तुलना न की जाए, लेकिन उसका आकलन वर्णनकों के माध्यम से किया जाए जो अपनी प्रकृति में व्यापक और गहन – दोनों होते हैं। साथ ही जो बच्चे की बनाई गई छवि को समर्थन देते हैं। किसी भी बच्चे की छवि को बनाते समय शिक्षकों को उन कारकों पर अधिक मनन करने की किया आवश्यकता है जो बनाई गई छवि को सुदृढ़ करते हैं। शिक्षक को लगातार साक्ष्यों को एकत्र करते रहना चाहिए और उसके बाद विकासात्मक सांतत्यक के साथ बच्चे को चिह्नित करना चाहिए। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि एक बार जो छवि बन जाती है वह अंतिम **नहीं** होती। चूंकि सीखना एक प्रक्रिया है इसलिए छवि-निर्माण एक प्रक्रिया भी है। किसी भी स्थिति में शिक्षक साक्ष्यों को एकत्र करना ना छोड़े जो निरंतर बच्चे की छवि का निर्माण और समर्थन करते हैं।

आधुनिक आकलन में हम शिक्षार्थियों के निष्पादन को पूर्व-निर्धारित मानकों के संदर्भ में देखते हैं। 'पाठ्यचर्या मानक' ज्ञान, कौशल और बोध हैं जिन्हें पाठ्यक्रम पढ़ने के दौरान शिक्षार्थी को सीखना है जबकि 'निष्पादन मानक' को इस रूप में व्याख्यायित किया जाता है कि शिक्षार्थियों ने पाठ्यचर्या अथवा विषय-वस्तु मानकों को कितने अच्छे से प्राप्त किया है। निष्पादन मानक जितना उच्च होगा उतना ही अधिक शिक्षार्थी विकासात्मक सांतत्यक के साथ होगा।

आकलन के उद्देश्यों और अधिगम-उद्देश्यों के आधार पर शिक्षार्थियों के सीखने का विश्वसनीय एवं वैध माप करने के लिए आकलन की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए, न कि केवल बहुविकल्पी प्रश्नों का। उदाहरण के लिए ज्ञान और कौशलों पर शिक्षार्थी के अधिकार के बारे में सार तत्व निकालने के लिए लघुत्तर प्रश्न, निबंधात्मक प्रश्न (उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक कौशलों का आकलन करने के लिए प्रभावी प्रयोग), निष्पादन आकलन (भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले), गायन, विज्ञान-प्रयोग का आयोजन) आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

निर्देश और आधुनिक आकलन सिद्धांत

शिक्षकों को ऐसे अंकन निर्देशों का निर्माण करने की आवश्यकता है जो निष्पादन-मानकों के अनुरूप हों। केवल इसके बाद ही अंकों का वास्तविक अर्थ हो सकता है। वस्तुतः निर्देश शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक हैं जो

www.FirstRanker.com

शिक्षार्थियों को विकासात्मक सांतत्यक के साथ चिह्नित करने में शिक्षकों की मदद करते हैं। केवल इसके बाद ही उच्च अंक उच्च संज्ञानात्मक कौशलों को प्रदर्शित करेंगे।

शिक्षार्थियों और अभिभावकों को अंकन के मानदंडों से परिचित कराना चाहिए क्योंकि तभी वे वास्तव में देख पाएंगे कि क्यों प्रत्युत्तर इतने अंकों के योग्य है। वे यह भी देख सकेंगे कि अतिरिक्त अंक लेने के लिए शिक्षार्थी को कितना और अधिक करने की आवश्यकता है। इस तरह शिक्षार्थी भी अपनी वृदधि और विकास के लिए ज़िम्मदारियों को साझा कर सकते हैं।

नीचे भौतिक-शास्त्र के कार्य के आकलन हेतु अंकन-निर्देश बनाने का उदाहरण दिया गया है -

सीखने के उद्देश्य

- शिक्षार्थी भौतिक-शास्त्र की समझ और जानकारी को संप्रेषित करने के लिए उचित शब्दावली और रिपोर्टिंग के तरीके का प्रयोग कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी समाज और पर्यावरण पर भौतिक-शास्त्र के अनुप्रयोगों के प्रभाव का आकलन कर सकेंगे।

आकलन-कार्य- सरल कार्य

समाज और पर्यावरण पर इलैक्ट्रिकल जनरेटर्स के विकास के प्रभाव की चर्चा कीजिए। (6 अंक)

मानदंड	अंक
कम से कम एक-एक सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष की चर्चा करते हुए समाज और पर्यावरण पर जनरेटर्स के प्रभाव की पूर्ण समझ प्रदर्शित करना।	5-6 अंक
या मुद्दों की पूर्ण समझ की ओर संकेत करते हुए समाज और पर्यावरण- दोनों पर कम से कम एक सकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना। अथवा मुद्दों की पूर्ण समझ की ओर संकेत करते हुए समाज और पर्यावरण- दोनों पर कम से कम एक नकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना।	3-4 अंक

www.FirstRanker.com

अथवा मुद्दों की बेहतर समझ की ओर संकेत करते हुए कम से कम एक-एक सामाजिक और पर्यावरण संबंधी प्रभाव के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष उपलब्ध कराना।	
सामाजिक मुद्दों और पर्यावरण संबंधी मुद्दों - दोनों के एक पक्ष का उल्लेख करना। अथवा सामाजिक मुद्दे की बेहतर समझ की ओर संकेत करना। अथवा पर्यावरण संबंधी मुद्दे की बेहतर समझ की ओर संकेत करना।	2 अंक
सामाजिक मुद्दे के एक पक्ष अथवा पर्यावरण संबंधी मुद्दे के एक पक्ष का उल्लेख करना।	1 अंक

कितने अंक दिए जाएं - इसके बारे में निर्णय लेते समय केवल दो बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. शिक्षार्थी का निष्पादन और
2. अंकन-निर्देश में सूचीबद्ध मानदंड

निर्देशों को पारदर्शी बनाने और मानदंडों को स्पष्टत: व्यक्त करने के द्वारा हम निर्णय लेने मे विषयनिष्ठता और पक्षपात को दूर कर सकते हैं। भली प्रकार से बनाए गए निर्देशों का प्रयोग न केवल शिक्षकों को मूल्यवान प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने के लिए किया जा सकता है बल्कि शिक्षार्थियों को भी इस बारे में जागरूक बनाने के लिए किया जा सकता है कि ऐसा क्या है जो उसे विकासात्मक सांतत्यक के साथ बढ़ने और सुधार करने के लिए करना है।

आकलन की संभाव्यता को प्राप्त करना : समय के साथ बढ़ो

पूरे विश्व में, स्कूल बोर्ड, विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसियां, प्रश्न-लेखन कंपनियां आदि आधुनिक आकलन सिद्धांत के आधारभूत नियमों का अनुपालन करती हैं। आधुनिक आकलन सिद्धांत का लक्ष्य अनिवार्यत: यह है कि शिक्षार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे अपनी प्रगति के बारे में ज्ञान विकसित कर सकें

www.FirstRanker.com

ताकि वे अपने प्रयासों को सीखने के सभी क्षेत्रों में निपुण बनने के लिए लगा सकें। शिक्षक अपने भाग पर वास्तविक शिक्षित बच्चे के बहुमूल्य निर्माता हैं, और सिद्धांत शिक्षकों को इस संकल्पना के साथ प्रस्तुत करता है जिसके पास बहुत ठोस मनोवैज्ञानिक आधार है एवं उपकरण हैं जो बेहतर रूप से संरचित हैं और जो स्कूलों में क्रियान्वित पाठ्यचर्या के अनुरूप हैं। विद्यालय-आधारित आकलन को उन आकलन-अभ्यासों में शामिल रखने की आवश्यकता है जो उपलब्धि-स्तर को अंकित करने के स्थान पर प्रत्यक्ष रूप से शिक्षार्थी के हित में निर्देशित हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इसके लिए जो प्रयास किया है वह सतत और समग्र मूल्यांकन था जिसके उपकरण और तकनीक को सहायता की आवश्यकता है जो उसकी दृष्टि के अनुरूप हों।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन : एक विहंगावलोकन

रचनात्मक आकलन एक ऐसा उपकरण है जिसे भयमुक्त और सहयोगपूर्ण वातावरण में शिक्षार्थियों की प्रगति की नियमित जांच के लिए शिक्षक द्वारा उपयोग में लाया जाता है। इसमें नियमित वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि, शिक्षार्थी द्वारा अपने निष्पादन पर मनन करने का एक अवसर, सलाह लेना और उसमें सुधार करना शामिल है। इसमें आकलन के मानदंडों का निर्माण करने से लेकर स्व-आकलन अथवा सहपाठियों का आकलन करने तक शिक्षार्थी आकलन के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में शामिल रहते हैं। यदि इसका प्रभावी तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह बच्चे की स्व-गरिमा को बढ़ाते हुए और शिक्षक के कार्य-भार को कम करते हुए शिक्षार्थियों के निष्पादन में सुधार कर सकता है।

क्या है रचनात्मक आकलन ?

रचनात्मक आकलन को इस रूप में परिभाषित किया जाता है – "यह शिक्षार्थियों को जानकारी संप्रेषित करता है जिसकी मूल भावना है – सीखने में सुधार करने के उद्देश्य से उनके चिंतन अथवा व्यवहार को परिमार्जित करना।" (शूट, 2008, पृ. 154) यह प्रतिपुष्टि की पक्रिया का एक हिस्सा है जिसमें शिक्षार्थी प्राप्त जानकारी के आलोक में अपनी प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करता है और समायोजन करता है। इसका उपयोग इनके लिए किया जा सकता है –

क) ज्ञान में रिक्तियों की पहचान करना

ख) महत्वपूर्ण जानकारी की पहचान के लिए नए शिक्षार्थियों की मदद करना

ग) कार्यविधि संबंधी त्रुटियों अथवा भ्रांतियों को दूर करना

शिक्षक और शिक्षार्थियों दोनों को अनुदेशन के दौरान निरंतर प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराने के लिए रचनात्मक आकलन किया जाता है। शिक्षण-पद्धतियों और सीखने संबंधी कार्यकलापों में समुचित संशोधन करने संबंधी निर्णय लेने के लिए भी रचनात्मक आकलन किया जाता है।

- '... अकसर इसका अर्थ इतना ही है कि आकलन अनेक बार किया जाता है और इसकी आयोजना शिक्षण के समय ही की जाती है।' (ब्लैक एँड विलियम,1999)
- '... प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे शिक्षार्थियों में (सीखने संबंधी) रिक्तियों को पहचानने और इन्हें दूर करने में मदद मिलती है ...यह आगे की ओर देखता है।' (हारलेन,1998)

www.FirstRanker.com

- '... इसमें प्रतिपुष्टि और स्व-निगरानी दोनों शामिल हैं।' (सैडलर,1989)
- '... अनिवार्यत: इसका उपयोग शिक्षण और अधिगम-पक्रिया की प्रतिपुष्टि के लिए किया जाता है।' (टूंसटल और गिप्स,1996)

रचनात्मक आकलन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

- यह निदानात्मक और उपचारात्मक होता है।
- यह प्रभावी प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराता है।
- यह शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के सीखने में सक्रिय भागीदारिता के लिए मंच उपलब्ध कराता है।
- यह आकलन के परिणामों को देखने के लिए शिक्षकों के शिक्षण को अनुकूल बनाने में मदद करता है।
- यह अभिप्रेरणा और शिक्षार्थियों की आत्म-गरिमा जिनका सीखने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है - पर आकलन के गहन प्रभाव का पता लगाता है।
- शिक्षार्थियों को अपना आकलन करने की क्षमता की आवश्यकता को पहचानने और उसमें सुधार करने में मदद करता है।
- जो पढ़ाया गया है, उसकी संरचना शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों पर आधारित होती है।
- यह निर्धारित करने में कि क्या और कैसे पढ़ाना है - विविध अधिगम शैलियों को शामिल करता है।
- शिक्षार्थियों को वे मानदंड समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जिन्हें उनके कार्य की जांच करने के लिए उपयोग में लाया जाएगा।
- यह शिक्षार्थियों को प्रतिपुष्टि मिलने के बाद अपने कार्य में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।
- यह शिक्षार्थियों को अपने सहपाठियों की मदद करने और उनसे मदद लेने में सहयोग करता है।

रचनात्मक आकलन क्यों उपलब्ध कराया जाए?

"...रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों के सीखने में काफी महत्वपूर्ण है। वे क्या करते हैं - इसके बारे में जानकारीपरक प्रतिपुष्टि के बिना उन्हें अपेक्षाकृत काफी कम अवसर मिलता है जिसके द्वारा वे अपने विकास को देख पाएँ।"

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- सीखने के लिए अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है।
- ज्ञान में आई रिक्तियों की पहचान करने में शिक्षार्थियों की मदद करता है।
- स्वाध्याय को संवृद्ध करता है।
- वांछित परिणामों को स्पष्ट करता है।
- विशिष्ट भ्रांतियों का निदान करता है।

संक्षेप में, रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को यह सामंजस्य बिठाने की स्वीकृति देता है कि वे क्या और कैसे सीख रहे हैं। प्रतिपुष्टि का उपयोग यह सामंजस्य बिठाने के लिए भी किया जा सकता है कि आप क्या और कैसे पढ़ाते हैं।

रचनात्मक आकलन...

- सीखने की प्रक्रिया का अंग है।
- सीखने में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।
- शिक्षार्थियों की आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ाता है।
- शिक्षण में सुधार करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

रचनात्मक आकलन प्रतिपुष्टि है!

'प्रतिपुष्टि के बिना सीखना एक प्रकार से अंधेरे कमरे में तीर चलाना सीखना है। *(क्रॉस, 1998)*

1. स्पष्ट करता है कि बेहतर निष्पादन क्या है।
2. सीखने में स्व-आकलन(मनन) को सुगम बनाता है।
3. शिक्षार्थियों को उनके सीखने के बारे में उच्च स्तरीय जानकारी देता है।
4. सीखने के बारे में शिक्षक और सहपाठियों के संवाद को प्रोत्साहित करता है।
5. सकारात्मक अभिप्रेरणात्मक विश्वास और आत्म-गरिमा को प्रोत्साहित करता है।
6. वर्तमान और वांछित निष्पादन के बीच के अंतर को समाप्त करने के अवसर उपलब्ध कराता है।
7. शिक्षण में सुधार के लिए शिक्षकों को जानकारी उपलब्ध कराता है।

www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन योजना

रचनात्मक आकलन पर बल

↓

शिक्षार्थियों के साथ अधिगम-परिणामों और वांछित अपेक्षाओं की साझेदार

↓

स्पष्टत: परिभाषित मानदंड

↓

उदाहरण और दृष्टांत का उपयोग

↓

विशिष्ट प्रतिपुष्टि देना (जो मदद करेगी)

↓

शिक्षार्थी के स्व-आकलन को शामिल करने में

↓

शिक्षार्थी अपनी प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं

↓

शिक्षक शिक्षार्थियों की प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं।

रचनात्मक आकलन के लिए विशिष्ट अनुशंसाएँ

रचनात्मक आकलन के उद्देश्य को पूरा करने और शिक्षार्थियों को अपने निष्पादन में सुधार करने के योग्य बनाने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण-कार्य के दौरान विविध आकलन-उपकरणों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। यह अनिवार्य है कि शिक्षक प्रत्येक सत्र के दौरान कम से कम तीन से चार आकलन उपकरणों का प्रयोग करें। शिक्षक एक रचनात्मक आकलन में एक लिखित आकलन और दो कार्यकलापों (एक समूह कार्यकलाप और एक व्यक्तिगत कार्यकलाप) का प्रयोग कर सकते हैं। सहयोगी अधिगम को बढ़ावा देने के लिए दो कार्यकलापों में से एक कार्यकलाप सामूहिक कार्यकलाप होना चाहिए शिक्षक को प्रत्येक सत्र के दौरान अपने शिक्षकों को एक सामूहिक परियोजना कार्य देना चाहिए ।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन के अवयव

प्रत्येक रचनात्मक आकलन में शामिल होना चाहिए –

1. **एक व्यक्तिगत कार्यकलाप** मौखिक/लिखित

   (कार्यपत्रक, वाद-विवाद **आदि**)

2. **एक सामूहिक कार्यकलाप (परियोजना, 'रोल प्ले', समूह-चर्चा, सर्वेक्षण आदि)**

3. **लिखित आकलन**

- गतिविधियों में प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, परियोजना, रंगमंच आदि जैसी विविध गतिविधियों को शामिल करना चाहिए।
- कार्यकलाप में प्रति आकलन एक सामूहिक कार्यकलाप को शामिल करना चाहिए।
- प्रत्येक सत्र में शिक्षार्थियों को एक बहु-विषयक/अंत:अंतर्विषयक सामूहिक परियोजना को शामिल करना चाहिए।
- आकलन के उद्देश्य के लिए एक व्यक्तिगत कार्यकलाप और एक सामूहिक कार्यकलाप के सर्वश्रेष्ठ अंकों को लिया जाना चाहिए।
- अंतिम रचनात्मक आकलन की गणना सर्वश्रेष्ठ अंक (एक व्यक्तिगत कार्यकलाप अथवा एक सामूहिक कार्यकलाप) और लिखित आकलन के अंकों के औसत के रूप में की जानी चाहिए।

आकलन के बहु साधनों, जैसे – दत्त कार्य, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, सामूहिक चर्चा, परियोजना आदि के माध्यम से रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए यह बिंदु सभी शिक्षकों तक संप्रेषित किया जाना चाहिए कि सामूहिक कार्यकलाप के रूप में परियोजना कार्य और दत्त कार्य कक्षा में और विद्यालय-समय में ही किए जाने चाहिए रचनात्मक आकलन के अंतर्गत प्रत्येक विषय में केवल एक पेपर-पेंसिल परीक्षा होनी चाहिए आकलन के अन्य तरीके कक्षाकक्षीय अंत:क्रियात्मक कार्यकलापों का हिस्सा होने चाहिए।

विभिन्न विषयों के लिए सुझाव के रूप में कार्यकलापों की सूची नीचे दी गई है। यह सूची पूर्ण नही है, यह केवल संभावित विविधता का अंदाज़ा देने के लिए है –

भाषा

- मौखिक और सुनना – ये श्रवण अवबोधन, भाषण तैयार करना, बातचीत अथवा संवाद हो सकते हैं।

www.FirstRanker.com

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न, सृजनात्मक लेखन, प्रतिवेदन (रिपोर्ट), समाचार-पत्र में लेख, डायरी लिखना, कविताएँ आदि।
- भाषण – वाद-विवाद, वक्तृत्व कला, पाठ, आशु भाषण आदि।
- शोध-परियोजनाएँ – जानकारी एकत्र करना, निगमनात्मक तर्कणा,
- विश्लेषण और संश्लेषण एवं सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए विभिन्न प्रकारों का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति।
- युग्म-कार्य/ सामूहिक कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- पीएसए – भाषा-परम्परा

भाषा में यह सुझाव दिया जाता है कि वार्तालाप के कौशल का आकलन करने के लिए कम से कम कुछ आकलन अवश्य होने चाहिए।

गणित

- समस्या-समाधान, बहुविकल्पी प्रश्न
- आंकड़ा प्रबंधन और विश्लेषण
- जांच-पड़तालपरक परियोजनाएँ
- गणित प्रयोगशाला के कार्यकलाप
- ऑरिगेमी को शामिल करते हुए मॉडल्स
- शोध परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- सामूहिक परियोजना कार्य
- सहपाठियों द्वारा आकलन
- सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग को शामिल करते हुए प्रस्तुतियां।
- पीएसए – मात्रात्मक तर्कणा

www.FirstRanker.com

गणित के लिए यह सुझाव है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन कार्य गणित प्रयोगशाला–कार्यकलापों पर आधारित होने चाहिए।

विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य, बहुविकल्पी प्रश्न–'एमसीक्यूज़'
- प्रयोगात्मक कार्य जिसमें एक या एक से अधिक स्थिति वाले प्रयोग शामिल हो सकते हैं, अवलोकन करना, आंकड़ा प्रबंधन, निगमन करना (मेकिंग डिडक्शन), सुरक्षित रूप से कार्य करना।
- आंकड़े प्राप्त करने के लिए अथवा गुणों की पड़ताल, नियमों, तथ्यों आदि के लिए योजना या रूपरेखा बनाना।
- शोध कार्य जिसमें जाँच करना अथवा सूचना एकत्रित करना और तार्किक अनुमान शामिल हो।
- समूह कार्य– शोध अथवा प्रयोगात्मक
- संदर्भगत शोध परियोजनाएँ
- सहपाठियों द्वारा आकलन करना
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- विज्ञान–प्रश्नोत्तरी
- संगोष्ठी
- सिंपोज़ियम
- क्षेत्र भ्रमण
- वर्ग प्रतिक्रिया
- मॉडल बनाना
- पीएसए – गुणात्मक तर्कणा

विज्ञान के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ रचनात्मक आकलन प्रयोग और हस्तपरक गतिविधियों पर आधारित होने चाहिए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

सामाजिक विज्ञान

- लिखित दत्त कार्य – लघु और दीर्घ उत्तर वाले
- कमेंटरी
- स्रोत-आधारित विश्लेषण
- परियोजनाएँ – जांच-पड़तालपरक, जानकारीपरक, निगमनात्मक और विश्लेषणात्मक
- शोध
- समूह कार्य – परियोजनाएँ और प्रस्तुति
- मॉडल्स और चार्ट्स
- सूचना और संचार तकनीक का प्रयोग करते हुए प्रस्तुति करना
- प्रामाणिक स्रोतों और प्राथमिक पाठ्य-वस्तु का प्रयोग
- खुली-पुस्तक परीक्षा
- गौण स्रोत
- तुलना और अंतर
- पीएसए – गुणात्मक तर्कणा

सामाजिक विज्ञान में यह सुझाव दिया जाता है कि कम से कम कुछ आकलन परियोजनाओं पर आधारित होने चाहिए जो शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कक्षागत कार्यकलापों के रूप में समूह में की जानी चाहिए।

'एक ऐसी शिक्षा एवं परीक्षा पद्धति आज की ज़रूरत है जो उन अलाभान्वित वर्ग के लोगों में समस्या निराकरण एवं विश्लेषण क्षमता का विकास करे, जो कि रोज़गार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक को रटना एवं रटे हुए को उगलना, रोजगार उन्मुख बाज़ार के लिए आवश्यक दक्षता नहीं है। इस प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देने वाली परीक्षा पद्धति, रचनात्मकता को समाप्त कर देती है। कौशलों के शिक्षण और उत्कृष्टता की रचना का संभवत: एक ही चिरस्थायी तरीका है – पठन-समता की ओर।'

परीक्षा सुधार, एनसीएफ 2005, एनसीईआरटी

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन के बारे में मिथक

1. **"रचनात्मक आकलन की गिनती नहीं होती।"**

   हो सकता है! रचनात्मक आकलन करते समय ग्रेडिंग नहीं होनी चाहिए, लेकिन शिक्षक के पास ग्रेड के अंग के रूप में रचनात्मक आकलन में शामिल करने के लिए राय या विचार होता है जिन्हें शिक्षार्थी इकाई अथवा कोर्स में अपने अंतिम ग्रेड में जोड़ सकते हैं।

2. **"शिक्षार्थी के सीखने अथवा उपलब्धि पर रचनात्मक आकलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।"**

   इसका प्रभाव पड़ता है। अध्ययन बताते हैं कि रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करने से सार्थक अधिगम परिणाम प्राप्त होते हैं। साथ ही रचनात्मक आकलन शिक्षार्थियों को अपने अधिगम की निगरानी में मदद करने के माध्यम से आजीवन अधिगम कौशलों को संवृद्ध करता है। (ब्लैक एँड विलियम, 1998, निकोल एँड मैकफारलेन-डिक, 2006)

3. **रचनात्मक आकलन अधिक शिक्षण-समय और श्रम लेता है।**

   यह ज़रूरी नहीं है। रचनात्मक आकलन की तकनीकें अकसर केवल बेहतर शिक्षण तकनीकें हैं। उदाहरण के लिए इसमें शामिल हैं - नियोजित प्रश्न-उत्तर सत्र, संकेतों के माध्यम से शिक्षार्थियों के उत्तरों का अंदाज़ा लगाना अथवा कक्षागत सत्रों से जोड़ते हुए 'ऑन-लाइन मॉड्यूल्स' और स्वाध्याय प्रश्नोत्तर उपलब्ध कराना।

4. **रचनात्मक आकलन = बहुविकल्पी परीक्षाएँ**

   वास्तव में बहुविकल्पी मद या प्रश्न रचनात्मक आकलन के लिए आधार रच सकते हैं। फिर भी, शिक्षार्थियों को स्व-संशोधन और स्वाध्याय के अवसर उपलब्ध कराना रचनात्मक आकलन का एक महत्वपूर्ण अवयव है। अत: 'परीक्षा देना' परीक्षा में हिस्सा लेने जितना अनिवार्य है।

5. **शिक्षार्थी रचनात्मक आकलन से सहमत होंगे।**

   सीखने की अभिप्रेरणा तब वास्तव में बढ़ जाती है जब वे यह देखते हैं कि जो वे सोचते हैं, जो वे जानते हैं और वे वस्तुत: क्या जानते हैं - इनमें अंतर है। इसलिए रचनात्मक परीक्षण से प्राप्त प्रतिपुष्टि सीखने में संवर्धन कर सकती है। (परीक्षण बहुत अधिक बार नहीं होना चाहिए) (इवर्ज़न एवं सहयोगी, 1994, बेंगर्ट डॉन्स एवं सहयोगी, 2005)।

www.FirstRanker.com

6. **जितना अधिक रचनात्मक आकलन उतना अधिक बेहतर सीखना**

   सही उपकरण और तकनीक के साथ कुछ रचनात्मक आकलन बच्चे की इस रूप में सहायता कर सकते हैं कि वे अपने निष्पादन में सुधार कर सकें।

7. **प्रत्येक रचनात्मक आकलन के दस्तावेज़ीकरण और रिकॉर्ड करने की आवश्यकता है।**

   यह अनिवार्य नहीं है कि रचनात्मक आकलन केवल सुधार करने में बच्चे की मदद के लिए है।

विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करने के कारण

1. विकास के विभिन्न विषय-क्षेत्रों में अधिगम होता है और विकास के विभिन्न पक्षों का आकलन किया जाना है।
2. हो सकता है कि शिक्षार्थी एक पद्धति की तुलना में दूसरी पद्धति में अपेक्षाकृत बेहतर प्रतिक्रिया कर सकते हैं।
3. शिक्षार्थी के सीखने के बारे में शिक्षकों की समझ बनाने में प्रत्येक पद्धति अपने तरीके से योगदान देती है।

अपने निष्पादन-स्तर में सुधार करने के लिए शिक्षार्थी की मदद करने के लिए विद्यालय शैक्षणिक सत्र के बिल्कुल प्रारंभ से ही रचनात्मक आकलन के माध्यम से उनकी सीखने संबंधी कठिनाइयों का निदान करेंगे और समुचित समय के अंतराल पर अभिभावकों को इसके बारे में बताएँगे। वे शिक्षार्थियों की अधिगम क्षमता को संवर्धित करने के लिए उचित उपचारात्मक उपाय सुझाएँगे। इसी प्रकार अतिरिक्त दत्त कार्य देकर, समृद्ध सामग्री और परामर्श उपलब्ध कराकर प्रतिभाशाली बच्चों को भी और अधिक पुनर्बलन उपलब्ध कराना चाहिए आवश्यक परामर्श और विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को संबोधित करने के लिए कक्षा की समय-सारिणी में आवश्यक प्रावधान करने चाहिए शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी कक्षा के भिन्न तरीके से सक्षम शिक्षार्थियों के लिए रणनीतियों को शामिल करना चाहिए।

कक्षा-अध्यापिका अथवा विषय-अध्यापिका द्वारा व्यवस्थित रूप से रखे जाने वाले कथा-वृत्तांत- अभिलेखों पर आधारित रिकॉर्ड किए गए साक्ष्यों पर रचनात्मक आकलन किया जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि शैक्षणिक सत्र के दौरान शिक्षार्थियों और अभिभावकों को संप्राप्ति-स्तर के बारे में बताया जाए जिससे शिक्षार्थियों के निष्पादन में संवृद्धि करने के लिए उनके सहयोग से समय रहते उपचारात्मक उपाय अपनाए जा सकें। **संपूर्ण आकलन के बाद में कक्षा-अध्यापिका द्वारा नकारात्मक आकलन से बचते हुए सकारात्मक और महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में विस्तृत टिप्पणी दी जानी चाहिए**

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

इसका तात्पर्य है –

1. शिक्षार्थियों के साथ अधिगम–लक्ष्यों की साझेदारी
2. स्व–आकलन मे शिक्षार्थियों की भागीदारी
3. प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थियों की पहचान हो सकेगी और अगला कदम उठाने का मार्ग बनेगा।
4. आत्मविश्वासी होते हुए, प्रत्येक शिक्षार्थी सुधार कर सकेगा।

रचनात्मक आकलन क्या है?

आइए, दिए गए कार्य को देखें –

विषय : सामाजिक विज्ञान **कक्षा :** VIII

प्रकरण : स्त्री ,जाति और सुधार

कार्य : नाटकीकरण

प्रक्रिया :

1. शिक्षार्थियों को समूहों में विभाजित किया जाएगा। वे अपने समूहों में विभिन्न समय–अवधि में भारतीय समाजों में प्रचलित सामाजिक बुराई में से किसी एक पर लघु नाटिका तैयार करेंगे।
2. सामाजिक बुराई में शामिल हो सकते हैं – सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखना और जेंडर विसंगति (लिंग भेदभाव)।
3. प्रत्येक समूह एक लघु नाटिका तैयार करेगा और उसकी प्रस्तुति करेगा। प्रत्येक शिक्षार्थी को कुछ संवाद बोलने के लिए कहा जाएगा।
4. प्रस्तुति के बाद शिक्षार्थी चर्चा करेंगे।

अधिगम–परिणाम – शिक्षार्थी इस योग्य बन सकेंगे कि वे

- विभिन्न समय–अवधियों में भारत में प्रचलित सामाजिक बुराइयों की अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें।
- सामाजिक बुराइयों पर मनन कर सकेंगे और अपनी भावनाओं को शब्दों में अभिव्यक्त कर सकें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

अभीष्ट समय

- चर्चा और आलेख लिखना : 2 कालांश
- प्रस्तुति : 1 कालांश

कौशल : शिक्षार्थियों में म्निलिखित की योग्यता का विकास करना –

- आलेख लिखना
- संवाद बोलना
- अभिनय
- समूह (टीम) में कार्य करना

आकलन के मानदंड

समूहों के प्रदर्शन का आकलन विषय–वस्तु, संवाद अदायगी और संकल्पना के स्पष्टीकरण के आधार पर किया जाएगा।

अनुवर्तन/प्रतिपुष्टि

कक्षा द्वारा प्रस्तुतियों पर चर्चा की जा सकती है। जहां भी संकल्पना स्पष्ट न हो, वहां शिक्षक शिक्षार्थियों को अपनी टिप्पणी देने के लिए कह सकते हैं। शिक्षक पाठ के किसी भी भाग को दुबारा समझा सकते हैं जो शिक्षार्थियों द्वारा स्पष्ट रूप से न समझे गए हों।

यह रचनात्मक आकलन कार्य है अथवा योगात्मक आकलन कार्य?

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

- इसका मुख्य उद्देश्य है – शिक्षार्थियों को विभिन्न समय–अवधियों में भारत में बालिका और स्त्रियों के विरुद्ध सामाजिक बुराइयों की संकल्पना को समझने के योग्य बनाना।
- यह कार्यकलाप स्त्री, जाति और सुधार पर आधारित प्रकरण की शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया का हिस्सा है।
- यह कार्यकलाप शिक्षार्थियों को सामूहिक अंत:क्रिया और प्रस्तुति में शामिल करता है।
- कार्यकलाप समाप्त होने के बाद शिक्षक सुधार के लिए प्रतिपुष्टि देते हैं। यदि आवश्यक हो तो पाठ पर पुनर्विचार भी किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

- स्पष्ट रूप से परिभाषित मानदंडों के आधार पर आकलन किया जाता है।
- यह कार्यकलाप पाठ के एक भाग के रूप में कक्षा में किया जाता है।
- कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के ज्ञान का मापन करना नहीं है। कार्य का लक्ष्य है–आनुभविक अधिगम के माध्यम से शिक्षार्थियों को संकल्पनात्मक स्पष्टता उपलब्ध कराना।
- यह अधिगम को और अधिक प्रोत्साहित करता है।

ये विशेषताएँ रचनात्मक आकलन का मूल हैं।

आइए, परीक्षा में दिए गए निम्नलिखित प्रश्नों को देखें –

विभिन्न समय-अवधि में भारतीय समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयां कौन-सी हैं? इन्होंने स्त्रियों और बालिकाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? अपना उत्तर कम से कम 200 शब्दों में लिखिए।

यह एक ठेठ सवाल है जिसे योगात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा में दिया गया है। यहां मुख्य उद्देश्य है – परीक्षा में दिए गए पाठ में शिक्षार्थियों के ज्ञान की सीमा का मापन करना। मूल्य-बिंदुओं और अंक-योजना के आधार पर शिक्षार्थियों के उत्तरों को अंक अथवा ग्रेड दिए जाएँगे। शिक्षक द्वारा एकत्र की गई जानकारी को उन समस्याओं के निदान के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता जिनका सामना शिक्षार्थियों द्वारा किया गया अथवा उपचार के लिए भी नहीं इस जानकारी का प्रयोग किया जा सकता, क्योंकि परीक्षा का आयोजन प्रायः इकाई अथवा पाठ पूरा करने के बाद किया जाता है।

लेकिन यदि पाठ के दौरान प्रकरण पर आधारित लघु प्रश्नोत्तरी अथवा परीक्षा का आयोजन किया जाता है, यह जांचने अथवा सुनिश्चित करने के लिए कि सीखने में कौन-सी रिक्तियां रह गई हैं और जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की मदद करना है तो यह अपनी प्रकृति में रचनात्मक होगा। अतः एक प्रकार से उपकरण का जिस प्रकार से प्रयोग किया गया है, जैसे – सीखने को संवर्धित करने के लिए, सीखने की मात्रा को सुनिश्चित करने अथवा मापने के लिए, यह निर्णय करने के लिए कि यह रचनात्मक आकलन के लिए है या योगात्मक आकलन के लिए ।

क्या नहीं है रचनात्मक आकलन ?

यह देखा गया है कि सतत मूल्यांकन के नाम पर विद्यालय 'परीक्षाओं' की एक शृंखला का आयोजन करते हैं। ये परीक्षाएँ शैक्षणिक सत्र के लगभग सप्ताह के हर दिन अथवा लगभग हर महीने आयोजित की जाती हैं। इसके बारे में यह तर्क दिया जाता है कि केवल निरंतर परीक्षाओं के आयोजन के द्वारा ही सतत आकलन सुनिश्चित

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार की परीक्षाओं को रचनात्मक आकलन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया के साथ एकीकृत नहीं हैं। ना ही इस प्रकार की परीक्षाओं से शिक्षक द्वारा एकत्रित जानकारी को शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को संवर्धित करने के लिए प्रभावी और व्यवस्थित तरीके से उपयोग में लाया जा सकता है।

केस अध्ययन

कक्षा IX के शिक्षार्थियों को विज्ञान में निम्नलिखित परियोजना कार्य दिया गया –

संचारी रोगों पर आधारित परियोजना कार्य

- पुस्तकों और शोध पत्रिकाओं (जरनल्स) का अध्ययन कर और इंटरनेट पर सर्फिंग कर संचारी रोगों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।
- चित्रांकन, पिक्चरर्स और फोटोग्राफ्स के साथ जानकारी को एक फोल्डर में प्रस्तुत कीजिए।
- फोल्डर्स 15 दिनों में मूल्यांकन के लिए जमा कर दिए जाने चाहिए।

निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर फोल्डर्स का मूल्यांकन किया जाएगा –

विषय-वस्तु, प्रस्तुति और चित्रांकन की सफाई।

शिक्षार्थी व्यक्तिगत रूप से कार्यकलाप पूरा करके तय अवधि तक फोल्डर्स जमा कर देते हैं। शिक्षिका आकलन मानदंड के अनुसार शिक्षार्थियों के कार्य को ग्रेड देती है।

प्रश्न :

- क्या यह एक अच्छा रचनात्मक कार्यकलाप है?
- इस कार्यकलाप को करने में शिक्षार्थियों को शिक्षक और सहपाठी-समूह की मदद किस प्रकार मिलती है।
- इस परियोजना कार्य के क्या उद्देश्य हैं?
  - जानकारी एकत्र करने और उन्हें प्रस्तुत संबंधी शिक्षार्थियों की योग्यता का आकलन करना?

    अथवा
  - शिक्षार्थियों को अपने अधिगम को गहनता प्रदान करने योग्य बनाना।

www.FirstRanker.com

यदि परियोजना का उद्देश्य शिक्षार्थियों की इस रूप में मदद करना है कि वे प्रकरण की गहन समझ अर्जित कर सकें तब परियोजना को भिन्न तरीके से संरचित करना चाहिए

- शिक्षक को शिक्षार्थियों के साथ परियोजना के बारे में चर्चा करनी चाहिए।
- वे उन तरीकों की खोज करेंगे कि जिनसे जानकारी को एकत्र किया जा सकता है, समझा जा सकता है और उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।
- समूह कार्य के लिए अवसर उपलब्ध कराना जिससे शिक्षार्थी सहयोगात्मक रूप से प्रकरण का अध्ययन कर सकें और एक-दूसरे की मदद एवं सहयोग कर सकें।
- शिक्षक नियमित अंतरालों पर संपूर्ण प्रक्रिया की निगरानी करता है, सुधार, संशोधन और परिमार्जन के लिए प्रतिपुष्टि देता है।
- फोल्डर जमा कराने के अतिरिक्त शिक्षार्थियों को कक्षा के समक्ष प्रस्तुति अथवा मौखिक परीक्षा देने की आवश्यकता होगी।
- सहपाठी-आकलन में शिक्षार्थियों को शामिल करते हुए आकलन किया जाता है।
- शिक्षक और शिक्षार्थियों द्वारा एकत्र की गई जानकारी आगे शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में और अधिक सुधार करने के लिए उपयोग लाया जाता है।

इस प्रकार की परियोजनाओं और दत्त कार्यों से संबंधित एक मुख्य मुद्दा यह है कि शिक्षक के पास यह सुनिश्चित करने की गुंजाइश बहुत कम होती है कि ये कार्य स्वयं शिक्षार्थियों द्वारा किए गए हैं। अब यह एक सामान्य बात है कि परियोजनाओं और दत्त कार्यों को दुकानों से 'खरीदा' भी जा सकता है। अभिभावकों द्वारा परियोजना कार्य किए जाने के उदाहरण भी अब सामान्य हैं। इसके अलावा इंटरनेट से जानकारी डाउनलोड करने से भी अधिगम बहुत कम होता है।

अत: रचनात्मक आकलन के प्रभावी उपकरण के रूप में परियेजना कार्य और दत्त कार्य का प्रयोग करने के लिए शिक्षक कुछ सावधानियां बरतें -

- शिक्षक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में शिक्षार्थी विद्यालय में ही कार्य को पूरा करें।
- शिक्षार्थियों के साथ परियोजना कार्य पर चर्चा करें और प्रत्येक चरण पर उनकी प्रगति की निगरानी करें।
- स्व और सहपाठी-आकलन के माध्यम से उन्हें आकलन-प्रक्रिया में शामिल करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- अनुदेशनात्मक रणनीति के रूप में वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि दें जिससे शिक्षार्थी अपने अधिगम में और उन्नति कर सकें।
- कार्य और अपने अनुभवों के साथ अपने कक्षागत अधिगम को जोड़ने में शिक्षार्थियों की मदद करना।
- कार्यकलापों के साथ अनुवर्तन करना, जैसे – कुछ संकल्पनाओं पर दुबारा चर्चा करना, व्याख्या करना आदि।

इस संदर्शिका में क्या है?

सत्र 2009–10 में कक्षा IX में के.मा.शि.बो. से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में सतत और समग्र आकलन की शुरुआत करने के बाद बोर्ड ने यह अनुभव किया कि यह ज़रूरी है कि सभी हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स), विशेषत: शिक्षकों को सतत और समग्र आकलन की एक समग्र तस्वीर उपलब्ध कराई जाए। अत: सतत और समग्र आकलन – कक्षा IX और X की शिक्षक संदर्शिका लाई गई। सीसीई योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देने के अतिरिक्त शैक्षिक और सह–शैक्षिक क्षेत्रों में आकलन के आधारभूत तत्वों, आकलन के विद्यालय–आधारित आकलन के आयाम और रचनात्मक एवं योगात्मक प्रयोजनों के लिए मूल्यांकन के उपकरण और तकनीकों को भी इस संदर्शिका में शामिल किया गया है। रचनात्मक और योगात्मक आकलन के लिए भारांक का सत्रानुसार आबंटन को भी इसमें शामिल किया गया है।

इस प्रकाशन के अनुक्रम में बोर्ड ने कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक आकलन पर उदाहरणपरक और व्याख्यात्मक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संदर्शिका की एक शृंखला निकालने का निर्णय लिया। बोर्ड ने इसके प्रकाशन के बाद से हितधारियों (स्टेकहोल्डर्स) से रचनात्मक आकलन संदर्शिकाओं पर अनेक टिप्पणियां और सुझाव प्राप्त किए और इसलिए उन्हें संशोधित करने का निर्णय लिया। बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों से प्रत्येक कार्यकलाप/कार्य पर व्यापक प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई और उसके प्रकाश में संशोधित संस्करण आया।

हमारा लक्ष्य है – इस संदर्शिका के माध्यम से रचनात्मक आकलन को सुदृढ़ करना और शिक्षकों को रचनात्मक आकलन के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश एवं सहायक सामग्री उपलब्ध कराना।

रचनात्मक आकलन पर शिक्षक संदर्शिका के उद्देश्य

1. सतत और व्यापक आकलन की व्यापक रूपरेखा में रचनात्मक आकलन की संकल्पना को स्पष्ट करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. निर्धारित सामग्री और कक्षा-पद्धतियों के साथ रचनात्मक आकलनों (एफए 1, एफए 2, एफए 3, और एफए 4) को एकीकृत करना।
3. शिक्षण-अधिगम-पक्रिया में संवर्धन के लिए रचनात्मक आकलन का उपयोग करने के लिए शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करना।
4. कक्षा IX और X के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में इकाई/पाठ के लिए रचनात्मक आकलन के कार्यकलापों के समृद्ध स्रोत उलब्ध कराना।
5. संदर्शिका में दिए गए रचनात्मक आकलन संबंधी कार्यों का उपयोग करने में शिक्षकों की मदद करना जिससे वे स्वयं अन्य कार्यों का निर्माण कर सकें।
6. रचनात्मक और योगात्मक आकलन संबंधी संकल्पना का स्पष्टीकरण प्राप्त करने में शिक्षकों की मदद करना।
7. सामग्री और पद्धतियों को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को क्षमता-वृद्धि के लिए प्रेरित करना।
8. प्रभावी समय-प्रबंधन में शिक्षकों की मदद करना।
9. रचनात्मक और योगात्मक आकलन को व्यवस्थित ढंग से अभिलेखन (रिकॉर्ड) के लिए विद्यालयों को आवश्यक दिशा-निर्देश उपलब्ध कराना।
10. आकलन के साथ-साथ परामर्श और संवर्धन के लिए शिक्षकों के विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराना।
11. विभिन्न हितधारकों के बीच सतत और समग्र आकलन तथा इस योजना में रचनात्मक आकलन के स्थान पर स्वस्थ एवं सार्थक अंत:क्रिया आरंभ करना।
12. शिक्षकों और शिक्षार्थियों - दोनों के लिए शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया को आनंददायक बनाना।

इस संदर्शिका का उपयोग कैसे करें?

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है कि इस संदर्शिका में सभी मुख्य शैक्षिक विषयों में कक्षा IX और X के लिए रचनात्मक आकलन के अनेक कार्यकलाप शामिल हैं। शिक्षक न केवल अधिगम का आकलन करने के लिए बल्कि स्वयं अपने शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए भी योजनाबद्ध तरीके से इनका उपयोग कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के प्रभावी प्रयोग के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं –

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

क. योजना

शैक्षिक सत्र के प्रारंभ में एक ही विषय के शिक्षक आपस में विचार-विमर्श कर सकते हैं और पूरे सत्र के लिए रचनात्मक आकलन की योजना बना सकते हैं। इस संदर्शिका में प्रत्येक विषय के लिए सुझाव के तौर पर वार्षिक योजना दी गई है। प्रत्येक विद्यालय द्वारा बनाई गई वार्षिक योजना में निम्नलिखित विवरण होने चाहिए –

- एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कितने रचनात्मक कार्यों का प्रयोग किया जाएगा? (कार्यों की संख्या सुझाई गई न्यूनतम संख्या से कम नहीं होनी चाहिए)
- संदर्शिका में से निर्धारित कार्य (शिक्षक संदर्शिका में दिए गए कार्यों के अतिरिक्त स्वयं अपने कार्यों को जोड़ने के लिए स्वतंत्र हैं।)
- कार्यों को निर्धारित/चुनते समय वैविध्यपूर्ण चयन की सावधानी बरतनी चाहिए जिससे ज्ञान और कौशलों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके तथा इसमें एकरसता की स्थिति न हो। उदाहरण के लिए, भाषाओं में पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने जैसे विभिन्न कौशलों एवं भाषा-क्षेत्र, जैसे- साहित्य तथा व्याकरण को रचनात्मक आकलन में शामिल किया जाना चाहिए इस योजना में चार रचनात्मक कार्यों में कार्यों को इस प्रकार बांटा जाना चाहिए कि इन सभी पक्षों का आकलन सत्र के दौरान कम से कम दो या तीन बार किया जा सके। इसी प्रकार अन्य विषयों में भी कार्यों का चयन इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे वे आकलन के विविध माध्यमों का प्रयोग करते हुए विभिन्न कौशलों और दक्षताओं का आकलन कर सकें।

ख. कक्षाकक्षीय रणनीतियां

चूंकि कार्यों को कक्षागत अनुदेशों के साथ एकीकृत किया जाना है, अत: शिक्षकों को अपनी पाठ-योजना में उन्हें अंत:स्थापित करना होगा। संदर्शिका में दी गई कार्य-विशिष्टियों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है –

अधिगम-परिणाम – ये प्रत्येक कार्य के लिए अधिगम-परिणामों को निर्दिष्ट करते हैं और इस प्रकार ये ध्यानकेंद्रित करने में शिक्षकों और शिक्षार्थियों की मदद करते हैं।

आकलन करने समय इन्हें ध्यान में रखना ज़रूरी है।

अभीष्ट समय – शिक्षक के लिए यह जानना ज़रूरी है कि एक कार्य को पूराकरने में कितने समय की

www.FirstRanker.com

आवश्यकता है, क्योंकि यह योजना बनाने और एक क्षण व्यर्थ किए बिना कार्य की क्रियान्विति में मदद करता है।

प्रक्रिया – प्रदत्त कार्य के लिए शिक्षक को भी कुछ तैयारी की आवश्यकता हो सकती है। इन्हें 'प्रक्रिया' के अंतर्गत शामिल किया गया है। इस शीर्षक के अंतर्गत लिए जाने वाले विभिन्न चरणों, बरती जाने वाली सावधानियों और जानकारी एकत्र करने के लिए सुझावों को भी उपलब्ध कराना गया है।

आकलन के मानदंड

आकलन को वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित बनाने के लिए प्रत्येक कार्य के लिए प्रस्तावित अंकों के साथ विशिष्ट मानदंड उपलब्ध कराए गए हैं। यह अनिवार्य है कि शिक्षक कार्य शुरू करने से पहले इन मानदंडों को प्रस्तुत करे अथवा कक्षा में पढ़कर सुनाए। शिक्षार्थियों को यह जानना चाहिए कि किन आधारों पर उनका आकलन किया जाएगा। इससे उन्हें कार्य की स्पष्टता भी होगी। शिक्षार्थियों द्वारा प्रत्येक कार्य में प्राप्त किए गए अंकों का अभिलेखन (रिकॉर्ड)किया जाना चाहिए आकलन-अभिलेख (रिकॉर्ड) का रख-रखाव भी होना चाहिए जब भी लिखित सामग्री तैयार होती है तो उसे शिक्षार्थी के पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाया जा सकता है।

प्रतिपुष्टि/अनुवर्तन

यह रचनात्मक आकलन का महत्वपूर्ण चरण है। शिक्षार्थियों का निष्पादन उनकी समझ, संकल्पनात्मक स्पष्टता, समस्याओं और अधिगम-रिक्तियों(गैप्स) के बारे में मूल्यवान जानकारी देता है। इस जानकारी के आधार पर शिक्षक प्रतिपुष्टि दे सकते हैं और उपचार एवं संवर्धन के लिए अनुवर्ती कार्यकलाप आयोजित कर सकते हैं। यह जानकारी शिक्षकों को इस रूप में समर्थ भी बनाएगी कि वे सीखने की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अपने शिक्षण-अभ्यासों में संशोधन कर सकें।

ग. कुछ चुनौतियां

शिक्षकों के समक्ष रचनात्मक आकलन को अपने शिक्षण में समेकित करने में कुछ चुनौतियां आ सकती हैं। ये चुनौतियां इनके कारण हो सकती हैं –

- कक्षा में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या
- समय की कमी

www.FirstRanker.com

- प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स) के कारण बाधाएँ
- समूह/जोड़ों में कार्य का आकलन करने की रणनीतियां

समुचित योजना की सहायता से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- ऐसे कार्य चुनें जिसमें समूह में और जोड़ों में कार्य करना शामिल हो।
- ऐसे कार्य जिनमें शिक्षार्थियों की ओर से लिखित उत्तर की आवश्यकता है, उनका आकलन सहपाठियों द्वारा किया जा सकता है।
- बहुविकल्पी और अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार वाले प्रश्नों के उत्तरों को शिक्षार्थियों द्वारा परस्पर कार्य-पत्रकों का आदान-प्रदान करते हुए स्वयं जांचा जा सकता है और शिक्षक सही उत्तर बताएँगे।
- एक कालांश में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करने की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि कार्य को शिक्षार्थियों के समूहों में बांटा जा सकता है जिससे शिक्षक विभिन्न कालांशों में उनका आकलन कर सकेंगे। इसका एक निहितार्थ यह है कि बड़ी संख्या वाली कक्षाओं में सभी कार्यों में सभी शिक्षार्थियों का आकलन करना ज़रूरी नहीं है। कार्यों की ध्यानपूर्वक बनाई गई योजना से शिक्षार्थियों के समूहों में बारी-बारी से कार्यों को बांटते हुए सभी कौशलों को शामिल किया जा सकता है।
- इससे पता लगता है कि एक समय में समान कार्य में सभी शिक्षार्थियों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए बहुबुद्धि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षक शिक्षार्थियों को दिए जाने वाले कार्यों के प्रति लचीले उपागम को अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए, जो शिक्षार्थी लिखित कार्य में बेहतर हैं उन्हें उन शिक्षार्थियों से अलग कार्य दिया जा सकता है जो व्यावहारिक कार्यों में बेहतर हैं।
- समय-सारिणी बनाते समय प्रत्येक विषय में दो कालांशों को एक साथ भी दिया जा सकता है। इन कालांशों में ऐसे कार्य करवाए जा सकते हैं जिनमें वाद-विवाद, प्रस्तुतीकरण, समूह-चर्चा, नाटकीकरण, भूमिका-निर्वाह(रोल प्ले) आदि शामिल हों।

समय-प्रबंधन

चूंकि प्रत्येक विषय के लिए कालांशों की संख्या पूर्व निर्धारित होती है, अत: शिक्षकों को ऐसा महसूस हो सकता है कि आबंटित कालांशों में रचनात्मक आकलन-कार्यों को आयोजित करना कठिन हो सकता है। फिर भी यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रचनात्मक आकलन शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में ही निर्मित

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

किया जाए और यह केवल पाठ्यचर्या-संपादन के लिए अपनाई गई पद्धति में बदलाव को प्रदर्शित करता है। व्यायख्याओं और शिक्षक-केंद्रित शिक्षण को कम करते हुए कार्यों और कार्यकलापों के लिए पर्याप्त समय निकाला जा सकता है। कुछ अन्य सुझाव इस प्रकार हैं -

- उचित योजना से दक्ष समय-प्रबंधन किया जा सकेगा।
- कक्षा आरंभ करने से पहले प्रत्येक कार्य के लिए तैयारी पहले ही पूरी कर ली जाए जिससे समय व्यर्थ ना हो।
- स्व और सहपाठी-आकलन का युक्तिसंगत रूप से प्रयोग करें।
- सत्र के शुरुआती भाग में शिक्षार्थियों को एक-दूसरे और शिक्षक के साथ सहयोग करने के लिए प्रशिक्षित करें। कुछ समय बाद वे दक्षता और तेज़ गति को बनाए रख सकेंगे।
- यह अनिवार्य है कि शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही शिक्षार्थियों के नाम के साथ अंक पत्र वार्षिक योजना के अनुसार तैयार कर लिए जाएँ। प्रत्येक आकलन के लिए चुने गए एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कार्यों के विवरण सा कॉलम में दिए जाएँ और अधिकतम अंक लिखे जाएँ जिससे अंकों को दर्ज़ करने में बहुत अधिक समय ना लगे।
- शिक्षार्थियों को अपने पोर्टफोलियो बनाने के लिए प्रशिक्षित करें। प्रत्येक विषय के लिए एक फोल्डर बनाया जा सकता है जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा अपने सर्वश्रेष्ठ लिखित कार्य को रखा जा सकता है। जब रिकॉर्ड रखने की ज़िम्मेदारी उठाने में शिक्षार्थियों को मदद मिलती है तो वे बेहतर समय-प्रबंधन के अलावा शिक्षक का कुछ भार भी कम कर सकते हैं।

प्रचालन-तंत्र (लोजिस्टिक्स)

सभी विद्यालयों में कार्य-पत्रकों की फोटोकॉपी करना संभव न हो। शिक्षकों को इस समस्या से उबरने के लिए कुछ रणनीतियों को अपनाना होगा।

सुझाव

- केवल विस्तृत कार्य-पत्रक और वे कार्य-पत्रक जिनमें आरेख और चित्र हैं, उन्हीं की फोटोकॉपी करवाने की ज़रूरत होती है। जब भी संभव हो, कार्य-पत्रक को ब्लैकबोर्ड पर लगाया जा सकता है। यदि तकनीक उपलब्ध है तो कार्य-पत्रक को एलसीडी की सहायता से प्रदर्शित किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

- बहुविकल्पी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को पढ़ा जा सकता है और शिक्षार्थियों को पेपर पर केवल उत्तर लिखने का निर्देश दिया जा सकता है।
- जोड़ों में कार्य करने, समूह-कार्य और पूरी कक्षा द्वारा कार्य करने के लिए निर्देशों को एक या दो बार पढ़ा जा सकता है।
- अग्रिम रूप में ही फोटोकॉपी की आवश्यकताओं को प्राचार्य और विद्यालय-प्रशासन को बता दें जिससे विद्यालय समुचित प्रबंध कर सके।
- फोटोकॉपी के लिए हमेशा कागज़ के दोनों तरफ का प्रयोग करें। इसका अर्थ है कि एक कागज़ पर एक से अधिक कार्य फोटोकॉपी होगी। जब शिक्षार्थी एक कार्य को पूरा कर लें तब इन कार्य-पत्रकों को ले लिया जाए और दूसरे कार्य के लिए दुबारा से कार्य-पत्रक बांट दिए जाएँ।
- जब भी संभव हो, एक कार्य-पत्रक को दो शिक्षार्थियों द्वारा बांटा जा सकता है।
- शिक्षार्थियों को कागज़/कार्य-पत्रक को किफायत से बरतने के लिए प्रशिक्षित करें।

घ. समूह/जोड़ों में कार्य करने के आकलन की रणनीतियां

प्रारंभ में शिक्षकों के लिए समूह/जोड़ों में कार्यों का आकलन करना कुछ कठिन हो सकता है, क्योंकि इसका परिणाम एक से अधिक शिक्षार्थियों को मिलता है। इस संबंध में शिक्षकों की मदद करने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं-

- जब भी संभव हो, समूह-कार्य और जोड़े में किए जाने वाले कार्यों को छोटे भागों में बांट सकते हैं और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक भाग पर कार्य करने के लिए कहा जा सकता है।
- जहां उपयुक्त तरीका संभव न हो, वहां समूह के प्रत्येक सदस्य के योगदान का अवलोकन और निगरानी की जाए।
- अकसर समूह-चर्चा के बाद प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुति की जाए यह ध्यान रखा जाए कि प्रस्तुतीकरण की ज़िम्मेदारी बारी-बारी से सभी शिक्षार्थियों के पास आए जिससे एक समय के बाद सभी को अपने समूह के विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिल सके।
- सामूहिक कार्य का आकलन पूरे समूह/जोड़ों के लिए किया जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि समूह के प्रत्येक सदस्य को समान अंक या ग्रेड मिलेंगे। जबकि जोड़ों में करने वाले कार्यों में व्यक्तिगत निष्पादन का आकलन करना आसान होता है।

www.FirstRanker.com

- चूंकि रचनात्मक कार्य अनौपचारिक होता है अत: समूह-कार्य का आकलन व्यापक मानदंडों पर किया जा सकता है, जैसे - भागीदारिता, योगदान और समूह के प्रत्येक सदस्य की प्रभावशीलता।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक समूह-कार्य की निगरानी समुचित रूप से करें जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक शिक्षार्थी कार्य में हिस्सा ले रहा है और कोई शिक्षार्थी अपना प्रभुत्व नहीं बना रहा।

निष्कर्ष

इस संदर्शिका में शिक्षक की तैयारी, योजना और समन्वय पर बल दिया गया है। यह सुझाव दिया जाता है कि वार्षिक योजना बनाते समय प्राचार्य प्रत्येक विषय-समिति से बातचीत करें और कार्य-योजना बनाने में शिक्षकों की मदद करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आकलन को शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में एकीकृत किया गया है।

यह भी अनिवार्य हो सकता है कि पहले और दूसरे सत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक इकाई/पाठ के लिए विस्तृत पाठ-योजनाओं को तैयार किया जाए जबकि पाठ-योजना प्रत्येक शिक्षक द्वारा विकसित नवाचारी उपकरण के रूप में हो जो पढ़ाई जाने वाली संकल्पनाओं, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और अन्य समाज-सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होगी। शायद यह उपयुक्त होगा कि पाठ-योजना में सतत और समग्र आकलन को समेकित करने के लिए इसमें कुछ व्यापक क्षेत्रों को शामिल किया जाए पाठ-योजना के प्रारूप के साथ इन व्यापक क्षेत्रों का निर्धारण प्रत्येक विद्यालय द्वारा किया जा सकता है, समग्र योजना को सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया जा सकता है-

- विषय-वस्तु/प्रकरण/पाठ
- संकल्पनाएँ/कौशल
- स्तर- प्रवेश, प्रक्रिया, समेकन, बहिर्गमन
- उपचार

यह भी सुझाव दिया गया है कि रचनात्मक कार्य का आकलन दस अंकों या दस के गुणकों में किया जा सकता है जिससे भारोक की गणना में आसानी हो सके। इसी प्रकार सूचना और संचार तकनीक (आईसीटी) को समेकित करते हुए तथा शिक्षार्थी स्व-अभिगम्य उपकरणों के विकास के माध्यम से शिक्षार्थियों द्वारा स्व-आकलन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए इससे शिक्षार्थियों को स्वायत्ता के भरपूर अवसर मिलेंगे और

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

शिक्षकों का भार भी कम होगा। अंत में परियोजनाओं के बारे में कुछ बातें। यह दस्तावेज़ यह बताता है कि जहां तक संभव हो परियोजनाओं को विद्यालय में ही किया जाना चाहिए लेकिन कुछ परियोजनाएँ ऐसी होती हैं जिनमें गहन शोध और स्वयं कार्य करने तथा विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है जिन्हें विद्यालयी समय में पूरा करना कठिन होता है। चूंकि यहां मुख्य सरोकार शिक्षार्थियों द्वारा आकलन के लिए जमा किए गए कार्य की वास्तविकता और साख है। यदि शिक्षक द्वारा परियोजना-कार्य की निगरानी में पर्याप्त सावधानी बरती जाए जो परियोजना कार्य का कुछ भाग विद्यालय से बाहर करने के लिए शिक्षार्थियों को अनुमति दी जा सकती है। इस संदर्शिका में इस विषय से संबंधित बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तृत दिशा-निर्देश दिए गए हैं। परियोजनाओं को यथार्थवादी और सरल बनाते हुए शिक्षक शिक्षार्थियों के कार्य की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रचनात्मक आकलन

महत्वपूर्ण नोट्स

- यह अनुशंसित किया जाता है कि शिक्षक न्यायपूर्ण तरीके से प्रति इकाई अथवा पाठ के अनुसार रचनात्मक कार्यों और कई कार्यों का चयन करते हैं जिससे विभिन्न कौशलों और अधिगम-परिणामों को शामिल किया जा सके।
- यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक पाठ/इकाई के लिए सुझाए गए सभी कार्यों को कक्षा में आयोजित किया जाए और ना ही यह आवश्यक है कि सभी कार्यों/कार्यकलापों का आकलन या अंकित किया जाए फिर भी, शिक्षार्थी उन कार्यकलापों/कार्यों से परिचित होने चाहिए जिन्हें आकलन के लिए ध्यान में रखा जाएगा।
- कार्यकलाप शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में ही शामिल होने चाहिए और कक्षागत प्रक्रियाओं का अभिन्न हिस्सा होने चाहिए।
- प्रत्येक कार्य के अंकों का निर्धारण शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है, लेकिन प्रत्येक रचनात्मक आकलन के भारांक की गणना दस प्रतिशत के लिए की होनी चाहिए।
- रचनात्मक आकलन से संबंधित सभी कार्यकलाप, जैसे - प्रश्नोत्तरी, परियोजनाएँ, भूमिका-निर्वाह (रोल प्ले), आलेख (स्क्रिप्ट) लिखना आदि 'कक्षा में' और 'विद्यालय में' ही की जानी चाहिए और शिक्षक द्वारा इनका अवलोकन किया जाना चाहिए

पोर्टफोलियो में शामिल हो सकते हैं -

- फोटोग्राफ्स - शिक्षार्थियों के विकास के संवेगात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों के बारे में अंतर्दृष्टि उपलब्ध कराते हैं।
- पेंटिंग्स और कलात्मक उद्यमों के अन्य उदाहरण - शिक्षार्थियों की योग्यताओं, विचारों और अभिवृत्तियों के साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं।
- दृश्य-श्रव्य (ऑडियो-वीडियो) रिकॉर्डिंग्स - स्थिति विशेष अथवा एक लंबे समय तक महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं और पक्षों को रिकॉर्ड किया जा सकता है और बाद में उनका विश्लेषण किया जा सकता है।
- स्व-आकलन पत्रक - शिक्षार्थियों के स्व-मूल्यांकन के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए पोर्टफोलियो।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- सहपाठी–आकलन पत्रक – टीम में और समूह–आधारित कार्यकलापों, सामाजिक परियोजानाओं और सहपाठियों से संबंधित व्यवहार का आकलन करने के लिए अति उत्तम। शिक्षार्थियों के सामाजिक जीवन–कौशलों के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए इन्हें उनके पोर्टफालियो में शामिल किया जा सकता है।
- अभिभावक आकलन पत्रक – अभिभावकों द्वारा किए गए मूल्यांकन के साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए इन्हें शिक्षार्थियों के पोर्टफोलियो में शामिल किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो अधिक जानकारी के लिए सीसीई संदर्शिका देखिए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

हिन्दी पाठ्यक्रम

'अ'

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

नेता जी का चश्मा

स्वयं प्रकाश

प्रदत्त कार्य-1 : अनुच्छेद लेखन

विषय : दादा जी का चश्मा।

उद्देश्य :

- अनुच्छेद लेखन की समझ विकसित करना।
- बड़ों के प्रति आदर / सम्मान की भावना का विकास करना।
- बुजर्गों के प्रति सजग एवं सहयोग की भावना उत्पन्न करना।
- मानव-जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का परिचय कराना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया : व्यक्तिगत कार्य

1. अध्यापक सभी छात्रों से इस विषय पर चर्चा करेंगे।
2. इसके बाद सब विद्यार्थी अपने दादा जी/नाना जी और उनके चश्मे के विषय में एक अनुच्छेद लिखेंगे।
3. इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. इस बीच शिक्षक छात्रों के लेखन कौशल का निरीक्षण करेंगे।
5. कार्य पूर्ण होने पर अध्यापक सुविधानुसार उसका मूल्यांकन कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- लेखन कौशल
- भाषायी दक्षता

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त यदि अध्यापक चाहें तो स्वतन्त्र रूप से किसी उपयुक्त बिन्दु को आधार मानकर मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम अनुच्छेद को कक्षा में पढ़कर सुनाया जायेगा।
- छात्रों को व्यवहार–कुशल होने के लिए प्रेरित किया जायेगा।
- कमज़ोर विद्यार्थियों को अच्छा लिखने के लिए मार्ग दर्शन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य–2 : वर्णन

विषय : स्वतन्त्रता सेनानियों के नामों का संकलन एवं उनसे जुड़ी किसी विशेष घटना का वर्णन।

उद्देश्य :

- देश भक्ति की भावना का विकास करना।
- राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कायम रखने की प्रेरणा देना।
- पारस्परिक एकता व मनोबल को बढ़ावा देना।
- खोज परक प्रवृति का विकास करना।
- देश भक्तों के प्रति संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया : सामूहिक कार्य

1. शिक्षक द्वारा 1857 के क्रान्ति आन्दोलन के प्रमुख सेनानियों का उल्लेख किया जायेगा।
2. कक्षा को पांच समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. तत्पश्चात् छात्रों को निर्देश दिया जायेगा कि वे कम से कम पांच स्वतन्त्रता सेनानियों के नामों की सूची बनाएं व उनसे जुड़ी किसी एक विशेष घटना का वर्णन कुछ पंक्तियों में करें।
4. इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाए।
5. इस मध्य शिक्षक छात्रों के कार्य का निरीक्षण करेंगे।
6. इसके बाद प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण देगा प्रत्येक समूह को 3–3 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. मूल्यांकन आधार श्याम पट पर लिख दिए जाएँगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- अभिव्यक्ति क्षमता
- घटना क्रम का वर्णन
- सूची

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतन्त्र रूप से सुविधानुसार मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वाधिक नाम लिखने वाले छात्र की प्रंशसा की जाएगी।
- जिन छात्रों को अधिक जानकारी नहीं है उन्हें उत्साहित किया जाएगा तथा और जानकारी दी जाएगी।

प्रदत्त कार्य-3 : संवाद लेखन

विषय : मूर्तिकार, चित्रकार तथा संगीतकार के विवाद को व्यक्त करता संवाद लेखन।

उद्देश्य :

- कलाकारों के महत्व को समझाना।
- कलाकारों का अहं उनके झगड़ों का कारण है, अतः अहम् के दुष्प्रभाव से दूर रहने की प्रेरणा देना।
- संवाद विधा से परिचित कराना।
- मौलिक चिंतन की प्रेरणा देना।
- लेखन, वाचन, श्रवण क्षमताओं का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक विषय का स्पष्टीकरण करेगा कि मूर्तिकार, चित्रकार तथा संगीतकार अपनी-अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते हैं। इसी बात को संवादों के माध्यम से अभिव्यक्त करें।
2. पूरी कक्षा को तीन समूहों में विभक्त कर दिया जाए।
   - मूर्तिकार समूह
   - चित्रकार समूह
   - संगीतकार समूह

www.FirstRanker.com

3. 5–10 मिनट का समय सोचने के लिए दिया जाएगा तथा प्रत्येक समूह यह योजना बनाएगा कि समूह के किस सदस्य को क्या कार्य करना है।
4. प्रत्येक समूह का एक-एक प्रतिनिधि कक्षा में सबके सम्मुख जाकर अपने-अपने संवादों को नाटक की रूपरेखा के अनुसार बोलेंगे।
5. इसमें 10–15 मिनट का समय लगेगा।
6. सारी प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।
7. अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले से ही श्याम पट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- सटीक तर्क
- संवाद का उच्चारण
- हाव भाव
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे संवाद बोलने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- खुलकर संवाद बोलने की प्रेरणा देते हुए अन्य विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : सूचना एकत्र करना।

विषय : सुभाष चन्द्र बोस

उद्देश्य :

- सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से प्रेरणा लेना।
- देश भक्ति की भावना उत्पन्न करना।
- खोजपरक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
- लेखन एवं पठन कौशल तथा वाचन की क्षमता को परिष्कृत करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निर्धारित समय: एक कालांश

प्रक्रिया:

1. अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में स्पष्ट कर देंगे कि सभी को सुभाषचंद्र बोस के जीवन से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित कर कक्षा में सुनानी हैं। सूचनाएँ नेता जी की जीवनी, कार्य, देश से बाहर का उनका संघर्ष, कांग्रेस में कार्य इत्यादि कुछ भी हो सकती हैं।
2. यह कार्य दो या तीन दिन पूर्व दिया जाए।
3. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से दिया जाए।
4. निर्धारित समय पर सभी विद्यार्थी एकत्रित सूचनाएँ कक्षा में 1–1 मिनट में सुनाएँगे।
5. अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु:

- विषय सामग्री / संकलित सूचनाएँ
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी दक्षता
- आत्म विश्वास

टिप्पणी:

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि:

- जिन विद्यार्थियों ने सुभाषचन्द्र बोस के जीवन के विषय में प्रयासपूर्वक सूचनाएँ एकत्रित की हैं, उनकी सराहना की जाए।
- जिनकी सूचनाएं अधूरी एवं नगण्य हैं उन्हें सूचना स्रोतों की जानकारी देकर सूचनाएं एकत्र करवाने की प्रेरणा दी जाए।
- पुस्तकालय से किताबें लेकर दी जा सकती हैं।

प्रदत्त कार्य–5 : साक्षात्कार

विषय : फेरीवाले से साक्षात्कार।

उद्देश्य :

- बातचीत की कला विकसित करना।

www.FirstRanker.com

- प्रश्नो की समझ तथा निर्माण करना।
- आम आदमी की समस्या को जानना।
- भावनात्मक कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विषय की पूरी जानकारी देंगे।
3. प्रत्येक विद्यार्थी को अपने मोहल्ले में आने वाले फेरीवाले से साक्षात्कार लेने के लिए कहा जाएगा।
4. सभी विद्यार्थी साक्षात्कार के लिए शिक्षक द्वारा सुझाए गए मूल प्रश्नों को आधार लेंगे।
5. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
6. सभी विद्यार्थी मूल्यांकन के लिए अपना कार्य अध्यापक को सौंप देंगे।
7. अध्यापक मूल्यांकन के बाद कक्षा में कार्य वापस करेंगे तथा विद्यार्थियों को परिणाम बताएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रस्तुतीकरण एवं विषय वस्तु
- समग्र प्रभाव
- सटीक तर्क एवं उदाहरण

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे साक्षात्कार करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करेंगे।
- कमजोर विद्यार्थियों को उत्साहित करेंगे।
- आदर्श साक्षात्कार कक्षा में प्रस्तुत भी कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

बाल गोबिन भगत

रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रदत्त कार्य-1: अनुभव लेखन

विषय : ग्रामीण लेखन से संबंधित अनुभव को व्यक्त करना।

उद्देश्य :

- भारत के गाँवों को समझना।
- गाँव से संबंधित समस्याओं को जानना।
- चिंतन एवं समझ विकसित करना।
- समस्याओं के निवारण के लिए संवेदनशील बनना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक विषय से विद्यार्थियों को जोड़ेंगे।
2. पुन: विद्यार्थियों को ग्राम्य जीवन से संबंधित जानकारी देंगे।
3. इस कार्य के लिए 25 मिनट का समय देकर अनुभव लेखन कराया जाएगा।
4. लेखन के बाद सभी कार्यों को एकत्रित कर अध्यापक मूल्यांकन करेंगे।
5. विद्यार्थियों को मूल्यांकन बिंदु स्पष्ट कर दिये जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- ग्रामीण जीवन की समझ
- विषयवस्तु की प्रस्तुति
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य उपयुक्त बिन्दुओं के आधार पर स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे कार्य की प्रशंसा की जाए और उसे विद्यार्थी द्वारा कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- जो छात्र लिखने में असफल रहें उनका मार्गदर्शन किया जाए और कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- उनसे लेखन कार्य का अभ्यास करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : भेंटवार्ता (कल्पना के आधार पर)

विषय : कबीरदास से एक मुलाकात।

उद्देश्य :

- भेंटवार्ता विधा से परिचित कराना।
- कबीर के विषय में और अधिक जानकारी देना।
- कल्पनाशीलता का विकास करना।
- रचनात्मकता का विकास करना।
- वाचन, पठन, लेखन व श्रवण कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक सर्वप्रथम विषय का स्पष्टीकरण करेंगे कि किस प्रकार अपनी कल्पना के आधार पर कबीरदास जी से भेंटवार्ता लिखेंगे। स्वयं भेंटवार्ता को उदाहरण देकर स्पष्ट कर दें।
2. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
3. अध्यापक कबीरदास के पद स्वयं भी कक्षा में सुनाएँ तथा विद्यार्थियों को भी पढ़ने के लिए कहें तभी भेंटवार्ता अच्छी बनेगी। भेंटवार्ता या सक्षात्कार कैसे लेना है, यह भी विद्यार्थियों को समझाया जाए।
4. इसके लिए एक या दो दिन का समय लिखने के लिए दिया जाए।
5. निर्धारित कालांश में सभी विद्यार्थी 2-3 मिनट में अपनी-अपनी काल्पनिक भेंटवार्ता सुनाएंगे।
6. अध्यापक साथ-साथ मूल्यांकन अंक लगा सकते हैं।
7. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु:

- भेंटवार्ता की गुणवत्ता

www.FirstRanker.com

- कल्पनाशीलता
- रोचकता
- उच्चारण

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- रोचक एवं प्रभावशाली लेखन की सराहना की जाए।
- साधारण रचना करने वाले विद्यार्थी को अच्छा लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अध्यापक स्वयं उदाहरण देकर उनका मार्ग दर्शन करें।

प्रदत्त कार्य-3 : संकलन एवं गायन

विषय : लोकगीत संकलन एवं गायन।

उद्देश्य :

- लोकगीत की समझ विकसित करना।
- लोकगीतों का महत्व समझाना।
- भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- लोक में व्याप्त सभ्यता संस्कृति को समझना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह सामूहिक कार्य है।
2. शिक्षक सर्वप्रथम लोकगीतों का महत्व समझाते हुए कोई लोकगीत भी उदाहरणार्थ बता देंगे। (गाकर सुनाया जा सकता है)
3. पांच-पांच विद्यार्थियों के समूह बनाए जायेंगे तथा संभव हो तो विभाजन 'क्षेत्र विशेष' के रूप में भी हो सकता है।
4. यह कार्य प्रक्रिया से एक सप्ताह पूर्व दिया जाएगा ताकि छात्र लोकगीतों का संकलन कर सकें।
5. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

6. इस बीच शिक्षक छात्रों से कार्य के विषय में जानकारी लेते रहेंगे।

7. गतिविधि के समय प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण देगा। एक या एक से अधिक छात्र मिलकर गीत प्रस्तुत कर सकते हैं। (समूह पहले से प्रत्येक सदस्य को कार्य आवंटित कर देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लोकगीत चयन
- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, लय)
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे लोकगीत चयन एवं गायन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे गीत गायन को विद्यालय मंच पर भी प्रस्तुत कराया जा सकता है।
- सामान्य प्रस्तुति देने वालों को संगीत शिक्षक से सहायता दिलवाई जा सकती है।

प्रदत्त कार्य-4 : व्याकरण

विषय : क्रिया विशेषण तथा उसके भेद छाँटकर लिखना।

उद्देश्य :

- व्याकरण की समझ।
- क्रिया विशेषण को जानना।
- भेदों की पहचान तथा प्रयोग।
- भाषा की समझ तथा प्रयोग विकसित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य समूह रूप से होगा।
2. कक्षा को 5-5 विद्यार्थियों के समूह में बाँटा जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

3. शिक्षक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए छात्रों को पाठ पढ़कर प्रयुक्त क्रिया विशेषण छाँटने के लिए कहेंगे।
4. प्रत्येक समूह को 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूम कर सभी छात्रों को प्रेरित करेंगे।
6. लिखने के पश्चात् समूह का एक विद्यार्थी अपने समूह के कार्य को पढ़कर बताएगा।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्याम पट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- क्रिया विशेषण
- क्रिया विशेषण के भेद
- प्रयोग

प्रतिपुष्टि :

- पूर्ण तथा सही जानकारी देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- औसत जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : अलबम निर्माण

विषय : विभिन्न ऋतुओं पर आधारित कविता संग्रह का अलबम।

- ऋतुओं की जानकारी।
- ऋतुओं से संबधित कविता खोजना।
- प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना।
- कविता पढ़ेगें।
- सोच, विचार तथा समझ विकसित करना।
- कविता को समझना।

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक कार्य का स्वरूप तथा प्रक्रिया समझाएंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

3. कार्य पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
4. विद्यार्थी कार्य पूरा कर अध्यापक के पास जमा करेंगे।
5. कार्य का मूल्यांकन कर विद्यार्थियों को बताया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार अध्यापक पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- संपूर्ण जानकारी
- कविता का चयन
- सुलेख / प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- साधारण या सामान्य जानकारी देने वाले विद्यार्थियों को अच्छे व प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया जाए।
- अध्यापक उदाहरण देकर छात्रों की सहायता और उचित मार्गदर्शन करें।
- ऋतुओं तथा संबंधित कविताओं की जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

लखनवी अंदाज

यशपाल

प्रदत्त कार्य-1 : भाषा ज्ञान

विषय : उर्दू शब्दों का संग्रह

उद्देश्य :

- उर्दू शब्दों का ज्ञान और उनसे अवगत कराना।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना।
- भाषा की स्वाभाविकता की जानकारी देना।
- भाषा के मूल स्वरूप को समझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक द्वारा कुछ उर्दू के शब्द श्यामपट् पर लिखे जायेंगे।
2. तत्पश्चात् विद्यार्थियों को निर्देश दिया जायेगा कि वे दस से पन्द्रह उर्दू के शब्द खोजे और उत्तर पुस्तिका में लिखें।
3. उन शब्दों के समक्ष वे उनका हिन्दी रूपान्तर लिखें और उनका अर्थ भी लिखें।

4. विद्यार्थी उपर्युक्त शब्दों में से 10-15 शब्दों के रूपान्तर व अर्थ लिखेगा जिसमें 15 मिनट लग सकते हैं।
5. अध्यापक प्रत्येक शब्द का हिन्दी रूपान्तर व अर्थ कक्षा में बताएंगे तथा सभी विद्यार्थी तदानुसार अपने-अपने कार्य का मूल्यांकन करेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

6. अध्यापक उनके द्वारा बताए गए अंकों का रिकार्ड रखेंगे अथवा उनसे पेपर लेकर उनकी सत्यता भी जाँची जा सकती है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रत्येक तीन सही शब्द के लिए अंक दिए जाएंगे।

प्रतिपुष्टि :

- सभी सही शब्द लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- बहुत कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को काम में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अध्यापक विद्यार्थियों को अन्य भाषाओं के शब्दों की जानकारी रखने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य-2 : परियोजना कार्य

विषय : लखनऊ शहर की ऐतिहासिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थितियों की जानकारी।

उद्देश्य :

- विद्यार्थी लखनऊ शहर को जानेंगे।
- विस्तार से अध्ययन कर सकेंगे।
- ऐतिहासिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- सोच, समझ तथा लेखन का विकास।

निर्धारित समय : एक सप्ताह

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक कार्य के स्वरूप तथा संरचना को समझाएंगे।
3. अध्यापक मूल्यांकन के आधार बिन्दुओं पर कार्य के प्रारूप को समझाएंगे।
4. एक सप्ताह का समय देकर सर्वप्रथम अध्यापक इस कार्य प्रपत्र की प्रति सब छात्रों को बांट देंगे अथवा श्याम पट्ट पर लिख देंगे।
5. मूल्यांकन के आधार अध्यापक स्वयं निर्धारित कर विद्यार्थियों को बताएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- परियोजना के प्रारूप

www.FirstRanker.com

- विषयवस्तु
- भाषा

प्रतिपुष्टि :

- संतोषजनक कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना।
- जो विद्यार्थी कार्य पूर्ण नहीं कर पाएँ उन विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन कर अन्य छात्रों की सहायता से कार्य पूर्ण कराएँ।
- अध्यापक विद्यार्थियों को कार्य पूरा करने में सहायता करें।

प्रदत्त वाक्य-3 : शब्दो से चित्र निर्माण।

विषय : नवाब साहब का शब्द चित्र।

उद्देश्य :

- चिंतन कौशल का विकास।
- अभिव्यक्ति कला विकसित करना।
- सूक्ष्मबोध विकसित करना।
- संपूर्ण व्यक्तित्व निरीक्षण करने की क्षमता विकसित करना।
- लेखन क्षमता विकसित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक विषय पर चर्चा कर / उदाहरण देकर समझाएंगे।
2. सभी विद्यार्थियों को कक्षा कॉपी में कार्य करने के लिए कहा जाएगा।
3. 20 मिनट का समय देकर नवाब साहब के बारे में लिखवाया जाएगा।
4. शिक्षक मूल्यांकन के आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
5. लेखन के बाद उसे इकट्ठा कर जाँच करेंगें।
6. जाँच करने में कुछ समय लगने के कारण परिणाम अगली कक्षा में बताया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु

www.FirstRanker.com

- दृश्यात्मकता
- रोचकता
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- रोचक और चित्रात्मक वर्णन करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- अध्यापक महादेवी के शब्द चित्र पढ़ने के लिए बच्चों को उत्साहित करें। (जैसे सोना और गोरा आदि)

प्रदत्त कार्य-4 : वाक्यों का चयन एवं प्रयोग।

विषय : हिन्दी भाषा में शिष्टाचार से जुड़े शब्द।

उद्देश्य :

- हिन्दी भाषा के विस्तार तथा प्रयोग को जानेंगे।
- शिष्टाचार से जुड़े शब्दों की जानकारी।
- चिंतन तथा खोजी प्रकृति का विकास।
- अनुशासन तथा बोलने की कला का विकास।
- सौन्दर्यबोध एवं सृजनात्मक दृष्टि का विकास।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह व्यक्तिगत कार्य है।
2. सर्वप्रथम अध्यापक विषय को समझाते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।
3. प्रत्येक छात्र को सोचने एवं लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा। छात्र शब्दों, वाक्यों को सोचकर लिखेगा।
4. मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
5. सोचकर लिखने के पश्चात् सभी छात्र 1 से 1½ मिनट में अपनी बात रखेंगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन आधार बिन्दु :

- शब्दों की संख्या के आधार पर।

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के लिए शिक्षक अन्य बिन्दुओं को भी आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे चयन और प्रयोग की सराहना करें।
- जो विद्यार्थी अच्छी प्रकार से कार्य नहीं कर पा रहे उनकी सहायता की जाए।
- अध्यापक कुछ ऐसे शब्दों के बारे में बताएं जो विद्यार्थियों से छूट गया हो।

प्रदत्त कार्य-5 : प्रबन्धन

विषय : बुरी से बुरी बात को भी कैसे सुंदर ढंग से कहा जा सकता है - प्रबन्धन।

उद्देश्य :

- बोलने की कला को विकसित करना।
- सकारात्मक सोच उत्पन्न करना।
- एक शिष्ट एवं प्रिय लहज़े का विकास करना।
- सुसंस्कृत एवं मृदुभाषी बनाना।
- भाषा पर अधिकार कराना।
- धैर्य एवं समस्या सुलझाने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन एवं श्रवण दक्षता का प्रयोग।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक विषय को अच्छी तरह समझाएंगे तथा उदाहरण देकर विषय का स्पष्टीकरण करेंगे।
   - जैसे अंधे को अंधा न कहकर 'सूरदास' कहना।
   - किसी श्यामवर्णी बच्चे को देखकर कहना कि तुम भगवान कृष्ण का साक्षात् रूप हो।
   - किसी स्थूलकाय महिला को कहना कि वह गजगामिनी है।

www.FirstRanker.com

- ❋ किसी विद्यार्थी के परीक्षा में असफल होने पर कहना कि इस कक्षा को अभी आपकी एक वर्ष और आवश्यकता है।
- ❋ जैसे दुर्घटना ग्रस्त हो जाने पैर की हड्डी टूटने पर डॉक्टर कहे – ईश्वर का शुक्रिया अदा करिए कि आप बिल्कुल ठीक हो, बस आपके पांव की हड्डी सारा धक्का सहन नहीं कर पाई, उसके टुकड़े ज़रूर हो गए।
- ❋ किसी के बहुत बोलने पर कहना – आप बहुत अच्छा बोलते हैं पर कभी मौन का आनंद भी लीजिए।
- ❋ किसी प्रिय और कीमती वस्तु के खोने पर कहना कि प्रिय चीजों का दूर जाना उनसे हमारे प्यार को दर्शाता है।

2. सभी विद्यार्थी इसी तरह के दो–दो वाक्य का उदाहरण लिखेंगे।
3. यह व्यक्तिगत स्तर पर कराया जाएगा।
4. उन्हें सोचने व लिखने के लिए 5–10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. सभी विद्यार्थी अपना अपना कार्य कक्षा में सुनाएँगे।
6. अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
7. पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगाा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रभावोत्पादक शब्द
- भाषा का चयन
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- मौलिक कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अध्यापक इस तरह की बातों को व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मानवीय करुणा की दिव्य चमक

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

प्रदत्त कार्य-1 : प्रसिद्ध व्याक्तियों की सूची।

विषय : ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तियों की सूची तैयार कीजिए जिनकी जन्मभूमि और कर्मभूमि में अन्तर रहा हो।

उद्देश्य :

- प्रसिद्ध व्यक्तियों को जानना एवं समझना।
- संस्मरण विधा से परिचित कराना।
- चिंतन एवं समझ का विकास करना।
- कलात्मक अभिव्यक्ति का विकास।
- वैश्विक समझ का विकास।
- आनंदानुभूति कराना।
- हास्य व्यंग्य में प्रवीणता दिलाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में प्रश्न पूछकर विषय से विद्यार्थियों को जोड़ेंगे।
2. इनसे संबंधित व्यक्तियों को पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को समय दिया जाएगा।
3. गतिविधि की तिथि तथा मूल्यांकन के आधार पहले बता दें।
4. इसे सोचने लिखने व सुनाने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. निर्धारित तिथि के दिन गतिविधि को पूरा करने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. विद्यार्थियों द्वारा तैयार सूची को संग्रह कर मूल्यांकित किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- प्रभावशाली सूची

www.FirstRanker.com

- संतोषजनक सूची
- प्रयासित सूची

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं की सुविधा से मूल्यांकन आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली कार्य करने वाले विद्यार्थी की सहायता की जाए।
- अति सामान्य लिखने वालों को बेहतर लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।
- आदर्श सूची का नमूना दिखाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-2 : पत्र लेखन

विषय : वतन की याद में

उद्देश्य :

- जन्मभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।
- देश भक्त होने की प्रेरणा देना।
- पत्र लेखन की विधा सिखाना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम छात्रों को निर्देश दिया जायेगा कि वे कल्पना करें कि वे विदेश में हैं, उन्हें अपने वतन की बहुत याद आ रही है।
2. छात्र अपने मित्र अथवा भाई को पत्र लिखें।
3. उस पत्र में अपने देश के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए अपने विचार व्यक्त करें।
4. शीघ्र न आने की असमर्थता बताते हुए देश की यादों का वर्णन करें।
5. इस प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जाएँगे।
7. लेखन के पश्चात् शिक्षक सभी छात्रों से उत्तर पुस्तिका एकत्र करके सुविधानुसार मूल्यांकन कर लेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- लेखन विधा
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य आधार बिन्दु बनाकर स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम पत्र को कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- कार्य करने में असमर्थ विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन किया जाए।
- जिन विद्यार्थियों ने अच्छा लिखा है उनकी सराहना की जाए।
- व्यावहारिक जीवन में पत्र लिखने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : कार्य प्रपत्र

विषय : फादर कामिल बुल्के के जीवन पर।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि कराना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- स्मरण शक्ति को बढ़ावा देना।
- मानवीय संवेदनाएँ उत्पन्न करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषय की जानकारी देंगे। यह कार्य पाठ को पढ़ाने के उपरांत दिया जाएगा।
3. उपुर्यक्त कार्य प्रपत्र को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा छात्र ध्यानपूर्वक अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे। (यह कार्य छाया प्रतिलिपि के माध्यम से भी किया जा सकता है।)
4. इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 से 20 मिनट का समय दिया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

5. प्रपत्र भरने के बाद छात्रों से प्रपत्र एकत्रित कर लिए जाएंगे।

6. मूल्यांकन शिक्षक सुविधानुसार कर सकते हैं अथवा कक्षा में छात्रों की सहायता से कराया जा सकता (छात्र एक दूसरे का प्रपत्र मूल्यांकित कर सकते हैं)

कार्य प्रपत्र

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. फादर बुल्के कौन तथा कहाँ के रहने वाले थे?

.....

2. वे भारत किस प्रकार आए?

.....

3. भारत में उनके शिक्षा स्थल

.....

4. फादर का व्यक्तित्व

.....

5. लोगों के लिए उनका व्यवहार

.....

6. लेखक के साथ फादर का व्यवहार

.....

7. हिंदी के लिए फादर का योगदान

.....

8. फादर के शोध प्रबंध का नाम

.....

9. फादर के रचनात्मक कार्य

.....

10. फादर की मृत्यु का कारण

.....

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही प्रविष्टियों के आधार पर

टिप्पणी :

- सभी प्रविष्टियाँ सही भरने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- जो छात्र ठीक से कार्य नहीं कर पाए उनका कार्य अन्य छात्रों की सहायता से पूर्ण कराया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-4 : कहानी लेखन

विषय : शरीर के अंगों पर आधारित मुहावरेदार कहानी।

उद्देश्य :

- कथा लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- भाषा में मुहावरों का प्रयोग सिखाना।
- विषय-वस्तु से परिचित कराना।
- मानवीय मूल्यों को समझाना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक शरीर के अंगों से सम्बन्धित बीस मुहावरे श्यामपट्ट पर लिखेंगे।
3. तत्पश्चात् विद्यार्थियों को कहा जायेगा कि वे लिखित मुहावरों को अपनी उत्तर पुस्तिकाओं में लिखें।
4. कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
5. उपयुक्त भाषा द्वारा मुहावरों का प्रयोग करते हुए कहानी का निर्माण करें।
6. अन्त में उस कथा को नैतिक मूल्यों से जोड़ें।
7. कहानी निर्माण के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा उसके पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
8. मूल्यांकन बिन्दु अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मुहावरे

आँख की किरकरी, आंख दिखाना, नाक में दम करना, कान पर जूँ न रेंगना, कान भरना, नाक काटना, नाक भौं सिकोड़ना, पैरों तले जमीन खिसकना, हाथ मलना, हाथ मारना, मुँह की खाना, मुँह में पानी भर आना, कंधे उचकाना, हथेली पर सरसों जमाना, अंगूठा दिखाना, उंगली टेढ़ी करना, सिर पर बिठाना, दाँत खट्टे करना, दाँतों तले उंगली दबाना, कान में रुई देना।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- मुहावरों का सटीक प्रयोग
- नैतिक मूल्य

प्रतिपुष्टि :

- उत्तम कार्य की प्रशंसा की जायेगी।
- कमज़ोर विद्यार्थियों को मुहावरों के सही प्रयोग की जानकारी दी जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : व्याकरण

विषय : विशेषण, विशेष्य तथा प्रविशेषण पर प्रपत्र तैयार करना।

उद्देश्य :

- भाषा के स्वरूप को समझाना।
- व्याकरण की समझ उत्पन्न कराना।
- शुद्ध भाषा के प्रयोग पर बल देना।
- विशेषण, विशेष्य तथा प्रविशेषण को समझना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक कार्य को समझाएंगे।
3. विद्यार्थी पाठ को पढ़कर विशेषण, विशेष्य तथा प्रविशेषण छाँटेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

4. मूल्यांकन के आधार बता दिए जाएंगे।

5. प्रपत्र तैयार कर अध्यापक को जमा करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सुनियोजित प्रपत्र
- संतोषप्रद
- प्रयासित

प्रतिपुष्टि :

- सुनियोजित एवं प्रभावशाली प्रपत्र बनाने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें।
- सही न करने वालों को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अन्य छात्रों की सहायता से कमजोर छात्रों का कार्य पूर्ण कराया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

एक कहानी यह भी

मन्नू भंडारी

प्रदत्त कार्य-1 : संवाद लेखन एवं वाचन।

विषय : 'तारीफ़ सुनने की चाह' एक-दूसरे की तारीफ करते हुए संवाद लेखन एवं वाचन।

उद्देश्य :

- सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख करना।
- आत्माभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- मौलिक अभिव्यक्ति का विकास कराना।
- तनाव मुक्ति के लिए प्रेरित करना।
- व्यवहार कुशलता का ज्ञान विकसित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत एवं समूहगत दोनों ही रूप में होगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे तथा एक दूसरे विद्यार्थी की सकारात्मक तारीफ़ करने के लिए प्रेरित करेंगे।
3. चार-चार विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँगे।
4. प्रत्येक समूह के प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे की तारीफ में एक दो वाक्य संवाद रूप में सोचकर लिखेंगे (व्यक्तिगत रूप से)
5. इस गतिविधि के लिए उन्हें अधिकतम पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
7. संवाद लेखन के उपरांत सभी समूह संवाद प्रस्तुतीकरण देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- अच्छे एवं सार्थक संवाद

www.FirstRanker.com

- प्रस्तुतीकरण (हावभाव, भाषा)
- समग्रप्रभाव

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे सार्थक संवाद प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना अवश्य की जाए।
- शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझाए कि जिस प्रकार वह अपनी तारीफ सुनकर खुश होते हैं वैसे ही दूसरों को भी अपनी तारीफ सुनकर खुशी का अनुभव होता है। अत: उचित समय पर सार्थक तारीफ़ करना अच्छी बात है। इससे मनुष्य की नकारात्मक सोच समाप्त होती है और वह तनावमुक्त होता है। साथ ही यह भी स्पष्ट करे कि किसी की झूठी तारीफ़ न करें इसका गलत असर भी पड़ सकता है।

प्रदत्त कार्य-2 : अनुभव सुनाना

विषय : किसी की शिकायत पर जब पिताजी ने मुझे डांटा।

उद्देश्य :

- वाचन कौशल का विकास करना।
- श्रवण कौशल का विकास करना।
- मौलिकता की ओर उन्मुख कराना।
- आत्माभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ावा देना।
- स्मरण शक्ति का विकास कराना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय से परिचित कराएंगे। किसी पड़ोसी, मित्र या अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा आपकी शिकायत करने पर जब आपके पिताजी ने अथवा माता जी ने आपको डांटा हो या डांट के डर से जो अनुभव आपने किया हो वह सुनाने की प्रेरणा दें तथा इसी प्रकार का कोई अनुभव कक्षा में उदाहरणार्थ सुना दें ताकि विद्यार्थी सहजता से अनुभव सुना सकें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

3. विद्यार्थियों को सोचने के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए। उसके बाद एक एक विद्यार्थी अपने अनुभव सुनाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी को लगभग 1 मिनट का समय दिया जाए।

4. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- निस्संकोच / बेझिझक प्रस्तुतीकरण
- हावभाव / रसानुभूति
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- सत्य एवं बेझिझक अनुभव सुनाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जिन विद्यार्थियों को इस प्रकार का अनुभव न हो तो उन्हें परिवार के किसी अन्य सदस्य या मित्र आदि के अनुभव सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-3 : वाद-विवाद

विषय : रंग रूप व्यक्तित्व विकास में बाधक।

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- तार्किकता का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- श्रवण कौशल का विकास करना।
- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।

www.FirstRanker.com

2. अध्यापक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषय की जानकारी देंगे।
3. कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा।
4. एक समूह पक्ष में चर्चा करके सबके विचार लिखेगा तथा दूसरा समूह विपक्ष में।
5. साथ ही दोनों समूह अपने विपक्षी समूह से प्रश्न पूछने के लिए अधिकतम पांच प्रश्न भी तैयार करेंगे (प्रश्न संख्या कम भी हो सकती है)
6. इस कार्य के लिए 10 से 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. समूह चर्चा के समय अध्यापक कक्षा में घूमकर यह देखेंगे कि सभी विद्यार्थी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
8. मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
9. समूह चर्चा के बाद प्रस्तुतीकरण के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा जो भी समूह प्रस्तुतीकरण देगा उनको विपक्षी समूह विषय पर प्रश्न कर सकता है तथा उन प्रश्नों के उत्तर समूह के अन्य छात्र (जिन्होंने प्रस्तुतीकरण न दिया हो) देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- तार्किकता
- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, भाषा)

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन के आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचार प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- शिक्षक सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी होने के अवसर प्रदान करे (जैसे कुछ छात्र प्रश्न करें अन्य उत्तर दें)
- शिक्षक विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करें।

प्रदत्त कार्य-4 : नारे लिखना

विषय : वन संरक्षण, विभिन्न व्यसनों (तम्बाकू, सिगरेट इत्यादि) का निषेध, पॉलीथीन निषेध, साक्षरता अभियान विषयों पर रैली के लिए।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान में वृद्धि कराना।

www.FirstRanker.com

- वाचन कौशल का विकास करना।
- समाज सेवा के प्रति उन्मुख कराना।
- जागरुकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- रैलियों के महत्व को समझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विभिन्न अवसरों पर निकाली जाने वाली रैलियों के विषय में जानकारी देंगे तथा उनके महत्व पर चर्चा करेंगे।
3. कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा। प्रत्येक समूह को उपर्युक्त एक एक विषय पर नारे लिखने के लिए दिए जाएंगे।
4. नारे लिखने के लिए चार्ट पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है।
5. इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह में घूम-घूमकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे।
7. लेखन कार्य पूर्ण होने के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए एक एक समूह कक्षा में सामने आकर रैली के रूप में खड़े होकर नारे बोलेंगे तथा दर्शाएंगे।
8. इस गतिविधि के लिए प्रत्येक समूह को पाँच-पाँच मिनट का समय दिया जा सकता है।
9. इस गतिविधि की सूचना शिक्षक एक दिन पूर्व ही दे देंगे ताकि छात्र संबंधित सामग्री चार्ट पेपर, स्केच पेन आदि ला सकें तथा मानसिक रूप से तैयारी कर सकें।
10. प्रत्येक छात्र का प्रतिभागी होना आवश्यक है।
11. मूल्यांकन के आधार अध्यापक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- लिखावट
- प्रस्तुतीकरण (भाषा, जोश, हावभाव)

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी रचनाओं के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अध्यापक चाहे तो यह रैलियां विद्यालय के मैदान में भी आयोजित कराई जा सकती हैं।
- सुंदर नारों को विद्यालय की दीवारों पर, प्रदर्शन पट्ट पर लगवाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-5 : संस्मरण लेखन

विषय : मेरे बचपन का पंसदीदा खेल जिसे मैं आज भी खेलना चाहूँगा / चाहूँगी।

उद्देश्य :

- लेखन कौशल का विकास करना।
- मौलिक चिंतन के लिए प्रेरित करना।
- आत्माभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- सृजनात्मकता की क्षमता का विकास करना।
- स्मरण शक्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। बचपन में सभी छोटे-छोटे खेल रुचिपूर्वक खेलते हैं कुछ खेल हमें हमेशा याद रहते हैं। बच्चों के खेल जैसे - डॉ. बनकर खेलना, घर-घर खेलना, अध्यापक बनकर खेलना, स्टापू खेलना, लट्टू चलाना, गिट्टे खेलना, रस्सी कूदना, आंख मिचौली इत्यादि। शिक्षक बचपन में खेले जाने वाले किसी खेल को स्मरण करके अनुभव के साथ खेल की प्रक्रिया लिखने को कहेंगे।
3. लिखने के लिए छात्रों को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
5. संस्मरण लेखन के उपरांत अध्यापक छात्रों से सभी संस्मरण संग्रहीत कर लेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- मौलिकता

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- भाषायी दक्षता
- लिखावट

टिप्पणी :

- शिक्षक चाहें तो मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं सुनिश्चित कर सकते हैं।
- अच्छे एवं मौलिक लेखन के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अच्छी रचनाओं को कक्षा में अवश्य पढ़ाया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रदत्त कार्य–1 : गरिमामयी नारी

विषय : पौराणिक कथाओं का संकलन (वीरांगना / गरिमाययी नारी)

उद्देश्य :

- विचार संकलन मनोप्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- तथ्यों की पुष्टि करने की जानकारी देना।
- पौराणिक कथाओं के प्रति रुचि जागृत करना।
- नैट पर सूचना एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- लेखन कौशल एवं वाचन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को चार समूहों में विभक्त करेगा।
2. उन्हें किसी एक वीरांगना एवं गरिमामयी नारी की कहानी सुनाई जायेगी।
3. मूल्यांकन के आधार श्याम पट्ट पर लिखे जाएँगे।
4. प्रत्येक समूह को अलग–अलग प्रसंग दिए जाएँगे जैसे लक्ष्मीबाई इत्यादि।
5. इस तरह चार कथाओं का संकलन करेंगे और सभी समूह कथा पढ़कर सुनाएँगे।
6. एक समूह का मूल्यांकन दूसरे से, दूसरे का तीसरे से, तीसरे का चौथे से तथा चौथे का पहले से कराया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- तथ्यों की जानकारी
- प्रस्तुतीकरण
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतन्त्र रूप से भिन्न मूल्यांकन आधार बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम शैली में लिखित कथा को कक्षा में भित्ति पर प्रदर्शित किया जाए।
- जो छात्र इस गतिविधि में भाग नहीं ले पा रहे हैं उन्हें प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- क्रियाशील विद्यार्थियों की सराहना की जाएगी।

प्रदत्त कार्य-2 : वाद विवाद

विषय : क्या आधुनिक शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण में सक्षम है?

उद्देश्य :

- वाचन कौशल का विकास करना।
- आज की शिक्षा प्रणाली से परिचित कराना।
- इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का संक्षिप्त परिचय देना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- वाद विवाद के नियमों को समझाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर को स्पष्ट करेगा।
2. स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है ऐसा प्रचार गांव गांव में होना चाहिए यह छात्रों को बताया जायेगा।
3. विद्यार्थियों को दो समूहों में विभक्त किया जायेगा व दो छात्रों को निर्णायक बनाया जायेगा।
4. समूह चर्चा एवं तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. एक समूह पक्ष में और दूसरा विपक्ष में बोलेगा।
6. एक समूह से कम से कम 3 छात्र अवश्य बोलेंगे।
7. इस बीच अध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेंगे।
8. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु

www.FirstRanker.com

- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त शिक्षक अपनी इच्छानुसार भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे वक्ताओं को शाबासी देकर उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।
- जो छात्र उचित ढंग से नहीं बोल पाए उन्हें उत्साहित किया जायेगा।
- अच्छे वक्ताओं को विद्यालय के मंच पर बोलने को प्रेरित किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-3 : लेखन कार्य

विषय : स्वतन्त्रता पूर्व की प्रसिद्ध महिलाएँ एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति में उनका योगदान। (सरोजिनी नायडू, एनी बेसन्ट तथा कस्तूरबा)

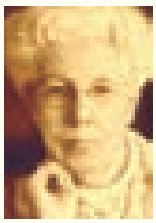

उद्देश्य :

- स्वतन्त्रता पूर्व देशवासियों के दृष्टिकोण को समझाना।
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- देश को स्वाधीन कराने में नारियों के योगदान की चर्चा करना।
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. उपरोक्त उद्देश्यों के माध्यम से शिक्षक उन प्रसिद्ध महिलाओं की चर्चा करेगा जिन्होंने देश के लिए अपना तन मन दिया।
2. छात्रों को व्यक्तिगत रूप से लिखित कार्य करने के लिए कहा जायेगा।
3. वे कम से कम दस महिलाओं का उल्लेख करेंगे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान दिया।
4. तत्पश्चात् विद्यार्थियों को अपनी विषय वस्तु पढ़ने के लिए कहा जायेगा।
5. इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम घूम कर निरीक्षण करेंगे।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायें।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सूची संकलन
- विषय की जानकारी
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं बनाए गए आधार बिन्दुओं द्वारा मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सही सूची बनाने वाले छात्रों को उत्साहित किया जायेगा।
- जो छात्र असमर्थ रहें उन्हें अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी जायेगी।
- उन महिलाओं की सूची कक्षा प्रदर्शन पट्ट पर लगाई जाए।
- अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ प्रसिद्ध महिलाओं की सूची दी जा रही है –
  - सरोजिनी नायडू
  - सुभद्रा कुमारी चौहान
  - लक्ष्मी बाई
  - अरुणा आसिफ अली
  - दुर्गा भाभी

प्रदत्त कार्य-4 : पोस्टर बनाना

विषय : महिला सशक्तिकरण।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि।
- देश-विदेश की उन्नति में महिलाओं के योगदान की जानकारी देना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- कुछ विश्व प्रसिद्ध महिलाओं की विशेषताओं का वर्णन करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. शिक्षक प्रसिद्ध महिलाओं की चर्चा करेंगे जिन्होंने देश की प्रगति में अपना योगदान दिया।
2. छात्रों को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. प्रत्येक समूह कम से कम पाँच महिलाओं का उल्लेख करते हुए पोस्टर बनाएगा।
4. कक्षा में इन पोस्टरों का प्रदर्शन किया जाएगा।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अपने स्वतन्त्र दृष्टिकोण द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।
- किसी एक समाज सुधारक पर परियोजना कार्य।

प्रदत्त कार्य-5 : परिचर्चा एवं लेखन।

विषय : राजा राम मोहन राय द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्य।

उद्देश्य :

- प्राचीन रूढ़ियों का खंडन करने की सीख देना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- तर्क शक्ति को विकसित करना।
- अच्छा वक्ता तथा श्रोता बनने के लिए प्रेरित करना।
- अन्य समाज सुधारकों के विषय में जानकारी देना।

निर्धारित समय : एक कालाशं

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम कक्षा को चार समूहों में बांट दिया जएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. चारों समूहों को क्रमानुसार चार तत्कालीन ज्वलंत समस्याएं दी जाएंगी जिनका प्रतिकार राजा राम मोहन राय ने किया था।

3. अध्यापक निम्नलिखित चारों समस्याएं श्याम पट पर लिख देगा।

   - सती प्रथा
   - बाल विवाह
   - विधवा विवाह
   - नारी शिक्षा

4. छात्र उपरोक्त समस्याएँ अपनी उत्तर पुस्तिका पर लिखेंगे और परिचर्चा करने के पश्चात् अपने विचार केवल पचास शब्दों में व्यक्त करेंगे।

5. इस गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह का निरीक्षण करेंगे।

6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट् पर लिखे जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय की जानकारी
- तार्किक कुशलता
- सम्पूर्ण प्रभाव

टिप्पणी :

- इसके अलावा शिक्षक यदि चाहे तो स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- मौलिकता को ध्यान में रखते हुए जिन छात्रों ने अपने विचारों का प्रस्तुतीकरण किया है उनकी सराहना की जाएगी।
- जो छात्र विषय को नहीं समझ पाए उन छात्रों को पुनः समझाया जाएगा।
- अध्यापक उपर्युक्त विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

नौबतखाने में इबादत

यतीन्द्र मिश्र

प्रदत्त कार्य-1 : वृत्त चित्र निर्माण।

विषय : उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि कराना।
- बिस्मिल्ला खाँ के विषय में और अधिक जानकारी देना।
- रचनात्मकता का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
2. अध्यापक विद्यार्थियों को बिस्मिल्ला खां के जीवन से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित करने को कहेगा। एकत्रित सूचनाओं एवं् चित्रों के आधार पर वृत्त चित्र तैयार किया जाएगा।
3. यह कार्य दो या तीन दिन पूर्व दिया जाएगा।
4. निर्धारित समय पर सभी विद्यार्थी एकत्रित सूचनाएँ कक्षा में 1-1 मिनट में प्रस्तुत करेंगे।
5. अध्यापक मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय सामग्री / संकलित सूचनाएँ
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी क्षमता
- आत्म विश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- जिन विद्यार्थियों ने बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के विषय में प्रयासपूर्वक सूचनाएँ, चित्र आदि एकत्रित किए हैं, उनकी सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : प्रपत्र

विषय : प्रसिद्ध वाद्य यंत्रों के प्रसिद्ध वादक कलाकारों पर प्रपत्र।

उद्देश्य :

- वाद्य संगीत के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- वाद्य संगीत कलाकारों के जीवन से अवगत कराना।
- संगीत के प्रभाव को मन से ग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का परिष्कार करना।
- सामान्य ज्ञान को विकसित करना।
- ध्वनि विशेष के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा अथवा कक्षा की मेज पर तबले की तरह थाप देते हुए वाद्य संगीत के विषय में विद्यार्थियों को समझा सकता है।
2. अगले चरण में अध्यापक व्यक्तिगत स्तर पर प्रक्रिया शुरू कराते हुए निम्नलिखित प्रपत्र वाद्य संगीत के कलाकारों के विषय में देगा।
3. अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी को पहले ही बता देगा कि वह अलग अलग कलाकारों के विषय में जानकारी इकट्ठी करें।
4. जानकारी के लिए इंटरनेट पर देखने का सुझाव भी दिया जा सकता है।
5. कार्य प्रपत्र की जानकारी प्राप्त करने के लिए दो दिन का समय दिया जाए।
6. अध्यापक कार्य प्रपत्र की छाया प्रति विद्यार्थियों में बाँट दें।
7. निर्धारित कालांश में सभी विद्यार्थियों को अपना कार्य प्रपत्र कक्षा में सुनाना होगा।
8. मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कार्य प्रपत्र

1.	वाद्य यंत्र	.....
2.	कलाकार का नाम	.....
3.	कलाकार का जन्म स्थान	.....
4.	कलाकार की संगीत की शिक्षा	.....
5.	उस वाद्य यंत्र के प्रति आकर्षण का कारण	.....
6.	संगीत के घराने से संबंधित	.....
7.	किस 'सम्मान' से सम्मानित?	.....
8.	किन समारोहों में भाग लिया?	.....
9.	क्या विदेशों में प्रदर्शन किया और कहाँ?	.....
10.	कलाकार पर छपी है किसी पुस्तक का नाम	.....

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही जानकारी
- प्रस्तुतिकरण

प्रतिपुष्टि :

- सही और सटीक जानकारी लाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अपूर्ण जानकारी लाने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जाए और प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : भेंटवार्ता / साक्षात्कार

विषय : अपने प्रिय कलाकार से एक मुलाकात।

उद्देश्य :

- साक्षात्कार विधा से परिचित कराना।
- कल्पनाशीलता की उर्वरता को विकसित करना।
- आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना।
- श्रवण, वाचन, लेखन एवं पठन कौशलों को समृद्ध कराना।
- मौलिक चिंतन एवं अनुसंधानपरक दृष्टिकोण विकसित करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को साक्षात्कार या भेंटवार्ता विधा से परिचित कराएगा।
2. दो दो विद्यार्थियों का समूह बनाकर एक को कलाकार व एक को भेंटकर्ता बनाएगा।
3. इस बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
4. सभी विद्यार्थी अपने अपने समूह में प्रस्तुति देंगे।
5. एक समूह को दो-दो मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- कल्पनाशीलता
- पूछने का ढंग
- प्रश्न उत्तर की भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी तरह से कार्य सम्पन्न करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अध्यापक स्वयं सहायता दे सकते हैं।
- अध्यापक विद्यार्थियों को लता मंगेशकर, अलका याज्ञनिक, अनु मलिक, अमजद अली खाँ, हरि प्रसाद चौरसिया, जाकिर हुसैन इत्यादि कलाकारों का अभिनय या इंटरव्यू लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-4 : सूची तैयार करना।

विषय : 'भारत रत्न' से विभूषित व्यक्तियों की सूची।

उद्देश्य :

- 'भारत रत्न' भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार, उसका महत्व समझाना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- ऐसे महान भारतीयों के बारे में जानना जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- जिज्ञासा व खोज की प्रवृत्ति उत्पन्न कराना।
- लेखन एवं वाचन कौशल में प्रवीणता लाना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में भारत रत्न का महत्व बताते हुए कुछ भारत रत्न प्राप्त व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करेगा।
2. दो दिन पूर्व विद्यार्थियों को इंटरनेट के माध्यम से या पुस्तकालय से भारत रत्न प्राप्त व्यक्तियों के नाम जानने के लिए कहेगा।
3. कक्षा में अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से 10–10 ऐसे व्यक्तियों के नाम लिखने के लिए कहेगा जिन्हें भारत रत्न प्राप्त हो चुका है।

भारत रत्न से विभूषित भारतीयों की सूची (अध्यापक के लिए)

- सी. राज गोपालाचार्य
- सी वी रमन
- भगवान दास
- गोविंद वल्लभ पंत
- श्रीमती इंदिरा गांधी
- पुरुषोत्तम दास टंडन
- डा. जाकिर हुसैन
- विनोबा भावे
- बिस्मिल्ला खाँ
- भीम सेन जोशी
- लता मंगेशकर
- चिदंबरम सुब्रह्मणयम इत्यादि
- वि.वि. गिरि
- डा. राधाकृष्णन
- विश्वैश्रैया
- पं जवाहर लाल नेहरू
- श्री विधान चंद्र रॉय
- लाल बहादुर शास्त्री
- मदर टेरेसा
- पं. रवि शंकर
- अमर्त्य सेन
- सत्यजीत रॉय
- सुब्बु लक्ष्मी

कुल 40 भारतीयों व 1 विदेशी नेल्सन मंडेला को यह सम्मान अब तक प्राप्त हो चुका है तथा अब्दुल गफ्फार खान जो विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए थे उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

4. लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
5. फिर कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को सुना जाएगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
7. सम्मान किसे और क्यों दिया गया अवश्य लिखा जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही नाम
- क्षेत्र
- प्रभावशाली वाचन

प्रतिपुष्टि :

- सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य पूरा न करने वालों को दिशा निर्देश देकर जानकारी एकत्रित कराई जाए।

प्रदत्त कार्य 5 : वाक्यों का संकलन।

विषय : पाठ में आए मिश्र वाक्य।

उद्देश्य :

- वाक्य रचना में कुशलता प्रदान करना।
- वाक्यों के प्रकारों से परिचित कराना।
- भाषायी दक्षता में वृद्धि करना।
- विश्लेषण क्षमता में प्रखरता लाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में वाक्य के भेद अच्छी तरह समझा देंगे।
2. यह गतिविधि प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से कक्षा में करने के लिए दी जाएगी।
3. छात्र पाठ में आए मिश्र वाक्य छाँटकर लिखेंगे और फिर उनके उपवाक्यों के भेद भी लिखेंगे।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही वाक्यों के आधार पर

प्रतिपुष्टि :

- कमजोर छात्रों की सहायता की जाएगी।
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के कार्य को सराहा जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

संस्कृति

भदंत आनंद कौसल्यायन

प्रदत्त कार्य-1 : कक्षा का बोर्ड तैयार करना।

विषय : 'विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की पहचान'

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति की विशेषताओं की जानकारी देना।
- देश-प्रेम, एकता, सद्भावना जैसे गुणों का विकास करना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- वाचन कौशल एवं लेखन कौशल को समृद्ध करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में विषय पर चर्चा करेंगे।
2. यह सामूहिक कार्य होगा। कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. प्रत्येक समूह भारत की विविधता - जलवायु, खान-पान, भाषा, वेशभूषा, लोकगीत आदि विषयों पर सचित्र जानकारी एकत्र करेगा।
4. निर्धारित दिन चारों समूह अपना प्रस्तुतीकरण देंगे।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर भी मूल्यांकन पर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- जिस समूह ने विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण सही ढंग से किया है उसकी प्रशंसा की जाएगी।

प्रदत्त कार्य-2 : उन आविष्कार तथा आविष्कर्ता की सूची तैयार कीजिए जो आपकी दृष्टि में महत्वपूर्ण हैं।

उद्देश्य :

- वैज्ञानिक आविष्कार तथा आविष्कर्ता की जानकारी देना।
- विज्ञान का संस्कृति और सभ्यता से संबंध बताना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ वैज्ञानिक अविष्कार और उनके अविष्कर्ताओं की जानकारी देगा।
2. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
3. इस गतिविधि की सूचना दो दिन पूर्व दी जाएगी।
4. छात्र कक्षा में इसकी प्रस्तुति करेंगे।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- अधिकतम जानकारी
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त शिक्षक यदि चाहे तो अपने ढंग से अन्य मूल्यांकन बिंदुओं द्वारा मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- जिस छात्र ने अच्छा कार्य किया है उसकी प्रशंसा की जाएगी।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-3 : सूचना सकंलन

विषय : पर्यटन उद्योग (भारतवर्ष के रमणीय स्थलों का सूचना संकलन)

उद्देश्य :

- किसी विशेष स्थान की सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी देना।
- पर्यटन और मनोरंजन का सहसम्बन्ध बताना।
- पर्यटन का स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव समझना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम शिक्षक कुछ स्थलों के नाम स्वयं बताएगा।
2. तत्पश्चात् कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. चारों समूहों को भारत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण राज्यों में स्थित प्रसिद्ध स्थलों की सूची बनाने के लिए कहा जाएगा।
4. छात्र इसके लिए मानचित्र और पत्रिकाओं की सहायता ले सकते हैं।
5. चारों समूह क्रमानुसार प्रस्तुतीकरण देंगे।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु की जानकारी
- अधिकतम स्थल
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे छात्रों के कार्य को कक्षा में प्रदर्शित किया जायेगा तथा उन्हें सराहा जायेगा। (प्रदर्शन पट पर लगाया जा सकता है।)
- जो छात्र कार्य नहीं कर पाए उन्हें प्रोत्साहन दिया जायेगा जिससे वे कार्य कर सकें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-4 : एक संवाद

विषय : आधुनिक एवं प्राचीन संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।

उद्देश्य :

- अच्छे आदर्शों को ग्रहण करने की प्रेरणा देना।
- प्राचीन संस्कृति को समझना।
- पाश्चात्य संस्कृति की अन्धाधुन्ध दौड़ के दुष्परिणामों से अवगत कराना।
- वाचन कौशल एवं लेखन कौशल को समृद्ध करना।
- आधुनिक संस्कृति को और बेहतर रूप देने के लिए प्रेरित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा को दो समूहों में विभक्त करेगा।
2. दोनों समूह परिचर्चा करेंगे और प्रत्येक समूह में से दो या तीन छात्र आत्म कथन के रूप में पांच-पांच संवाद पक्ष और विपक्ष में बोलेंगे।
3. शिक्षक द्वारा उदाहरण दिया जायेगा।
4. इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
6. बच्चों को स्वयं तर्क-वितर्क करने दें। प्राचीन और आधुनिक के सामंजस्य की बात बच्चों को बताएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- पक्ष एवं् विपक्ष के संवाद
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार इस विषय को अन्य ढंग से भी कार्य करवा के अंक दे सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे वक्ता का उत्साह वर्धन किया जायेगा।
- जो छात्र ठीक नहीं बोल पाया उसका मार्ग दर्शन किया जायेगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : पाठ में आए सामासिक शब्दों का चयन, विग्रह तथा भेद लिखना।

उद्देश्य :

- समास की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- चयन क्षमता का विकास करना।
- विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता का विकास करना।
- पठन-कौशल तथा लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक समास की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।
2. यह कार्य व्यक्तिगत होगा।
3. छात्र पाठ में आए सामासिक शब्दों की सूची बनाकर उनका विग्रह करते हुए समास का भेद भी लिखेगे।
4. इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखें जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही शब्दों के आधार पर

प्रतिपुष्टि :

- कक्षा में ऐसे छात्रों का मार्ग दर्शन किया जाएगा जो विषय को समझ नहीं पा रहे हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

पद
सूरदास

प्रदत्त कार्य-1 : किस्सा संकलन

विषय : बीरबल, तेनालीरामा आदि किसी मनपसंद चरित्र के कुछ किस्सों का संकलन।

उद्देश्य :

- बीरबल, तेनालीरामा के विषय में जानकारी देना।
- खोज परक शैली का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक बीरबल, तेनालीरामा आदि के विषय में छात्रों को जानकारी देंगे।
3. छात्रों को इस कार्य के लिए 2-3 दिन का समय दिया जाएगा।
4. छात्र किस्सों का संकलन सचित्र करेंगे/छात्र स्वयं भी चित्रकथा द्वारा प्रसंग प्रस्तुत कर सकते है।
5. निर्धारित दिन छात्र कक्षा में प्रस्तुतीकरण करेंगे।
6. अध्यापक देखेंगे कि इस प्रक्रिया में छात्र रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं अथवा नहीं।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- भाषायी दक्षता
- समग्र प्रभाव

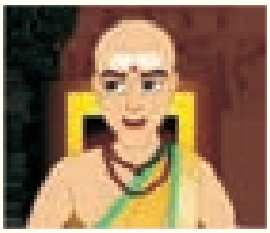

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर अंक विभाजन कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- उत्तम प्रस्तुति की कक्षा में प्रशंसा की जाए।
- अध्यापक ऐसे छात्रों का मार्गदर्शन करें, जिन्हें कठिनाई का अनुभव हो रहा हो।
- समय से पूर्व और लघु एवं सार्थक संदेश लिखने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : संकलन एवं गायन।

विषय : सूरदास के पद।

उद्देश्य :

- गायन / संगीतात्मकता के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- शब्दों के उच्चारण का ज्ञान कराना।
- ब्रज भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- खोज परक शैली का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. काव्य रचना पढ़ाने से पूर्व ही अध्यापक छात्रों से सूरदास के पद संकलन की प्रेरणा देगा तथा पदों को पढ़ाते समय गायन शैली समझा देगा।
3. पढ़ाने के पश्चात् यह गतिविधि होगी।
4. दो विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएंगे।
5. प्रत्येक समूह के छात्रों को गायन के लिए 1 मिनट का समय दिया जाएगा। दोनों छात्र मिलकर भी पद गा सकते हैं।
6. शिक्षक चाहे तो पद पूरा अथवा चार पंक्तियाँ भी गाने के लिए कह सकते हैं
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
8. इस गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सस्वर गायन
- उच्चारण (लहजा)
- भावाभिव्यक्ति

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं मूल्यांकन के आधार निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा सस्वर गायन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- जो विद्यार्थी भाषा का उच्चारण ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं उनको सही उच्चारण का ज्ञान कराएं।

प्रदत्त कार्य-3 : व्याकरण

विषय : सूरदास के पदों में प्रयुक्त अलंकार छाँटिए।

उद्देश्य :

- अलंकारों की पहचान कराना।
- अलंकारों के प्रयोग में प्रवीणता लाना।
- लेखन क्षमता का विकास कराना।
- खोजपरक शैली का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को अलंकार की पूर्ण जानकारी देंगे।
3. छात्र पदों में प्रयुक्त अलंकार छाँटेंगे।
4. छात्र अलंकारो के एक-एक उदाहरण और लिखेगे।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही उदाहरण के आधार पर

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर अंक विभाजन कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- जिन विद्यार्थियों ने सही अलंकार छाँटे हैं, उनकी प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : कवि सम्मेलन

विषय : नवरस

उद्देश्य :

- रसों का ज्ञान करवाना।
- साहित्य में वर्णित भिन्न भिन्न प्रकार की भावनाओं को समझना।
- कविता की सौन्दर्यानुभूति कराना।
- विद्यार्थी की श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का विकास करना।
- विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक पूरी कक्षा को नौ समूहों में विभक्त कर देगा तथा नौ रसों के विषय में सोदाहरण समझाएगा।
2. इस आयोजन की पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी अत: एक सप्ताह पूर्व इसकी जानकारी दे दी जाए।
3. अध्यापक विद्यार्थियों को बता दें कि समूह में कुछ विद्यार्थी शृंगार, हास्य, वीर, वात्सल्य, रौद्र, करूण, भयानक, वीभत्स, शांत इत्यादि रसों की कविताओं का संकलन करेंगे।
4. समूह का एक विद्यार्थी सबके सामने अपनी कविता का सस्वर वाचन करेगा।
5. अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि सभी रसों का प्रतिनिधित्व अवश्य हो। अत: अध्यापक प्रत्येक समूह को स्वयं रस विशेष वितरित कर दें। कविताएं बहुत लंबी न हों।
6. अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।
7. कविताएं आधुनिक या प्राचीन किन्हीं भी कवियों की हो सकती है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- विषय वस्तु
- उच्चारण (भाषा)

www.FirstRanker.com

- प्रवाह (लय, सस्वर वाचन)
- हाव भाव

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- कवि सम्मेलन में अपना अमिट प्रभाव छोड़ने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- संकोची व शर्मीले विद्यार्थियों को आगे आकर बोलने की प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : मंचन

विषय : श्रीकृष्ण की किसी लीला का मंचन।

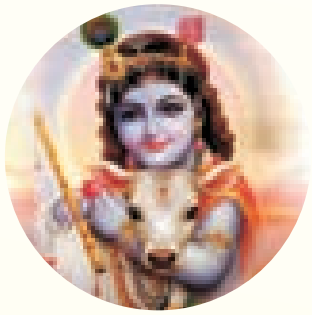

उद्देश्य :

- श्रीकृष्ण के जीवन से परिचित कराना।
- अभिनय कला में अभिरुचि उत्पन्न करना।
- मंचन के लिए आवश्यक उपकरणों की महत्ता समझाना।
- काव्य की सौंदर्यानुभूति कराना।
- मौलिक गुणों का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक विद्यार्थियों को समझा दें कि श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं में से किसी पर भी मंचन किया जा सकता है। यथा – बाललीला, कालिया नाग लीला, बकासुर वध, गोवर्धन पर्वत, रास लीला, कंस वध, माखन चोरी, द्रोपदी की सहायता, सुदामा मिलन, अर्जुन की मैत्री इत्यादि कोई भी प्रसंग हो सकता है।
2. यह प्रक्रिया सामूहिक होगी।
3. सभी समूह अलग अलग प्रसंगों पर लीला करेंगे।
4. इसकी तैयारी की सूचना एक सप्ताह पूर्व दे दी जाए जिससे विद्यार्थियों को तैयारी का समय मिल जाए।
5. अध्यापक कक्षा के आकार के अनुसार समूह बना सकता है।
6. मूल्यांकन आधार प्रक्रिया के प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लीला का चयन
- अभिनय या प्रस्तुति
- संवादों का उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार अन्य मूल्यांकन आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अध्यापक अच्छी प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों की सराहना अवश्य करें।
- अच्छी प्रस्तुति में ज्यादा सफल न होने वाले विद्यार्थियों को उनकी भूल को समझाते हुए बेहतर करने के लिए प्रेरित करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

राम लक्ष्मण - परशुराम संवाद

तुलसीदास

प्रदत्त कार्य-1 : संवाद लेखन एवं वाचन।

उद्देश्य :

- लेखन कौशल का विकास करना।
- कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह सामूहिक कार्य है।
2. सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को विषय से परिचित कराएँगे।
3. कक्षा को आठ समूहों में विभाजित करके प्रत्येक समूह को नीचे दिए गए विषयों में से एक एक विषय संवाद लेखन के लिए दिया जाएगा।
   - विषय माता-पिता तथा बालक के बीच संवाद
   - गुरु शिष्य के मध्य संवाद
   - दो या अधिक मित्रों के बीच संवाद
   - बहन भाईयों के बीच संवाद
   - दुकानदार से संवाद
   - सहभागी से संवाद
   - डॉक्टर के साथ संवाद
   - नौकर मालिक के बीच संवाद

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

4. संवाद लिखकर तैयार करने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए। संवाद लगभग दस वाक्यों के होने चाहिए।
5. जब सभी समूह संवाद तैयार करेंगे तो शिक्षक सभी समूहों के बीच जाकर उनका मार्गदर्शन करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।
7. संवाद लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण करेगा। प्रत्येक समूह को एक मिनट का समय प्रस्तुतीकरण के लिए दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- भाषायी दक्षता
- सटीकता
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे एवं सटीक संवाद के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे लेखन एवं प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : सस्वर गायन

विषय : चौपाईयों

उद्देश्य :

- गायन कौशल का विकास करना।
- भारतीय संस्कृति में चौपाई का महत्व समझाना।
- कंठस्थ करके सुनाने की प्रवृत्ति को सकारात्मक गुण बनाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत रूप से यह कार्य कराया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. सर्वप्रथम अध्यापक चौपाई का महत्व बताते हुए एक चौपाई गाकर सुनाएगा। चौपाई गायन के विभिन्न तरीके बताए जा सकते हैं।
3. यह कार्य गतिविधि से दो दिन पूर्व किया जाए ताकि विद्यार्थी अपनी रुचि की चौपाई को कण्ठस्थ कर सकें।
4. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।
5. गतिविधि के समय प्रत्येक छात्र एक एक चौपाई गाकर सुनाएगा इसके लिए प्रत्येक छात्र को आधा से एक मिनट का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रवाहमयता
- उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- जो छात्र प्रभावशाली प्रवाह के साथ चौपाई गाएँ उनको प्रोत्साहित किया जाए।
- छात्रों का मनोबल बढ़ाने के लिए शिक्षक प्रार्थना सभा में भी अच्छे गायक छात्रों से चौपाई सुनवा सकते हैं।
- जो छात्र अच्छा प्रस्तुतीकरण न दे पाएँ अन्य छात्रों की सहायता से उनमें सुधार किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : वाद विवाद

विषय : 'राम आज के युग में प्रांसगिक हैं'

उद्देश्य :

- तर्कशक्ति एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- मंच प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा।
- मंडन एवं खंडन का अभ्यास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. वाद-विवाद कला से अवगत कराया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. मूल्यांकन का आधार स्पष्ट करना।
3. सम्पूर्ण कक्षा को दो वर्गों में विभाजित किया जायेगा एक वर्ग पक्ष तथा दूसरा विपक्ष में बोलेगा।
4. विषय तैयार करने के लिए 10–15 मिनट का समय दिया जायेगा।
5. प्रत्येक समूह में प्रतिनिधि वक्ता अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
6. एक प्रस्तुति के समय अन्य विद्यार्थी विचारों को ध्यान से सुनेंगे और प्रतियोगिता के पश्चात् परिचर्चा करेंगे
7. कुछ निर्वाचित छात्रों को मूल्यांकन करने के लिए कहा जायेगा और वे अध्यापक का सहयोग करेंगे।
8. इस पूरी गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- तार्किक क्षमता
- भाषायी दक्षता
- अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण
- दृष्टान्तों द्वारा तर्क की पुष्टि

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी बिन्दुओं पर न बोल पाने वाले छात्रों को उत्साहित करना एवं सुझाव देना।
- उत्तम छात्रों की सराहना करना।
- कुछ अच्छी पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखना।

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : 'क्रोध पर अंकुश'

उद्देश्य :

- भावात्मक आवेगों को नियंत्रित करना सिखाना।
- क्रोध के नकारात्मक स्वरूप के दुष्परिणामों को समझाना।
- सहनशील बनने की प्रेरणा देना।
- श्रवण क्षमता का विकास करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- क्रोध को सकारात्मक स्वरूप देना।
- मौलिक चिंतन एवं विश्लेषण प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में बताएगा कि क्रोध एक ऐसा आवेग है जिसे नियंत्रित न किया जाए तो बहुत नुकसान हो सकते हैं अत: इस पर अंकुश के लिए कक्षा में परिचर्चा कराई जाएगी।
2. परिचर्चा के लिए कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
   - पहला समूह – क्रोध क्या है और कब आता है।
   - दूसरा समूह – क्रोध के दुष्परिणाम।
   - तीसरा समूह – क्रोध को नियंत्रण करने के उपाय।
   - चौथा समूह – क्रोध का सकारात्मक स्वरूप।
3. अध्यापक विद्यार्थियों को सोचने के लिए 10 मिनट का समय देगा और सभी समूहों का मार्ग दर्शन भी करेगा।
4. प्रत्येक समूह अपने अपने प्रकरण पर परिचर्चा करेंगे।
5. अध्यापक सभी की परिचर्चा ध्यान से सुनेगा
6. 15 मिनट परिचर्चा होगी।
7. अंत में अध्यापक प्रत्येक समूह के मुख्य विचार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख देगा।
8. मूल्यांकन आधार और अंक पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबंधी तर्क
- उचित उदाहरणों का प्रयोग
- प्रभावशाली अभिव्यक्ति

प्रतिपुष्टि :

- ठोस प्रमाण द्वारा अपनी बात पर स्पष्ट विचार करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अपना मत स्पष्ट न रखने वाले विद्यार्थियों को विषय समझने में सहायता दी जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों का मंचन।

उद्देश्य :

- श्री राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों से परिचित कराना।
- श्रीराम के चरित्र की महानता के प्रति आदर व श्रद्धा उत्पन्न करना।
- अभिनय कला को निखारना।
- विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- उनकी वाचन एवं श्रवण कुशलता को बढ़ाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक पूर्व निर्धारित कालांश में विद्यार्थियों को राम के जीवन प्रसंगों की जानकारी देगा।
2. कविता पढ़ाने से पूर्व उन्हें एक या दो दिन का समय तैयारी के लिए दिया जाएगा।
3. समूहगत कार्य होगा।
4. प्रत्येक समूह पूर्व निर्धारित प्रसंग का कक्षा में मंचन करेगा।
5. प्रत्येक समूह को प्रस्तुति के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. यह सम्पूर्ण प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।
7. अध्यापक मूल्यांकन आधार व अंक विभाजन पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रसंग का चयन
- अभिनय या प्रस्तुति
- संवादों का उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निश्चित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी प्रस्तुति व अभिनय करने वालों की सराहना की जाए।
- संकोची, शर्मीले व आलसी विद्यार्थियों को खुलकर बोलने की प्रेरणा दी जाए।

www.FirstRanker.com

सवैया एवं कवित्त

देव

प्रदत्त कार्य-1: व्याकरण

विषय: मानवीकरण अलंकार के उदाहरण

उद्देश्य:

- मानवीकरण अलंकार के विषय में जानकारी देना।
- मानवीकरण अलंकार के प्रयोग में प्रवीणता लाना।
- साहित्यिक अभिरूचि जगाना।
- खोजपरक शैली का विकास करना।

निर्धारित समय: एक कालांश

प्रक्रिया:

1. सर्वप्रथम अध्यापक पूर्व निर्धारित कालांश में विद्यार्थियों को मानवीकरण अलंकार की जानकारी देगा।
2. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
3. छात्र कविता में प्रयुक्त मानवीकरण अलंकार छाँटेंगे।
4. इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु:

- सही उदाहरण

टिप्पणी:

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य मूल्यांकन बिन्दु को आधार मानकर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि:

- जिन विद्यार्थियों का कार्य अच्छा है, उनकी प्रशंसा की जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-2 : परिचर्चा एवं प्रस्तुतीकरण।

विषय : ऋतुएं

उद्देश्य :

- रचनात्मक अभिव्यक्ति व मानसिक योग्यता का विकास।
- प्रकृति के प्रति जागरुकता और ऋतुओं में बदलाव की जानकारी
- विभिन्न ऋतुओं का मानव जीवन पर प्रभाव।
- मौलिक कल्पना शक्ति को विकसित करना।
- ग्लोबल वार्मिंग का ऋतुओं पर प्रभाव।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा को चार समूहों में विभक्त करेंगे और प्रत्येक समूह को सर्दी, गर्मी, वर्षा और वसन्त किसी एक ऋतु पर परिचर्चा करने के लिए कहेंगे और उसे सुनेंगे। इसमें 10-15 मिनट लगेंगे।
2. गतिविधि प्रारंभ करने से पूर्व आवश्यक निर्देश छात्रों को दिए जाएंगे।
3. प्रत्येक समूह ऋतु से सम्बन्धित कविता लिखेगा और चित्र बनाएगा।
4. समूह का नेता कविता पढ़ेगा और अन्य छात्रों को चित्र दिखाएगा।
5. छात्र विशेष ऋतु में होने वाली फसल, फल, सब्जी और फूलों की सूची बनाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- समूह द्वारा परिचर्चा
- कविता रचना
- चित्र रचना
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- किसी अन्य मूल्यांकन बिन्दु को आधार मानकर अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।
- यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न नहीं हो पाएगी अत: दो कालांशों को मिलाकर कराई जाएगी।

प्रतिपुष्टि :

- श्रेष्ठ कविता को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- शब्द चयन और मौलिक अभिव्यक्ति के लिए छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- जो छात्र गतिविधि में क्रियाशील नहीं हैं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : लेख लेखन

विषय : 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण होने वाले ऋतु परिवर्तन।

उद्देश्य :

- ग्लोबल वार्मिंग और उसके प्रभाव की जानकारी देना।
- प्रकृति सरंक्षण की प्रेरणा देना।
- वैज्ञानिक चिंतन का विकास करना।
- वाचन एवं लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक ग्लोबल वार्मिंग के विषय में जानकारी देगा।
2. कक्षा में इस विषय पर चर्चा की जाएगी।
3. छात्र विभिन्न स्रोतों पर-पत्रिकाएँ, इंटरनेट आदि से जानकारी एकत्र करेंगे।
4. निर्धारित कालखंड में छात्र इस विषय पर लेख लिखेंगे और कक्षा के समक्ष पढ़कर सुनाएँगे।
5. अध्यापक मूल्यांकन के आधार व अंक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- ताकिर्कता
- अभिव्यक्ति क्षमता

टिप्पणी :

- किसी अन्य मूल्यांकन बिन्दु को आधार मानकर अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- जो छात्र गतिविधि में क्रियाशील नहीं हैं उन्हे प्रोत्साहन दिया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-4 : वाद विवाद

विषय : आज का युग टोने टोटकों से मुक्त है।

उद्देश्य :

- विचार विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- तार्किकता एवं वैज्ञानिक चिंतन का विकास करना।
- धैर्यपूर्वक विपक्षी के तर्कों को सुनना और समझना।
- विद्यार्थियों के श्रवण व वाचन कौशलों का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में वाद विवाद के विषय में पक्ष और विपक्ष को कक्षा में स्पष्ट कर देगा।
2. पूरी कक्षा को दो समूहों में बांट दिया जाए।
3. फिर उन्हें सोचने के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाए।
4. तत्पश्चात् विद्यार्थियों का पक्ष वाला समूह अपनी बात कहेगा।
5. विपक्ष वाले अपने तर्क रखेंगे। इस प्रकार यह प्रक्रिया 15 मिनट तक चलाई जाए।
6. सबसे अच्छे वक्ता और तर्क सम्मत बात कहने वाले विद्यार्थी से वाद विवाद पर टिप्पणी कर उसे समाप्त किया जाए।
7. पक्ष विपक्ष के ठोस तर्क व प्रमाण श्यामपट्ट पर बिंदु रूप में लिखे जा सकते हैं।
8. सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अनिवार्य हो।
9. मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- अकाट्य तर्क व प्रमाण
- आत्मविश्वास व प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- ठोस तर्क एवं प्रभावशाली प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को खुलकर अपनी बात कहने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : वर्ग पहेली (व्याकरण)

विषय : पर्यायवाची शब्दों की वर्ग पहेली।

उद्देश्य :

- खोजपरक प्रवृत्ति को उभारना।
- नए नए शब्दों से परिचित कराना।
- पर्याय शब्द भंडार बढ़ाना।
- एकाग्रता की प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देते हुए पाठ से चयनित शब्द तथा वर्ग पहेली श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा दी गई वर्ग पहेली से प्रत्येक शब्द के लिए तीन तीन पर्यायवाची शब्द ढूंढने के लिए निर्देश देंगे।
3. वर्ग पहेली से शब्द ढूँढकर छात्र उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
4. शिक्षक सभी के लिखित प्रपत्र एकत्र कर लेंगे, चाहें तो छात्रों में वितरित करके भी मूल्यांकन करा सकते हैं (ध्यान रहे पेपर दूसरे छात्रों का ही होना चाहिए स्वयं का नहीं)।
5. इस प्रक्रिया के लिए 20–25 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख दें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही होने पर

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कार्य प्रपत्र

शब्द – पट, दीपक, जग, पल्लव, सुमन, पवन, मदन, महीप, उदधि, आरसी

वर्ग पहेली

व	स	न	का	म	दे	व	सं	पद	पु
स्	मी	दी	म	क	म	ल	सा	र	ष्
त्र	र	प	र्ण	अ	म्	ब	र	त	प
सा	ग	र	आ	फू	कु	सु	म	द	र
ब	दि	या	द	ल	क	न्	द	र्प	ब
ह	वा	प्र	र	ति	ज	ग	ती	ण	त
न	यु	जा	चि	रा	ग	म	आ	म	सि
प्र	भ	प	ना	पा	त	हा	ई	ख	न्
भू	प	ति	र	त	शी	रा	ना	सु	धु
र	ति	प	ति	ल	शा	ज	ल	धि	क

प्रतिपुष्टि :

- जिन विद्यार्थियों ने पूरे पर्यायवाची ढूँढ कर लिखें हो उनकी सराहना की जाए।
- श्यामपट्ट पर पर्यायवाची लिख दिए जाएँ।
- जो छात्र यह कार्य नहीं कर पाएँ, उनकी अन्य विद्यार्थियों की सहायता से मदद की जाए।
- शिक्षक की सुविधा हेतु पर्यायवाची शब्दों की सूची दी जा रही है –

पट – वस्त्र, वसन, अम्बर

दीपक – दीप, दिया, चिराग

जग – संसार, जगत, जगती

पल्लव – पर्ण, पात, दल

सुमन – कुसुम, पुष्प, फूल

पवन – वायु, समीर, हवा

महीप – प्रजापति, भूपति, महाराज

मदन – कामदेव, रतिपति, कन्दर्प

उदधि – सागर, जलधि, सिन्धु

आरसी – आईना, शीशा, दर्पण

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

आत्म कथ्य
जयशंकर प्रसाद

प्रदत्त कार्य-1 : परिचर्चा

विषय : आज की भागती दौड़ती जिंदगी।

उद्देश्य :

- स्वयं को समय देने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- तार्किकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- समय का महत्व समझाना।
- वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए समझाएँगे कि आज की भागती दौड़ती जिंदगी में समयाभाव के कारण हम बहुत सी जरूरी चीजों को नजर अंदाज कर देते हैं।
3. कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
4. प्रत्येक समूह को चर्चा के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. जब एक समूह चर्चा करेगा तो अन्य समूह तथा शिक्षक उसको ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा मूल्यांकन करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- तार्किकता
- अभिव्यक्ति क्षमता
- विषय संबद्धता

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन के आधार भी निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी तार्किक क्षमता वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जो विद्यार्थी ठीक प्रकार से विचार व्यक्त न कर पाएं उन्हें बेहतर अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : किसी सपने का वर्णन।

उद्देश्य :

- स्वप्न और यथार्थता के अन्तर को समझाना।
- स्वप्न एवं दिवासवप्न में भिन्नता।
- व्यथा को भूलने की प्रक्रिया (स्पष्टीकरण)।
- कल्पनाशीलता का विकास।
- भावाभिव्यक्ति में कुशलता।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कुछ संकेत श्यामपट्ट पर लिख देंगे जिसके द्वारा कक्षा में परिचर्चा की जायेगी।
2. उन संकेतों की सहायता से विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश दिए जाएंगे।
3. तत्पश्चात् विद्यार्थियों को 100 से 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जाएगा।

संकेत :

- आप रात्रि के किस प्रहर में सपना देखते हैं?
- क्या आपके सपने सत्य होते हैं?
- किस प्रकार के सपने देखते हैं?
- अधिकतर सपने याद रहते हैं अथवा भूल जाते हैं?
- अध्यापक लेखन सामग्री एकत्र करेगा और सुविधानुसार देखेगा।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- शब्दों की सीमा
- शब्दों का चयन
- वर्णन / लेखन कौशल
- उपसंहार

टिप्पणी :

- अध्यापक निजी मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- उत्तम छात्रों को शाबासी देकर सराहना की जायेगी।
- अन्य छात्रों को उत्साहित किया जाएगा।
- जिन छात्रों को स्वप्न स्मरण नहीं है अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए लिखेंगे।

प्रदत्त कार्य-3 : डायरी निर्माण एवं लेखन।

विषय : 'मेरी दिनचर्या'

उद्देश्य :

- डायरी लेखन की जानकारी देना।
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करकना।
- आत्मभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास।
- स्वलेखन प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम डायरी लेखन विधा का परिचय देगा।
3. सभी विद्यार्थी एक छोटी सी डायरी बनाएंगे जिसमें दो तीन पन्ने सजाकर लगाए जा सकते हैं तथा उसका आवरण पृष्ठ भी सजाया जा सकता है।
4. डायरी वास्तविक डायरी के अनुरूप होगी जिसमें ऊपर दिनांक व दिन लिखा होगा तथा नीचे खाली पृष्ठ होगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

5. खाली छोड़े गए पृष्ठ पर विद्यार्थी अपनी दिनचर्या लिखेंगे।
6. इस कार्य के लिए चार दिन का समय दिया जाए विद्यार्थी घर पर डायरी निर्माण करेंगे किन्तु दिनचर्या कक्षा में लिखी जाएगी।
7. गतिविधि के समय लिखने के लिए 20–25 मिनट का समय दिया जाएगा।
8. लेखन के पश्चात् डायरी संग्रहीत की जाएगी तथा उसके बाद अध्यापक डायरी का मूल्यांकन सुविधानुसार करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- साज सज्जा
- विषय वस्तु (आत्माभिव्यक्ति)
- लिखावट

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी डायरी निर्माण करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित अवश्य करें।
- कुछ अच्छी डायरियाँ विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर लगाई जा सकती हैं।

प्रदत्त कार्य-4 : पुस्तक समीक्षा

विषय : किसी साहित्यकार की आत्मकथा।

उद्देश्य :

- हिन्दी साहित्यकारों के प्रति अभिरूचि जगाना।
- आत्मकथा पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
- विचार विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- पठन कौशल का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास कराना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में 'आत्मकथा' के विषय में जानकारी देगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. कुछ साहित्यकारों की आत्मकथा पढ़ने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाएगा।
3. छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाएगा, वे पुस्तकालय से लेकर आत्मकथा पढ़ेंगे और उसकी समीक्षा लिखेंगे।
4. निर्धारित दिन छात्र कक्षा में अपनी पुस्तक समीक्षा पढ़ेंगे।
5. इस गतिविधि में दो कालांश का समय लगेगा।
6. मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगाा।

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी समीक्षा की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : पत्रिकाओं की सूची

विषय : वर्तमान साहित्यिक तैयार करना।

उद्देश्य :

- हिन्दी भाषा के प्रति रूझान लाना।
- हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करना।
- उत्तम हिन्दी साहित्य से परिचित कराना।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना।
- स्वाध्याय की आदत विकसित करना।

निर्धारित समयः एक कालांश (दो दिन तैयारी के लिए)

प्रक्रिया :

- सर्वप्रथम अध्यापक साहित्यिक पत्रिकाओं के विषय में जानकारी देगा।
- अध्यापक पुस्तकालय से कुछ पत्रिकाएँ ले जाकर छात्रों को दिखाएँ। छात्रों को दिखाएँ। छात्रों को साहित्यिक पत्रिकाओं का उनके सपांदक, मूल्य आदि की सूची बनाने का कार्य दिया जाएगा।
- छात्र पुस्तकालयाध्यक्ष या इंटरनेट की मदद ले सकते हैं।
- यह सामूहिक कार्य होगा।

www.FirstRanker.com

- चार समूह बनाए जायेंगे।
- निर्धारित दिन छात्र अपनी सूची कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- पत्रिकाओं की सूची के आधार पर

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार अध्यापक स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रतिभासंपन्न विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को सही और सटीक जानकारी देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

उत्साह, अट नहीं रही है

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रदत्त कार्य-1 : काव्य रचनाओं की सूची तैयार कर, उनकी तीन मुक्त छंद की कविताएँ।

विषय : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।

उद्देश्य :

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय देना।
- 'निराला' साहित्य की विशेषताएँ बताना।
- खोजपरक प्रवृति का विकास करना।
- लेखन क्षमता को समृद्ध करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और उनका साहित्य इस विषय में छात्रों को जानकारी देंगे।
2. यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
3. छात्र निराला का जीवन परिचय देते उनकी तीन मुक्त छंद की कविताएँ लिख कर लाएँगे।
4. निर्धारित कालांश में छात्र अपने कार्य की प्रस्तुति करते हुए कविता पाठ भी करेंगे।
5. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखें जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-2 : कवि का संक्षिप्त परिचय एवं उनकी एक-एक कविता ।

विषय : छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भों के नाम लिखें।

उद्देश्य :

- शब्द संपदा में वृद्धि करना।
- सुर, ताल, लय सम्बन्धी विशेषताओं का विकास करना।
- श्रवण से जुड़ी हुई दक्षताओं का विकास करना।
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में छायावाद एवं उसके प्रमुख चार स्तम्भों की जानकारी देगा।
2. यह सामूहिक कार्य होगा।
3. चार समूह बनाए जाएँगे। प्रत्येक समूह एक कवि पर जानकारी एकत्र करेगा।
4. निर्धारित कालांश में समूह अपनी प्रस्तुति कक्षा में करेगा।
5. छात्रों को इसकी सूचना 2-3 दिन पूर्व की जाएगी।
6. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखें जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक समूह का कार्य कक्षा के प्रदर्शन श्यामपट्ट पर प्रदर्शित किया जाए और उनकी सराहना की जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-3 : स्वरचित कविता लेखन।

विषय : 'वर्षा का एक दिन'

उद्देश्य :

- प्राकृतिक सौन्दर्य बोध कराना।
- ऋतुओं की विविधता का ज्ञान कराना।
- ऋतु सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी देना।
- कल्पनाशीलता का विकास कराना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगतकार्य है – सर्वप्रथम अध्यापक छात्रों को समझाएगा और संकेत श्यामपट्ट पर लिखेगा।

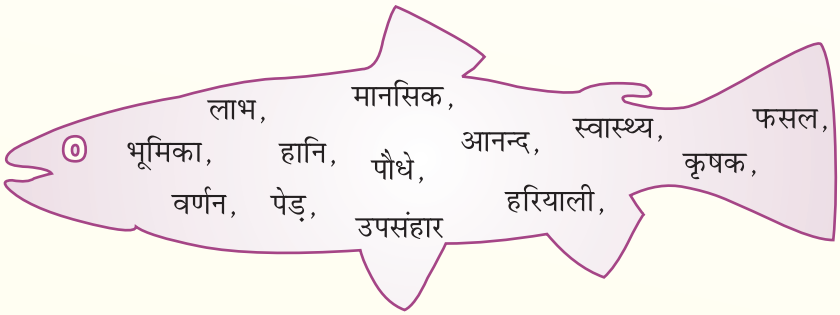

2. अध्यापक निरीक्षण करेंगे कि छात्र सही ढंग से लिख रहे हैं अथवा नहीं।
3. जो छात्र नहीं लिख पा रहे हैं उन्हें सहयोग दिया जाएगा।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
5. मूल्यांकन शिक्षक अपनी सुविधानुसार कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- लेखन कौशल
- भाषायी दक्षता

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा उनका मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- चार पांच अच्छी कविताओं को कक्षा में पढ़ा जाए।
- कार्य न करने वाले छात्रों का उत्साह वर्धन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : 'संदेश भेजने के माध्यम' - प्राचीन एवं वर्तमान काल के संदर्भ में

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- संदेश एवं संदेश वाहक के महत्व का ज्ञान कराना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- श्रवण कौशल की क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
2. अध्यापक विषय को समझाते हुए संदेश भेजने के प्राचीन एवं वर्तमान तरीकों पर प्रकाश डालेगा।
3. कक्षा को दो भागों में विभक्त किया जाएगा।
4. एक समूह प्राचीन काल के संदेश वाहकों एवं संदेश भेजने के तरीकों पर चर्चा करेगा तथा दूसरा समूह वर्तमान काल के।
5. शिक्षक यह भी स्पष्ट कर दें कि संदेश के तरीकों में क्या खामियाँ तथा क्या अच्छाईयाँ थी इस पर भी विद्यार्थी चर्चा करें तथा उदाहरण सहित तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट करें।
6. सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अनिवार्य है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
8. प्रत्येक समूह को परिचर्या के लिए 15-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
9. जब एक समूह परिचर्चा करेगा उस समय दूसरा समूह ध्यानपूर्वक सुनेगा एवं शिक्षक अवलोकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय सुसंबद्धता
- तार्किकता
- उपयुक्त उदाहरण
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी सूचना, तर्क एवं जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- सभी विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : संकलन, लेखन तथा वाचन।

विषय : प्रकृति से संबंधित कविताएँ।

उद्देश्य :

- सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- प्रकृति के प्रति सचेत करना।
- वाचन दक्षता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. अध्यापक सर्वप्रथम प्रकृति से संबंधित कुछ कविताओं का परिचय दे दें।
3. यह कार्य गतिविधि से दो दिन पूर्व दिया जाएगा।
4. छात्रों को स्वयं कविता रचना की प्रेरणा दी जा सकती है।
5. मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
6. गतिविधि के समय प्रत्येक छात्र एक-एक करके कविता पाठ करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, लय)
- कविता का चयन / स्वरचित
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- जो छात्र स्वरचित कविता पाठ करें उनकी सराहना की जाए तथा अन्य छात्रों को भी इसकी ओर प्रेरित किया जाए।
- जो छात्र ठीक से वाचन नहीं कर पाए उनकी इस कार्य में मदद की जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

यह दंतुरित मुस्कान, फसल

नागार्जुन

प्रदत्त कार्य-1 : अनुभव लेखन

विषय : दंतुरित मुस्कान के कवि के अनुभव को अपने शब्दों में लिखिए।

उद्देश्य :

- कवि के भाव का अनुभव करेंगे।
- बाल स्वभाव को समझेंगे।
- कल्पना शक्ति का विकास।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कार्य के स्वरूप को समझाएँगे।
2. दंतुरित मुस्कान के भाव पर चर्चा करेंगे।
3. विद्यार्थियों को 20 मिनट का समय देकर स्वतंत्र रूप से लिखवाएंगे।
4. कार्य सम्पन्न होने पर अध्यापक सभी के कार्य को एकत्रित करेंगे।
5. विद्यार्थियों से मूल्यांकन के आधार पर मूल्यांकन करवाएंगे।
6. मूल्यांकन आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।
7. शिक्षक अपनी सुविधानुसार मूल्यांकन के तरीके बदल सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- रोचकता
- भाषा

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को आधार मानकर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कक्षा के वातावरण को सदैव खुशहाल बनाया जाए।
- छात्रों की समस्या का निदान करके उनके तनाव को दूर किया जाए।
- यह प्रक्रिया प्रतिदिन कक्षा लेने से पूर्व की जा सकती है।

प्रदत्त कार्य-2 : वाद विवाद

विषय : उपभोक्तावादी संस्कृति हमें कृषि संस्कृति से दूर ले जा रही है।

उद्देश्य :

- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- तार्किक प्रवृत्ति का विकास करना।
- विचार विश्लेषण की प्रवृत्ति का विकास करना।
- श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देंगे तथा प्राचीन काल में अतिथि का महत्व तथा आज के युग में अतिथि सत्कार पर चर्चा करेंगे।
3. कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा एक समूह विषय के पक्ष में तथा दूसरा विपक्ष में।
4. अध्यापक यह प्रयास करेंगे कि सभी विद्यार्थी विचार रख सके।
5. समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस दौरान शिक्षक दोनों समूहों में घूमकर छात्रों का मार्गदर्शन करेगा।
7. मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

8. समूह चर्चा के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक समूह के प्रतिनिधि को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- प्रस्तुतीकरण (सटीक तर्क, भाषा)
- उपयुक्त उदाहरण

टिप्पणी :

- अध्यापक वाद-विवाद की प्रक्रिया को बदल सकते हैं।
- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना की जाए।
- सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : एलबम बनाना

विषय : बच्चों की मुस्कान से संबंधित चित्रों का एलबम तैयार करना।

उद्देश्य :

- चिंतन कौशल का विकास।
- भावनात्मक सौदर्न्य का विकास।
- संवेदनात्मक भावुभूति का विकास।
- प्रस्तुतीकरण एवं संग्रहकला का विकास।
- हस्तकला की कला का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक विषय को स्पष्ट करेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

3. बच्चों से इंटरनेट/फोटो/कैलेण्डर/अख़बारों आदि से बड़ो की सहायता से मुस्कान संबंधी चित्र काट कर कक्षा में लाने को कहा जाएं।
4. प्रत्येक विद्यार्थी को एलबम के ऊपर अपना नाम तथा क्रमांक लिखने को कहा जाएगा।
5. चित्रों को चिपकाने और प्रत्येक चित्र के नीचे 'मुस्कान' को लक्षित करते हुए-कोई टिप्पणी, पंक्ति, तर्क आदि लिखने का कार्य कक्षा में ही कराया जाए।
6. बच्चे एक चित्र के लिए एक से अधिक पंक्ति भी लिख सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- संपूर्ण एलबम
- अधूरे कार्य

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधार अध्यापक स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सामान्य या अतिसामान्य प्रस्तुति करने वाले विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन देकर प्रोत्साहित किया जाए।
- प्रतिभासंपन्न विद्यार्थियों की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : नारे लिखना व बुलवाना

विषय : जल ही जीवन है।

उद्देश्य :

- विचारों की सजगता का ज्ञान कराना।
- निरीक्षण शक्ति में वृद्धि करना।
- लेखन दक्षता का विकास करना।
- श्रवण शक्ति सामर्थ्य की परख कराना।
- कम शब्दों में प्रभावशाली बात कहने का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. दो नारे अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख देगा और छात्रों से कहा जायेगा कि वे उससे कुछ अलग लिखें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. अध्यापक दस मिनट छात्रों को सोचने का समय देगा कि वे 'जल ही जीवन है' पर नारा सोचें तथा लिखें।
3. उदाहरण – 'जल बिन सब सून'

   'अब समझे पानी कितनी मूल्यवान वस्तु है।' यह कह कर अध्यापक विद्यार्थियों को जल का महत्त्व समझाएगा।
4. प्रत्येक छात्र दो–दो नारे लिखेंगे। अध्यापक द्वारा छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा।
5. लिखने के उपरान्त सभी छात्र नारे प्रस्तुत करेंगे।
6. इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा और मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सटीक शब्द चयन
- सार्थकता
- समग्र प्रभाव
- तुकबंदी

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम दो नारे श्यामपट्ट पर लिखे जाएं और उन छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- योजनानुसार कार्य करने वाले विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया जाए।
- अच्छे नारों को विद्यालय प्रदर्शन पट्ट पर लगाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-5 : परिचर्चा

विषय : नदियों तथा मनुष्य का अंतर संबंध।

उद्देश्य :

- नदियों के महत्व को समझना।
- वैचारिक शक्ति का विकास।
- तुलनात्मक अध्ययन करने की प्रवृति।
- श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में नदियों के किनारे विकसित सभ्यता की चर्चा करेंगे।
3. अध्यापक नदियों के किनारे विकसित शहरों तथा उससे मिलने वाले लाभ के बारे में बताएंगे।
4. अध्यापक संकेत देने के बाद सुविधानुसार प्रत्येक समूह को आपसी परिचर्चा के लिए 10 मिनट का समय देंगे।
5. विद्यार्थियों के बीच परिचर्चा शुरू करवांएगे।
6. अध्यापक ध्यान रखेंगे कि परिचर्चा में सभी विद्यार्थी भाग ले सकें।
7. निर्धारित मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर परिचर्चा।
8. अध्यापक सुविधानुसार मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय की जानकारी
- प्रस्तुति
- भाषा

प्रतिपुष्टि :

- तार्किक ढंग से विचार प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाएगी।
- कमजोर तर्क रखने वाले प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

छाया मत छूना

गिरिजा कुमार माथुर

प्रदत्त कार्य-1 : व्याकरण

विषय : 'छाया' शब्द के अनेकार्थी प्रयोग।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि कराना।
- चिंतन शक्ति का विकास करना।
- पल्लवन क्षमता का विकास करना।
- लेखन कौशल विकसित करना।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास करना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक 'छाया' शब्द के कुछ अर्थ स्पष्ट करेगा। जैसे –
   - छाया – यानी परछाई, व्यक्ति की छाया
   - छाया – घेरा जैसे पेड़ की छाया
   - छाया – जैसे ग्रहों की छाया, दुष्प्रभाव
   - छाया – छायाकृति जैसे शैडो
   - छाया – छायाचित्र – फोटो
   - छाया – असर, गुरुजनों की छाया उसके कार्य पर दिखाई देती है।
   - छाया – संरक्षण, जैसे माता पिता की छाया
   - छाया – एक अंधविश्वास जैसे उस व्यक्ति की बुरी छाया
   - छाया – फैलना, जैसे सब ओर छा जाना
   - छाया – प्रतिबिंब, जैसे दर्पण या पानी में दिखना

www.FirstRanker.com

2. प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक कक्षा को दो-दो के समूहों में विभक्त करेगा।
3. सभी समूह छाया के अनेक अर्थों पर विचार कर उन पर वाक्य बनाएँगे।
4. अध्यापक 15 मिनट का समय सभी विद्यार्थियों को अपने अपने वाक्य और छाया के अनेक अर्थ सुनाने के लिए दे सकता है।
5. अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- शब्दों के अधिकतम अर्थ
- शब्द का सही प्रयोग
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्मित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- अधिक और अच्छे अर्थ बताने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अन्य छात्रों का मार्गदर्शन कर उन्हें प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : प्रपत्र

विषय : सुखद - दुखद स्मृतियाँ।

उद्देश्य :

- स्मरण शक्ति का विकास।
- सुखद स्मृतियों द्वारा आनन्द का आभास।
- एक दूसरे के दुख बाँटना एवं हिम्मत बढ़ाना।
- लेखन दक्षता में प्रवीणता।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक प्रपत्र के संकेतों को श्यामपट्ट पर लिखेगा और छात्र उसके अनुसार प्रपत्र भरेंगे।
2. बीच बीच में अध्यापक द्वारा बच्चों को मार्ग दर्शन किया जायेगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

3. इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा एवं मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

4. अध्यापक प्रपत्र एकत्र कर सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

कार्य प्रपत्र

अपने जीवन में घटित किसी दु:खद या सुखद घटना को याद करके निम्नलिखित प्रपत्र पूर्ण करें:-

1. घटना जो घटी .....
2. कब हुई .....
3. कहां हुई .....
4. कैसे हुई .....
5. क्यों हुई .....
6. उसका प्रभाव .....
7. परिणाम .....
8. दूसरी घटना से सहसम्बन्ध .....
9. वर्तमान में याद आने का कारण .....
10. मानस पटल पर उसका प्रतिबिम्ब .....

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही होने पर

प्रतिपुष्टि :

- बुद्धिमान छात्रों के कार्य को सराहा जाए।
- अन्य छात्रों को अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : गीत लिखना और सस्वर गायन।

विषय : 'हम होंगे कामयाब'

उद्देश्य :

- संपूर्ण गीत को खोजना तथा पढ़ना।
- सस्वर गायन करेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- भावनात्मक विकास।
- सहभागिता की प्रवृति का विकास।
- जिज्ञासा उत्पन्न करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह सामूहिक कार्य होगा।
2. अध्यापक पाँच–पाँच के समूह में कक्षा को विभक्त करेंगे। उन्हें गीत खोजकर अभ्यास करने का वक्त देंगे।
3. निर्धारित पीरियड में समूह को गीत प्रस्तुत करने के लिए कहा जाएगा।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
5. अध्यापक निर्धारित मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर समूह का मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- संपूर्ण गीत
- भावनात्मक प्रस्तुति
- भाषा

प्रतिपुष्टि :

- अध्यापक देखेंगे कि समूह का प्रत्येक छात्र गतिविधि में भाग ले रहा है अथवा नहीं।
- समयानुसार कार्य न करने वालों का उत्साह वर्धन करें।
- समर्थ छात्रों को शाबासी दें।
- आदर्श प्रस्तुत करने वाले समूह को प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करवाएं।

प्रदत्त कार्य-4 : आशु भाषण (दिए गए विषयों पर)

उद्देश्य :

- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास।
- आत्मनिर्भरता का ज्ञान विकसित कराना।
- वाचन कौशल का विकास कराना।
- आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देंगे।
3. विद्यार्थियों की सहायता से निम्नलिखित विषयों को एक-एक पर्ची पर लिखकर मोड़कर रख दिया जाएगा। विषय जैसे - जीवन में यश की चाह, वैभव की चाह, सफलता की चाह, नेता बनने की चाह, समाज सेवी होने की चाह, विदेश जाने की चाह, सुख प्राप्ति की चाह इत्यादि।
4. विद्यार्थी एक एक करके आएंगे एक पर्ची उठाएँगे तथा उस पर लिखे विषय के संबंध में अपने विचार व्यक्त करेंगे (पर्ची मोड़कर फिर से उसी स्थान पर रख दी जाएगी।
5. एक विद्यार्थी को अधिकतम 2 मिनट का समय दिया जाए। यदि सभी बच्चे इस कार्य में भाग न ले पाएं तो यह कार्य दो कालांश में करवाया जा सकता है।
6. एक कालांश में प्रक्रिया संपन्न हो जाएगी।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- प्रस्तुतीकरण (भाषा उच्चारण)
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे एवं सार्थक भाषण की सराहना की जाए।
- शिक्षक सभी विद्यार्थियों को विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें, यदि छात्र नहीं कर पा रहा हो तो उसे और अवसर प्रदान करें।

प्रदत्त कार्य-5 : भाषण

विषय : बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले।

उद्देश्य :

- सृजनात्मक शक्ति का विकास।

www.FirstRanker.com

- चिंतन क्षमता का विकास।
- वाचन कौशल का विकास।
- भावनात्मक एवं सामाजिक कौशल का विकास।
- अत्यधिक मूल्यों का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में विषय को स्पष्ट करेंगे।
2. सभी विद्यार्थियों को भाषण तैयार करने के लिए दो दिन का समय दिया जा सकता है।
3. निर्धारित तिथि के निर्धारित पीरियड में अध्यापक भाषण कराए।
4. एक विद्यार्थी को एक से दो मिनट का समय दिया जाएगा।
5. अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख देगें।
6. इस कार्य में विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार समय निर्धारित किया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- आदर्श भाषण प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- सामान्य प्रस्तुतीकरण करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- अध्यापक स्वयं या अच्छे भाषण पढ़कर कक्षा में सुना सकता है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कन्यादान

ऋतुराज

प्रदत्त कार्य-1 : समूह - चर्चा और प्रस्तुति।

विषय : नारी एक रूप अनेक।

उद्देश्य :

- नारी जीवन को करीब से देखना।
- नारी जीवन की विशेषताओं को समझना।
- संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- वाचन, लेखन, श्रवण एवं पठन की क्षमताओं को परिष्कृत करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक पूरी कक्षा को विषय समझाएगा।
2. प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व कक्षा को पांच समूहों में बांटा जाएगा।
3. सभी समूह आपस में 5-10 मिनट के लिए चर्चा करेंगे।
4. प्रक्रिया के अगले चरण में समूह में से एक वक्ता अपने समूह के विचार सबके समक्ष रखेगा।
5. इस प्रक्रिया में 15 मिनट लगेंगे।
6. यह सारी प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- परस्पर विचार विमर्श
- तर्क एवं प्रमाण
- प्रस्तुति

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी प्रस्तुति करने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- कार्य ठीक से न कर पाने वाले विद्यार्थियों को सही निर्देशन देकर प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : नाट्यमंचन

विषय : नारी सशक्तिकरण

उद्देश्य :

- नारी के प्रति संवेदनशील बनाना।
- सामान्य ज्ञान का विकास कराना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास।
- अभिनय कौशल का विकास।
- नारी के महत्व को समझना।
- समानुभूति की भावना विकसित करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह सामूहिक कार्य है।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए यह भी संकेत करेंगे कि स्त्री के लिए आत्मनिर्भरता के साथ आत्म रक्षा भी जरूरी है।
3. पांच-छह विद्यार्थियों का समूह होगा। सभी समूहों को नाट्यमंचन के लिए निर्धारित बिन्दुओं को समझाए।
4. विद्यार्थियों को मंचन की तैयारी के लिए समय दें।
5. पूर्व निर्धारित समय पर नाट्य मंचन करवाएं।
6. निर्धारित मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर समूह का मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय
- अभिनय
- संवाद
- भाषा

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन के आधार बिन्दु निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अभिनय के साथ अभिव्यक्ति को सराहें।
- आदर्श मंचन की सराहना करें।
- कमजोर प्रस्तुति के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य-3 : तार्किक विचाराभिव्यक्ति।

विषय : पारंपरिक नारी एवं आधुनिक नारी की वेशभूषा में अंतर और अंतर के कारण।

उद्देश्य :

- चिंतन एवं समझ को विकसित करना।
- वाचन कौशल का विकास।
- श्रवण शक्ति को बढ़ाना।
- स्त्री के पारंपरिक एवं अधुनिक रूप को समझना।
- समय के अनुसार आवश्यकताओं को जानना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों कों विषय स्पष्ट करेंगे।
2. कक्षा को दो समूहों में या फिर अपनी सुविधानुसार समूहों में विभाजित करेंगे।
3. चर्चा आरंभ कर मध्स्थ की भूमिका निभाते हुए अध्यापक सभी समूहों को परिचर्चा में शामिल करेंगे।
4. अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत तर्क-वितर्क को ध्यान में रखते हुए निर्धारित मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- वाचन कौशल
- तर्किक क्षमता
- भाषा

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ तर्क प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें।
- कमजोर विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन किया जाए।
- कुछ बातें उदाहरण स्वरूप अध्यापक बताएँ।

प्रदत्त कार्य-4 : कोलॉज बनाना

विषय : अपने-अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली - स्त्रियों पर कोलाज बनाएं।

उद्देश्य :

- 'आज के युग में नारी का योगदान' समझाना।
- नारी के प्रति समाज की सोच में बदलाव एवं जानकारी।
- देश में नारी की स्थिति जानना।
- स्त्री शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना।
- विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी रखना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि।
- चिंतन एवं रचनात्मक कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कार्य के स्वरूप को समझाएंगे।
2. विद्यार्थी की संख्या के आधार पर समूह बनाकर कार्य कराएंगे।
3. यह ध्यान रहे कि कार्य में सभी बच्चे योगदान करें।
4. कार्य के लिए तैयारी का समय दें।
5. कार्य सम्पन्न कराने के लिए 20 मिनट का समय दें।
6. अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं तय करेंगे।

प्रतिपुष्टि :

- अधिकतम जानकारी वाले समूह की सराहना की जाए तथा अन्य को प्रोत्साहित करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-5 : महिला उत्पीड़न से संबंधित समाचारों का संकलन एवं प्रदर्शन।

उद्देश्य :

- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- अखबार पढ़ने की आदत विकसित करना।
- समाचारों को समझना तथा विचार करना।
- चिंतन एवं समझ विकसित करना।
- सुधार लाने, जागृति लाने हेतु विचार प्रस्तुत करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देगा। कविता पढ़ाने से पूर्व ही विभिन्न प्रकार के समाचारों की ओर ध्यान रखने के लिए संकेत देगा। जिससे विद्यार्थी मानसिक रूप से गतिविधि के लिए तैयार रहें।
3. गतिविधि से एक दिन पूर्व संबंधित सामग्री लाने के लिए कहा जाएगा (सामग्री जैसे – अखबारों से समाचार, सीट, फेविकोल आदि)।
4. गतिविधि में शमिल सभी समूह समाचार संकलन कर चार्ट पर चिपकाएंगे।
5. इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम-घूम कर विद्यार्थियों का निरीक्षण करेंगे।
6. 20 मिनट के बाद समूह अपना कार्य प्रदर्शित करेंगे।
7. 10 मिनट का समय इस समस्या के समाधान पर विचार प्रस्तुत करने के लिए दिया जाए।
8. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
9. प्रदर्शित गतिविधियाँ को देखकर मूल्यांकन किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी कृतियों को विद्यालय प्रदर्शन बोर्ड पर लगाया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

संगतकार

मंगलेश डबराल

प्रदत्त कार्य-1 : पर्दे के पीछे कार्य करने वाले कलाकारों की भूमिका बताना।

विषय : संगीतकार, निर्देशक आदि

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- कार्य में रोचकता उत्पन्न करना।
- कार्य संकलन प्रक्रिया का विकास करना।
- लेखन एवं पठन कला का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में इन कलाकारों की भूमिका के विषय में जानकारी देगा और छात्रों से किसी विशेष कला से सम्बन्धित कलाकारों के कार्यों का उल्लेख करने के लिए कहा जायेगा।
3. छात्रों को आठ समूहों में विभक्त किया जायेगा, प्रत्येक समूह कलाकार के कार्य के विषय में लिखेगा उसके कार्यों का संकलन करके सूची तैयार करेगा। विषय नीचे दिए जा रहे हैं।

   संगीतकार, निर्देशक, वेशभूषा–सज्जाकार, कहानीकार, श्रृंगार प्रसाधक, छायाकार, नृत्य निर्देशक, ध्वनि नियंत्रक।

4. उपर्युक्त संकेतों को श्याम पट्ट पर लिखा जायेगा।
5. समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इसके साथ–साथ मूल्यांकन बिन्दु भी श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
7. लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सामान्य ज्ञान

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- संकलन
- सामूहिक प्रयास
- प्रस्तुतीकरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- इस प्रक्रिया के लिए शिक्षक स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर छात्रों का सामान्य ज्ञान परखेंगे।
- छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा।
- शिक्षक सभी छात्रों को प्रतिभागी होने की प्रेरणा अवश्य दें।
- सर्वोत्तम संकलन सूची को प्रदर्शित किया जायेगा।
- सभी छात्रों को सक्रिय रहने की प्रेरणा दी जाए।

कार्य 2 : भाषण

विषय : गायन में सहायक कलाकरों की भूमिका।

उद्देश्य :

- विद्यार्थियों में समझ विकसित करना।
- चितंन एवं अभिव्यक्ति कौशल।
- सोचने एवं बोलने की क्षमता का विकास करना।
- जीवन को विस्तार से समझना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में समझाएगा कि मुख्य कलाकार – गायक का ही महत्व नहीं होता है बल्कि उसकी आवाज में प्रभावोत्पादकता लाने के लिए वाद्य यंत्रों को बजाने वाले, उसके पीछे से आलाप लेने वालों की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है।
2. अध्यापक कक्षा में विषय को स्पष्ट करेंगे।

www.FirstRanker.com

3. गतिविधि के लिए समय निर्धारित किया जाएगा।
4. मूल्यांकन के आधार पहले बता दिए जाएंगे।
5. तैयारी के लिए विद्यार्थियों को दो दिन का समय दिया जाएगा।
6. सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता अनिवार्य है।
7. क्रमांक के अनुसार विद्यार्थी निर्धारित विषय पर भाषण देंगे।
8. मूल्यांकन के आधार पर भाषण तथा विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाएगा।
9. इसके मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली भाषण की सराहना की जाए।
- अन्य सामान्य बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए।
- अध्यापक भाषण के विषय में बच्चों को बता सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3 : अन्त्याक्षरी

विषय : कविताएं (हिन्दी)

उद्देश्य :

- कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- ध्यानपूर्वक श्रवण की आदत डालना।
- स्मरणशक्ति का विकास करना।
- गायन / सस्वर वाचन में अभ्यस्त कराना।
- श्रवण एवं वाचन कौशल का परिष्कार।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया:

1. अंत्याक्षरी प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक अंत्याक्षरी के नियम कक्षा में स्पष्ट कर देगा।
2. प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक कक्षा को दो दलों में विभक्त कर देगा।
3. दोनों दल क्रमवार कविता गाएँगे।
4. 20 मिनट में कम से कम 10 चक्र चलाए जा सकते हैं।
5. अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- कविता का चयन
- कविता की प्रभावशाली प्रस्तुति
- भाषा
- लय तथा हाव-भाव
- समय (त्वरित)

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकेंगे।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी और सुंदर भावाभिव्यक्ति के लिए सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अच्छे प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहित किया जाए।
- स्वत: तुरंत कविता बोलने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : सचित्र सूची तैयार करना।

विषय : भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्य यंत्र।

उद्देश्य :

- वाद्य यंत्रों से परिचित कराना।
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि कराना।
- विचाराभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना।
- रचनात्मकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. शिक्षक कविता पाठन से पूर्व ही विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों की चर्चा करेंगे। साथ ही अपनी पसंद के वाद्य यंत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का संकेत देंगे। (इंटरनेट/पुस्तकालय)
3. कविता पठन के उपरांत यह गतिविधि कराई जाएगी।
4. प्रत्येक विद्यार्थी को चार्ट पेपर काटकर (लगभग (6 X 6) विद्यार्थी की सहायता से कटवाया जा सकता है।) कक्षा में बांटे जायेंगे।
5. विद्यार्थी चार्ट पेपर पर अपनी पसंद का वाद्य यंत्र पेन्सिल या स्कैच पेन से चित्रित करेंगे तथा कुछ वाक्य उसके विषय में चित्र के नीचे लिखेंगे।
6. इस प्रक्रिया के लिए 25 से 30 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
8. प्रक्रिया समाप्त होने के पश्चात् शिक्षक सबके पेपर एकत्र कर लेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।
9. सभी छात्रों के पेपर मूल्यांकन के पश्चात् कक्षा प्रदर्शन पट्ट में लगाए जाएंगे ताकि सभी विद्यार्थी उन्हें पढ़ लें।
10. अध्यापक चाहे तो उन्हें कक्षा में पढ़वा भी सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- चित्रांकन
- विषय की जानकारी
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा कार्य करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- शिक्षक छात्रों को विभिन्न वाद्य यंत्रों की जानकारी देंगे तथा इंटरनेट पर खोज करने की प्रेरणा देंगे।

प्रदत्त कार्य-5 : समीक्षा

विषय : दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले संगीत के 'रियालिटी शो'।

उद्देश्य :

- आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- विषय पर गहरी जानकारी रखने की प्रवृत्ति का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास।
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय से संबंधित जानकारी देगा।
3. कक्षा को आठ समूहों में विभाजित किया जाएगा।
4. समूह चर्चा तथा लेखन के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूम कर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
7. समूह चर्चा एवं लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
8. प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 3 मिनट का समय दिया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- विचार विश्लेषण
- प्रस्तुतीकरण / समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचार एवं तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- संगीत के अतिरिक्त अन्य विषयों से संबंधित दूरदर्शन 'रियलिटी – शो' पर चर्चा की जा सकती है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

माता का आँचल

शिवपूजन सहाय

प्रदत्त कार्य-1 : व्याकरण

विषय : आंचलिक शब्दों का चयन और उनके अर्थ बताना।

उद्देश्य :

- भाषा ज्ञान में अभिवृद्धि करना।
- आंचलिक शब्दों की सहज, स्वाभाविक स्थिति को समझाना।
- आंचलिक शब्द प्रयोग से वातावरण सृष्टि होती है, स्पष्ट करना।
- शब्दों के अर्थ, प्रयोग, विविधता आदि का ज्ञान कराना।
- विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- भावग्रहण क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक आंचलिक शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग को पाठ के आधार पर स्पष्ट करेगा।
2. प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए कक्षा को दो समूहों में विभक्त कर देगा।
3. एक समूह शब्द बोलेगा दूसरा पक्ष उसका अर्थ बताएगा।
4. यह क्रम अदल-बदल सकता है। यानी पूछने और बताने की प्रक्रिया एक पक्ष से दूसरे पक्ष में बदली जा सकती है।
5. इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- शब्दों का उच्चारण
- अर्थ का स्पष्टीकरण
- उच्चारण की स्पष्टता

www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- स्पष्ट उच्चारण व सही अर्थ बताने वाले विद्यार्थियों की प्रशंसा की जाए।
- सक्रिय प्रतिभागिता न लेने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : बाल मंडली के खेल।

उद्देश्य :

- बचपन के खेलों का महत्व समझाना।
- खेलों द्वारा उत्पन्न मेलजोल, परिचय, प्रगाढ़ता की ओर ध्यान दिलाना।
- बचपन की प्रत्येक प्रक्रिया की सूक्ष्म पहचान और योगदान को जानना।
- हृदय में कोमल भावनाओं को जगाना।
- शारीरिक सक्रियता व स्वास्थ्य के लिए आवयकता बताना।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रेरणा देना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा के वातावरण को सजीव एवं प्रसन्नतादायक बनाने के लिए कक्षा के कुछ विद्यार्थियों से बचपन में बाल मंडली द्वारा किए जाने वाले खेलों का प्रदर्शन कराएगा।
2. तालियाँ बजा बजाकर 'पोशम पा भई पोशम पा' इत्यादि गाना गाकर खेलना और वैसा ही अभिनय करना।
3. जमीन पर लकीरें खींचकर स्टापू खेलना।
4. गुड्डे-गुड़िया का खेल खेलना।
5. घर-घर खेलना।
6. डॉक्टर और मरीज का खेल।
7. अध्यापक बनकर औरों को पढ़ाना।
8. रेत का घर बनाना और तोड़कर भाग जाना।
9. अध्यापक कक्षा में कुछ समूह बनाकर प्रत्येक समूह से एक एक बचपन का खेल करा सकता है।

www.FirstRanker.com

10. कक्षा में एक आनंददायक वातावरण तैयार होगा जिससे पाठ समझने में सुगमता होगी।
11. अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।
12. यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सहज स्वाभाविक अभिनय
- संवाद-प्रस्तुति
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन आधार भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता के लिए सराहना की जाए।
- सुस्त एवं शिथिल विद्यार्थियों को आनंद लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : वाद विवाद

विषय : 'आज की शिक्षा बचपन को निगल रही है'

उद्देश्य:

- आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बचपन की कोमलता पर पुस्तकों का व विद्यालय का दबाव समझाना।
- विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलने की क्षमता का विकास करना।
- तार्किकता एवं प्रभावशीलता उत्पन्न करना।
- वाचन कौशल का विकास।
- प्रत्युत्पन्नमति का गुण विकसित करना।
- धैर्य एवं सहनशीलता के गुण का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा।

www.FirstRanker.com

2. प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए दो समूह बनाएगा पक्ष और विपक्ष।
3. दोनों समूहों को सोचने के लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
4. उस समय अध्यापक सभी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।
5. अध्यापक 20-25 मिनट के समय में वाद विवाद कराएगा।
6. प्रत्येक समूह के एक-एक वक्ता को बोलना अनिवार्य होगा
7. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सटीक तर्क
- विषय से सम्बद्धता
- प्रस्तुति में प्रवाह
- उच्चारण

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली ढंग से अपने पक्ष में तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- संकोची व चुप रहने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : समूह चर्चा और प्रस्तुति

विषय : ''बचपन में दुत्कार, जीवन हो बेकार। बचपन में दुलार, जीवन करे सत्कार॥''

उद्देश्य :

- बचपन में मां-बाप के प्यार का महत्व बतलाना।
- बचपन में अगर प्यार न मिले तो जीवन भटक जाता है, यह समझाना।
- वात्सल्य और लाड़ दुलार का भावनात्मक महत्व समझाना।
- प्यार की कमी असुरक्षा और अपराध को जन्म देती है।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- चिंतन-मनन की क्षमता को उद्दीप्त करना।
- वाचन एवं श्रवण कौशलों की अभिवृद्धि।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक विषय को स्पष्ट करेगा और समझाएगा कि बचपन में मां बाप का प्यार हर बच्चे का अधिकार है।
2. कक्षा को समूहों में विभाजित कर देगा।
3. प्रत्येक समूह को परस्पर चर्चा के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. अध्यापक उस अंतराल में सभी विद्यार्थियों की चर्चा को ध्यानपूर्वक उनके समूह में जाकर सुनेगा।
5. तत्पश्चात् 15-20 मिनट का समय प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण को सुनने के लिए दिया जाएगा
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु का विवरण
- सटीक तर्क एवं प्रमाण
- उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- तर्क द्वारा अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- सभी प्रतिभागियों की प्रतिभगिता अनिवार्य हो, किसी न किसी स्तर पर अवश्य भाग लें।
- सामान्य से कम स्तर की प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य-5 : संकलन करना।

विषय : लोक कथाएं

उद्देश्य :

- लोक जीवन के स्वरूप से परिचित कराना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- लोक संस्कृति का महत्व समझाना।
- क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा, रहन सहन की विविधता से परिचित कराना।
- लोक कथाओं की मिठास और मिट्टी से जुड़ाव अनुभव कराना।
- लोक भाषा, आंचलिकता की सहजता व अपनत्व से जोड़ना।
- खोजबीन, जिज्ञासा एवं संकलन के गुणों का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विषय को अच्छी तरह स्पष्ट कर देगा।
2. कक्षा को समूहों में बांट देगा।
3. प्रत्येक समूह को संकलन के लिए तीन चार दिन पहले बता दिया जाएगा।
4. निर्धारित तिथि को प्रत्येक समूह अपनी संकलित लोक कथा को कक्षा में प्रस्तुत करेगा।
5. प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लोक कथा का विवरण
- कथा की रोचकता
- क्षेत्रीय प्रभाव
- प्रभावशाली वाचन
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी प्रस्तुति की सराहना अवश्य की जाए।
- निम्नस्तरीय प्रस्तुति के लिए सुधार की संभावना समझाते हुए प्रोत्साहित किया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

जॉर्ज पंचम की नाक

कमलेश्वर

प्रदत्त कार्य-1 : मुहावरे का संकलन।

विषय : नाक पर आधारित।

उद्देश्य :

- मुहावरों के प्रयोग में कुशल बनाना।
- कल्पनाशक्ति को तीव्र करना।
- भाषा के व्यावहारिक स्वरूप को समझाना।
- वाक्य प्रयोग में दक्षता लाना।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में दो दो विद्यार्थियों के समूह बनाकर नाक संबंधी चार चार मुहावरे ढूंढने तथा उनके वाक्य प्रयोग करने के लिए देगा।
2. सोचने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
3. लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. 15 मिनट अपने अपने मुहावरे वाक्य प्रयोग के साथ सुनाने के लिए दिए जाएंगे।
5. मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही मुहावरों की खोज
- सही वाक्य प्रयोग
- सही वाचन

प्रतिपुष्टि :

- अध्यापक सही कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें।
- अतिसामान्य कार्य करने वालों को और प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित करें।

www.FirstRanker.com

- अध्यापक के लिए नाक संबंधी मुहावरों की सूची –
  - नाक भौं चढ़ाना
  - नाक काटना
  - नाक रख लेना
  - नाक में दम करना
  - नाक पर मक्खी न बैठने देना
  - नाक कटा कर घूमना
  - नाकों चने चबवाना
  - नाक रगड़ना
  - नाक में बोलना

प्रदत्त कार्य-2 : सूचनाएँ एकत्र करना।

विषय : जॉर्ज पंचम

उद्देश्य :

- इतिहास के प्रति रुचि जागृत करना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- खोजबीन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- जिज्ञासा बढ़ाना।
- लेखन एवं वाचन क्षमताओं में निष्णात करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक जॉर्ज पंचम के बारे में जानकारी देगा तथा विद्यार्थियों को इंटरनेट व पुस्तकालय की सहायता से जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
2. यह सामूहिक प्रक्रिया होगी।
3. प्रत्येक समूह अलग अलग स्रोतों से जानकारी लेगा।
4. एक समूह तस्वीरें लाएगा।
5. दूसरा समूह डाक टिकटों की जानकारी लाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

6. तीसरा समूह तत्कालीन सिक्कों को एकत्रित करेगा।
7. चौथा या पांचवाँ समूह उनके जीवन से संबंधित घटनाओं और जीवन से संबंधित ब्यौरा एकत्रित करेगा।
8. इसके लिए चार दिन का समय दिया जाएगा।
9. निर्धारित कालांश में सभी समूह अपनी एकत्रित सामग्री लाएंगे और कक्षा में अपनी प्रस्तुति देंगे। प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट मिलेंगे।
10. अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- संकलित सामग्री
- प्रामाणिकता
- प्रस्तुति
- भाषायी दक्षता

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।
- अध्यापक विद्यार्थियों की जानकारी एकत्र करने में मदद करेगा।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे व संग्रहणीय कार्य की सराहना भी की जाए तथा कक्षा के प्रदर्शन पट्ट पर भी लगाया जाए।
- जिनका काम स्तरीय नहीं है उन्हें प्रयासपूर्वक करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : एक प्रपत्र

विषय : विदेश में रहने का आकर्षण।

उद्देश्य :

- अपने सपनों का वैज्ञानिक आधार पर निरीक्षण एवं परीक्षण सिखाना।
- तर्क बुद्धि से काम लेना सिखाना।
- विदेशों में जाकर बसने की भावना को कमजोर करना।
- देश सेवा और समाजसेवा सिखाना।
- लाभ हानि के आधार पर योजना बनाना सिखाना।
- लेखन कौशल में प्रवीणता लाना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा तथा विषय संबंधी प्रपत्र की प्रति विद्यार्थियों को भरने के लिए देगा।
2. यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर होगी।
3. इस प्रक्रिया में लगभग 20–25 मिनट का समय लगेगा।
4. अध्यापक चाहे तो इनका मूल्यांकन बाद में कर सकता है।
5. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

कार्य प्रपत्र

1. किस देश में जाना चाहते हैं? .....
2. क्यों जाना चाहते हैं? .....
3. क्या वहां की शिक्षा का स्तर भारत से बेहतर है? .....
4. क्या वहाँ कार्य की गुणवत्ता का स्तर ऊँचा है? .....
5. क्या वहाँ धन दौलत कमाने के अवसर अधिक हैं? .....
6. क्या आप अपने माता पिता के प्रति उत्तरदायित्व से कतराना चाहते हैं? .....
7. क्या वहाँ के जीवन का आकर्षण तीव्र हैं? .....
8. क्या भारत में पक्षपात व भेदभाव है? .....
9. क्या आप मातृभूमि के उपकारों को भुला रहे हैं? .....
10. क्या हर योग्य व्यक्ति को विदेश में बसना चाहिए? .....

नोट: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में दिया जाए।

टिप्पणी : मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक स्वयं निर्धारित करेगा।

प्रतिपुष्टि :

- सही और स्पष्ट उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अधिक उत्तर सही न लिखने वालों को सही दिशा निर्देश दिए जाएँ।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य-4 : परिचर्चा

विषय : चाटुकारिता का बढ़ता चलन।

उद्देश्य :

- सच्ची प्रशंसा एवं चाटुकारिता में अंतर पहचानना।
- चाटुकारिता के बढ़ते प्रभाव के प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- चाटुकारिता करने व करवाने से दूर रहना।
- निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
- चिंतन मनन की क्षमता का विकास करना।
- सहभागिता के महत्व को समझाना।
- तार्किकता एवं प्रामाणिकता के प्रति आग्रह उत्पन्न करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में विषय को स्पष्ट करेगा।
2. सम्पूर्ण कक्षा को चार या पांच समूहों में विभक्त कर देगा।
3. प्रत्येक समूह प्रदत्त विषय पर आपस में चर्चा करेंगे।
4. अध्यापक प्रत्येक समूह की गतिविधि का निरीक्षण करेगा।
5. इस प्रक्रिया में 20-25 मिनट लगेंगे।
6. अंत में परिचर्चा से उभरने वाले मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखवाया जाएगा।
7. मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- तर्क एवं प्रमाण
- सहभागिता

टिप्पणी :

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी बना सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- जिस समूह ने पूरी निष्ठा एवं लगन से परिचर्चा की उनकी सराहना की जाए।
- अन्य समूहों को परिचर्चा में पूरे उत्साह से सहभागिता के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : आशु भाषण

विषय : पत्रकारिता प्रजातंत्र का चौथा खंभा है

उद्देश्य :

- पत्रकारिता के महत्व को जानना।
- प्रजातंत्र के अर्थ को समझाना।
- भाषण कला में प्रवीणता प्राप्त करना।
- वाचन-कला-दक्षता में कुशलता प्राप्त करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर होगी।
2. अध्यापक विषय को स्पष्ट करेगा।
3. 5 मिनट का समय सोचने के लिए दिया जाएगा।
4. सभी बच्चों को कक्षा के सामने 1-1 मिनट बोलने के लिए कहा जाएगा।
5. सभी भाषणों के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
6. मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- सुसम्बद्ध तर्क व प्रमाण
- भाषा तथा उच्चारण

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार मूल्यांकन आधार तय करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे वक्ता तथा आशुभाषण देने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- संकोची एवं तथ्य निरूपित न कर पाने वाले विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन किया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

साना साना हाथ जोड़ि

मधु कांकरिया

प्रदत्त कार्य-1 : किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाकर हिन्दी, अंग्रेजी के महीनों के नाम एवं तिथियां दर्शाते हुए कैलेण्डर तैयार करना।

उद्देश्य :

- रचनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करना।
- हिन्दी की तिथियों एवं महीनों का ज्ञान कराना।
- कल्पना शक्ति का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल की अभिवृद्धि करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विषय की पूर्ण जानकारी देंगे।
3. गतिविधि से दो दिन पूर्व शिक्षक छात्रों से कैलेण्डर बनाने की सूचना देंगे तथा कक्षा को समूहों में विभक्त कर देंगे।
4. प्रत्येक समूह को एक एक महीने का कैलेण्डर बनाने के लिए कहा जाएगा। जनवरी से दिसम्बर तक के महीने। एक-एक महीने के हिसाब से छात्रों को बता दिए जायेंगे तथा सभी विद्यार्थी संबंधित महीनों की तिथियां देख कर या उत्तर पुस्तिका में लिख कर लाएंगे ताकि गतिविधि के दिन उन्हें तिथियां लिखने में आसानी हो। कैलेण्डर बनाने की आवश्यक सामग्री जैसे पेपर, स्केच पैन, रंग इत्यादि विद्यार्थी गतिविधि के दिन लेकर आएँगे।
5. गतिविधि के समय प्रत्येक समूह अपने निर्धारित माह के लिए एक प्राकृतिक दृश्य चित्रित करेगा तथा नीचे तिथियां, हिन्दी तथा अंग्रेजी और महीनों के नाम दर्शाए जाएँगे।
6. इस गतिविधि के लिए 30 मिनट का समय दिया जाएगा। सभी विद्यार्थियों का प्रतिभागी होना आवश्यक है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

(चित्र के साथ तिथियां अलग से पेपर पर लिखकर लगाई जा सकती है इससे समय की बचत होगी) अलग-अलग विद्यार्थी अलग-अलग कार्य करेंगे।

7. कैलेण्डर तैयार करने के बाद प्रत्येक माह के कैलेण्डर कक्षा में लगा दिए जाएंगे
8. गतिविधि के दौरान शिक्षक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
9. मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबंधित चित्रण
- साज सज्जा
- माह एवं तिथियां
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी रचना के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- छात्रों को हिन्दी तथा अंग्रेजी महीनों के अन्तर स्पष्ट किए जाएँ।
- हिन्दी माह जहां से भी शुरू हो छात्र वहीं से अपने अपने कैलेण्डर में लिखें तथा पिछले माह को भी पूरा कराया जाए जैसे यदि हिन्दी माह 15 तारीख से प्रारम्भ होता है तो 1 से 14 पर भी हिन्दी तिथियां लिखाई जाएँगी।

प्रदत्त कार्य-2 : कविताओं का चयन एवं वाचन।

विषय : फौजियों के योगदान से परिचित कराना।

उद्देश्य :

- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना।
- देश भक्ति की भावना का विकास करना।
- फौजियों के प्रति संवेदनशील बनाना।
- मौलिकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। फौजियों के जीवन पर चर्चा करेंगे।
3. प्रत्येक छात्र अपनी उत्तर पुस्तिका में उपर्युक्त विषय पर कल्पनाशीलता से एक अनुच्छेद लिखेगा।
4. सोचने तथा लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. इस दौरान अध्यापक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
6. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
7. लेखन के पश्चात् सभी छात्रों से लेखों को पढ़कर सुनाने के लिए कहा जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- क्रमबद्ध विचाराभिव्यक्ति
- भाषायी दक्षता तथा लिखावट

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी रचनाओं के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षक अच्छी रचनाओं को कक्षा में पढ़वाए जिससे उन छात्रों को भी प्रेरणा मिले जो ठीक प्रकार से विचाराभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।

प्रदत्त कार्य-3 : कार्य-प्रपत्र

विषय : गंतोक की जानकारी।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- सृजनात्मकता का विकास कराना।
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना।
- विभिन्न राज्यों के प्रति जुड़ाव महसूस कराना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. विषय की जानकारी दो दिन पूर्व दी जाएगी तथा छात्रों को विभिन्न राज्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
3. गतिविधि के समय निम्नलिखित कार्य प्रपत्र शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे (यह कार्य प्रपत्र छाया प्रतिलिपि (फोटो स्टेट) द्वारा भी भरवाया जा सकता है)
4. सभी छात्र ध्यानपूर्वक उत्तरपुस्तिका में लिख लेंगे।

कार्य प्रपत्र

1. किसी एक राज्य एवं उसकी राजधानी का नाम

   .....

2. राज्य की प्रमुख वेशभूषा

   .....

3. खान-पान

   .....

4. वहां की प्रमुख भाषा (बोली)

   .....

5. प्रसिद्ध लोक नृत्य

   .....

6. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल

   .....

7. प्राकृतिक सौन्दर्य

   .....

8. जलवायु

   .....

9. खेती, उपज

   .....

10. प्रसिद्ध व्यक्ति

    .....

www.FirstRanker.com

5 उपर्युक्त कार्य प्रपत्र भरने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

6. शिक्षक कार्यप्रपत्र भरवाने के पश्चात् उन्हें एकत्र कर सुविधानुसार मूल्यांकित करेंगे या छात्रों से मूल्यांकन कक्षा में ही कराया जा सकता है।

7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रविष्टियां सही होने पर

प्रतिपुष्टि :

- सभी जानकारियां सही होने पर विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- शिक्षक सभी राज्यों के विषय पर संक्षिप्त चर्चा करें ताकि विद्यार्थी अधिक से अधिक राज्यों की जानकारी प्राप्त कर सकें।
- जिन छात्रों का कार्य संतुष्टिजनक नहीं हुआ हो उनकी अन्य छात्रों की सहायता से मदद की जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : संवाद लेखन

विषय : पर्यटक एवं पर्यटन गाइड के बीच।

उद्देश्य :

- पर्यटन की ओर रुचि बढ़ाना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- सामान्य ज्ञान का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय पर चर्चा करेंगे तथा पर्यटन में गाइड का महत्व समझाएँगे।
3. दो दो छात्रों का समूह बनाया जाएगा। एक छात्र पर्यटक तथा दूसरा गाइड की भूमिका निभाएगा।
4. इस गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व दी जाएगी।
5. विद्यार्थी अपने शहर में देखे हुए किसी स्थल विशेष पर संवाद तैयार करेंगे जैसे यदि दिल्ली में हैं तो

www.FirstRanker.com

कुतुबमीनार, इंडियागेट, लालकिला आदि हो सकते हैं अन्यथा आपका विद्यालय, बाजार, घर का रास्ता आदि विषय भी हो सकते है। गाइड बना विद्यार्थी संबंधित विषय के संबंध में गाइड करेगा तथा दूसरा पर्यटक बना छात्र प्रश्न पूछेगा।

6. संवाद पांच से दस वाक्यों में हो सकते हैं।
7. संवाद तैयार करने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
8. शिक्षक इस बीच सभी छात्रों की गतिविधि का निरीक्षण करेंगे
9. मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
10. संवाद तैयार करने के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए 1-1 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय की जानकारी
- स्पष्ट एवं सार्थक संवाद
- भाषा / प्रस्तुतीकरण / हाव भाव

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे एवं सार्थक संवाद करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- छात्रों को शिक्षक यह जानकारी भी अवश्य दें कि पर्यटन को किस प्रकार आजीविका का साधन बनाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-5 : सही / गलत के निशान लगाना।

विषय : पाठ पर आधारित वाक्यांश।

उद्देश्य :

- विषय की पूर्ण जानकारी देना।
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- निर्णय क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. यह गतिविधि शिक्षक पाठ को पढ़ाने के पश्चात् कराएँगे।

3. छात्रों को प्रारम्भ में ही इसके संकेत दे दिए जाएं।

4. अध्यापक नीचे दिए गए वाक्यांशों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा छात्रों से सावधानी पूर्वक उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहा जाएगा। वाक्यांश के सामने बने बॉक्स में सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिन्ह लगाने के लिए कहा जाएगा।

5. यह कार्य छाया प्रतिलिपि (फोटो स्टेट) के माध्यम से भी कराया जा सकता है।

कार्य प्रपत्र

सही / गलत चुनिए:-

1. गैंगटॉक शहर इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर है। ☐
2. जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएं फहरा दी जाती हैं। ☐
3. कवी-लोंग स्टॉक में लेपचा और भुटिया सिक्किम की स्थानीय जातियों का संधि स्मारक एक पत्थर है। ☐
4. सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल एक प्रसिद्ध स्थान का नाम है। ☐
5. लायुंग झेलम नदी के तीर पर बसा लकड़ी का एक छोटा सा घर है। ☐
6. 'कटाओ' भारत का स्विट्जरलैंड माना जाता है। ☐
7. कवी-लोंग स्टॉक में फिल्म 'आलमआरा' की शूटिंग हुई थी। ☐
8. सिक्कमी युवती का स्वयं को इंडियन कहना देशद्रोही होने का प्रतीक है। ☐
9. धर्म चक्र (प्रेयर व्हील) घुमाने से मनुष्य अमर हो जाता है। ☐
10. जल संचय के लिए प्रकृति बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है। ☐

6. उपरोक्त कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

7. इस प्रक्रिया के दौरान शिक्षक कक्षा में घूम कर निरीक्षण करेंगे।

8. कार्य पूर्ण होने पर अध्यापक सभी विद्यार्थियों से प्रपत्र एकत्र कर लेंगे तथा फिर से विद्यार्थियों के बीच इस प्रकार वितरित करेंगे जिससे किसी दूसरे का प्रपत्र ही सबको मिले।

9. विद्यार्थियों की सहायता से इसका मूल्यांकन कराया जा सकता है। शिक्षक सबका उत्तर बताएंगे तथा विद्यार्थी प्रत्येक सही प्रविष्टि पर 1 अंक के हिसाब से अंक देंगे (अध्यापक सुविधानुसार भी मूल्यांकन कर सकते हैं)

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रत्येक सही उत्तर के लिए अंक

प्रतिपुष्टि :

- सभी उत्तर सही देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- विद्यार्थियों से मूल्यांकन कराने के लिए अध्यापक चाहे तो जिस समय विद्यार्थी प्रपत्र भरें उस समय कोई गुप्त नम्बर भी दे सकते हैं जिसकी जानकारी केवल अध्यापक को ही होगी।
- अध्यापक की सुविधा के लिए वाक्यांशों के सही विकल्प दिए जा रहे हैं।

1. √	2. √	3. √	4. X	5. X
6. √	7. X	8. X	9. X	10. √

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

शिवप्रसाद मिश्रा 'रूद्र'

प्रदत्त कार्य-1 : 'पत्रिका' तैयार करना।

विषय : स्वरचित रचना।

उद्देश्य :

- सृजनात्मकता का विकास करना।
- विभिन्न विधाओं से परिचित कराना।
- मौलिकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- कल्पनाशीलता का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- पठन कौशल का विकास करना।
- कलात्मकता की ओर उन्मुख करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से किया जाएगा लेकिन प्रस्तुतीकरण सामूहिक होगा।
2. शिक्षक सर्वप्रथम विषय की पूर्ण जानकारी गतिविधि से एक दिन पूर्व देंगे।
3. प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी पसंदीदा (हिन्दी साहित्यिक विधाओं में) किसी एक विधा नाटक, कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा वृतांत, चुटकुले, आलेख आदि पर स्वरचित रचना लिखने के लिए दी जाएगी।
4. विद्यार्थियों को यह भी निर्देश दिया जाए कि वह अपनी कृति कलात्मक ढंग से लिख सकते हैं तथा साज सज्जा भी कर सकते हैं।
5. लेखन कार्य के लिए 25 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम कर निरीक्षण करेंगे।
7. शिक्षक लेखन कार्य में समानता लाने के लिए सभी विद्यार्थियों को लिखने के लिए एक ही तरह का पेपर वितरित कर सकते हैं। (चार्ट पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है)

www.FirstRanker.com

8. शिक्षक मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

9. लेखन कार्य समाप्त होने पर सभी की कृतियाँ संगृहीत करके एक फाइल में विद्यार्थियों की मदद से लगाई जाएँगी।

10. सुविधानुसार शिक्षक उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रभावशाली भाषा
- कलात्मकता
- मौलिकता
- सृजनात्मकता
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार मान सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी एवं मौलिक रचनाओं की सराहना की जाए।
- अच्छी कृतियों को विद्यालय पत्रिका में अवश्य छपवाया जाए।
- शिक्षक पत्रिका को वास्तविक रूप देने के लिए कुछ विद्यार्थियों को मुख्य पृष्ठ सज्जा, संपादकीय आदि लिखने को दे सकते हैं उनका मूल्यांकन उन्हीं के आधार पर किया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-2 : क्षेत्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले त्योहारों का विवरण।

उद्देश्य :

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- भारतीय संस्कृति से परिचित कराना।
- संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास।
- सहभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. विषय की जानकारी गतिविधि से एक दिन पूर्व दी जाएगी। शिक्षक कक्षा में मुख्य त्योहारों से हटकर कुछ क्षेत्र विशेष से संबंधित त्योहारों का परिचय देंगे। उदाहरणार्थ –तीज, बड़मावस, गणगौर, वसंत पंचमी, गणेश चतुर्थी, नागपंचमी, ऋषि पंचमी, धनतेरस, भैया दूज, गोवर्धन पूजा, अनंत चौदस, शीतलाष्टमी, अहोई अष्टमी, जन्माष्टमी, छठ पूजा, करवा चौथ, शबे बारात, अलविदा जुमा, हजरत अली जन्म दिन इत्यादि।
3. गतिविधि के समय कक्षा को चार समूहों में विभाजित किया जाएगा।
4. प्रत्येक समूह अपनी जानकारी के अनुसार त्योहारों के नाम तथा उनका महत्व लिखेंगे।
5. इस कार्य के लिए उन्हें 10 से 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस बीच अध्यापक सभी समूहों में जाकर देखेंगे कि सभी विद्यार्थी अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं।
7. लेखन कार्य के उपरान्त प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा। एक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
8. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय की जानकारी
- प्रस्तुतीकरण
- (पाँच त्योहारों की संख्या अवश्य होनी चाहिए।)

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सही जानकारी देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षक विद्यार्थियों को उदाहरणार्थ 3 से चार त्योहारों के नाम ही बताएँ अन्य छात्र स्वयं लिखेंगे। त्योहारों की सूची शिक्षक की सुविधा के लिए दी गई है।

प्रदत्त कार्य-3 : नुक्कड़ नाटक मंचन

विषय : विदेशी वस्त्रों / वस्तुओं का त्याग एवं स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की प्रेरणा देते हुए नुक्कड़ नाटक ।

उद्देश्य :

- अभिनय कौशल का विकास करना।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- वाचन कौशल का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- देश प्रेम की भावना जागृत कराना।
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
2. कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
3. इस गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जाएगी। शिक्षक विषय की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश देंगे।
4. विद्यार्थी अपने समूह के साथ मिलकर इसकी तैयारी करेंगे।
5. बीच बीच में शिक्षक छात्रों की सहायता करते हुए निरीक्षण करते रहेंगे तथा सभी छात्रों को प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित करेंगे।
6. गतिविधि के समय चारों समूह प्रस्तुतीकरण करेंगे, प्रत्येक समूह को पांच से सात मिनट का समय दिया जाएगा।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय सुसंबद्धता
- प्रस्तुतीकरण (भाषा, संवाद)
- अभिनय
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित आधार बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए तथा विद्यालय के मंच पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- मूल्यांकन के लिए शिक्षक अन्य शिक्षकों की मदद ले सकते हैं।
- नाटक के लिए बाहरी उपकरणों की आवश्यकता नहीं है। विद्यालय गणवेश में ही विद्यार्थी नाटक प्रस्तुत कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-4 : अनुच्छेद लेखन

विषय : जीवन में उपहारों का महत्व।

उद्देश्य :

- मानवीय संवदेनाओं की अनुभूति कराना।
- आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- सामाजिक व्यवहार की जानकारी देना।
- लेखन में मौलिकता लाने का प्रयास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। विद्यार्थियों के साथ उपहारों के महत्व पर चर्चा करेंगे। उदाहरण के लिए जैसे उपहार प्रेम और आशीर्वाद प्रकट करने के लिए दिए जाते हैं। उपहार लेना हमें बहुत खुशी देता है इत्यादि।
3. विद्यार्थी इस विषय पर अपने अपने अनुभव एवं विचार उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
4. इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
5. मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
6. लेखन के पश्चात् शिक्षक सभी विद्यार्थियों के लेखन कार्य को एकत्रित कर लेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- भाषायी दक्षता

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

- मौलिकता
- उपयुक्त उदाहरण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी रचनाओं को प्रोत्साहित अवश्य करें तथा कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- जो छात्र खुलकर विचार व्यक्त न कर पाएँ, उन्हें प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : समाचार पत्र के लिए ख़बर लेखन।

विषय : विद्यालयी गतिविधियाँ।

उद्देश्य :

- पत्रकारिता के विषय में जानकारी देना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- विषयों को बारीकी से जानना।
- एकाग्रता की प्रवृत्ति को विकसित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. सर्वप्रथम शिक्षक 'समाचार' लेखन से परिचत कराएंगे। इस विषय की जानकारी पाठ पढ़ाने के उपरान्त तथा गतिविधि से एक दिन पूर्व दी जाएगी। विद्यार्थी संपादक और रिपोर्टर के रूप में रिपोर्ट ख़बर लिखेंगे।
3. विद्यालय में होने वाली किसी गतिविधि जैसे – खेल प्रतियोगिता, कला प्रतियोगिता, भाषण, विज्ञान, प्रदर्शनी या उनके क्षेत्र में होने वाली किसी गतिविधि से संबंधित जानकारी को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थी अपने विद्यालय के विभिन्न विभागों के प्रमुखों की बातचीत को ख़बर में लिखेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

4. ख़बर कैसे लिखी जाती है? शिक्षक समाचार पत्रों से उदाहरण दे सकते हैं। और ख़बर लिखने का ढाँचा भी बता सकते हैं।
5. इस कार्य के लिए उन्हें 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस बीच शिक्षक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
7. मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
8. ख़बर लेखन के बाद सभी विद्यार्थी एक एक करके पढ़कर सुनाएँगे।
9. इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- मौलिकता
- वाक्य संरचना
- भाषायी दक्षता
- प्रस्तुतीकरण

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन बिन्दुओं को भी मूल्यांकन के आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी रचना के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जो विद्यार्थी ठीक से कार्य नहीं कर पाए उनकी सहायता की जाए। शिक्षक विद्यार्थियों को समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने की प्रेरणा अवश्य दें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मैं क्यों लिखता हूँ

अज्ञेय

प्रदत्त कार्य-1 : भाषण

विषय : विज्ञान के दुरूप्रयोग को रोकने में साहित्य की भूमिका।

उद्देश्य :

- समझ एवं चिंतन का विकास।
- अध्ययन करने की प्रवृति का विकास।
- लेखन कौशल में वृद्धि और सुधार लाना।
- अनुशासन एवं आत्मविश्वास में वृद्धि।
- विज्ञान के साथ साहित्य की समझ।

निर्धारित समय : विद्यार्थी की संख्या के अनुसार

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक विद्यार्थियों को विषय के बारे में समझाएंगे।
3. विषय देकर सभी विद्यार्थियों को भाषण का समय तथा दिन बता दिया जाएगा।
4. सभी विद्यार्थी भाषण में भाग लें इस बात का ख्याल रखा जाए।
5. अध्यापक गतिविधि के लिए विद्यार्थियों को उत्साहित करें तथा मार्गदर्शन भी करें।
6. निश्चित पीरियड़ से क्रमांक तथा तैयारी के अनुसार विद्यार्थियों से भाषण सुनेंगे।
7. अध्यापक प्रत्येक समूह के पास जाकर उनके कार्य का निरीक्षण करेगा।
8. तत्पश्चात् प्रत्येक समूह से एक प्रतिनिधि छात्र अपने लिखे हुए कार्य की प्रस्तुति करेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषयवस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतन्त्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- जिन विद्यार्थियों ने अच्छा कार्य किया उनकी सराहना की जायेगी।
- अन्य छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा जिससे वह भी सही कार्य संपन्न कर सकें।

प्रदत्त कार्य-2 : प्रातः कालीन भ्रमण।

उद्देश्य :

- सुबह के प्राकृतिक वातावरण और दृश्यों को देखकर उन्हें अनुभव करने की प्रेरणा देना।
- लेखन कौशल में प्रवीण बनाना।
- सुबह की सैर स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है और रोगों से मुक्त रखती है, जानकारी देना।
- सृजनात्मक क्षमता की वृद्धि करना।
- सुबह जल्दी उठने के लिए प्रोत्साहित करना।
- अवकाश के दिनों में छात्र सुबह सैर करने जाएँ, इसके लिए प्रेरित करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक कक्षा को चार समूहों में विभक्त करेंगे।
   - ★ एक समूह ऐसा बनाया जायेगा जो चित्रकला में रुचि रखते हो उन्हें प्रातः कालीन दृश्य चित्रित करने के लिए दिया जाएगा।
   - ★ एक समूह को प्रातः कालीन भ्रमण अथवा दृश्य पर कविता लिखने को कहा जायेगा।
   - ★ एक समूह प्रातः कालीन भ्रमण के लाभ लिखते हुए एक अनुच्छेद लिखेगा।
   - ★ अन्तिम समूह मित्र को पत्र लिखेगा जिसमें प्रातः कालीन भ्रमण के लिए प्रेरित किया जायेगा।
3. सभी समूहों को प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए 25 मिनट दिए जाएँगे।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- सम्पूर्ण प्रभाव

टिप्पणी :

- इस गतिविधि के लिए शिक्षक अपनी इच्छानुसार किन्हीं और बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम समूह के कार्य को कक्षा में लगाया जाए।
- उनके कार्य की प्रशंसा की जाए।
- सबसे कम अंक पाने वाले समूह को प्रोत्साहन दिया जाए कि वह बेहतर कार्य करके दिखाएँ।

प्रदत्त कार्य-3 : रिपोर्ट तैयार करना।

विषय : हिरोशिमा परमाणु विस्फोट पर जानकारी प्राप्त कर रिपोर्ट तैयार करना।

उद्देश्य :

- हिरोशिमा के बारे में जानकारी।
- चिंतन एवं समझ का विकास।
- रिपोर्ट लिखने की कला का विकास।
- प्रस्तुति एवं भाषा का विकास।
- ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिवर्तन की समझ का विकास।

निर्धारित समय : एक सप्ताह जानकारी एकत्र करने के लिए एवं एक कालाशं प्रस्तुति के लिए।

प्रक्रिया :

1. अध्यापक अपनी सुविधानुसार सामूहिक तथा व्यक्तिगत कार्य करा सकते हैं।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कार्य के स्वरूप को समझाएंगे।
3. कक्षा को अपनी सुविधानुसार एकक या सामूहिक वर्ग में विभाजित कर लें।
4. प्रत्येक समूह या विद्यार्थी को कार्य पूरा करने के लिए समय दिया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

5. निर्धारित समय पर विद्यार्थियों के कार्य को एकत्रित कर मूल्यांकन के आधार पर अध्यापक मूल्यांकन करेंगे।
6. कार्य देने से पहले मूल्यांकन के आधार विद्यार्थियों को बता दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- प्रभावशाली रिपोर्ट
- साधारण रिपोर्ट
- अतिसाधारण

टिप्पणी :

- इसके अतिरिक्त शिक्षक स्वतन्त्र रूप से भी मूल्यांकन आधार तैयार कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक समूह को उत्साहित करते हुए उनहें सराहा जायेगा।
- सक्रिय भाग न लेने वाले छात्रों को सुझाव दिए जायेंगे जिससे उनके कार्य में सुधार आए।

प्रदत्त कार्य-4 : सामूहिक चर्चा

विषय : सभ्यता के विकास के लिए विवेक आवश्यक - सामूहिक चर्चा।

उद्देश्य :

- विकास के अर्थ को समझेंगे।
- चिंतन एवं भावनात्मक कौशल का विकास।
- अभिव्यक्ति का विकास।
- अनुशासन एवं आत्मविश्वास का विकास।
- सहभागिता एवं समानुभूति की भावना का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य।
2. अध्यापक विषय को स्पष्ट कर परिचर्चा आरंभ करेंगे।
3. परिचर्चा में सभी समूहों के योगदान का ध्यान रखेंगे।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

4. समूह के साथ विद्यार्थियों का भी ध्यान रखें कि प्रत्येक विद्यार्थी परिचर्चा में भाग ले सके।
5. अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि कौन सा समूह तथा विद्यार्थी परिचर्चा में अच्छा प्रदर्शन कर रहा हैं।
6. चर्चा आरंभ करने से पहले विद्यार्थियों को मूल्यांकन बिन्दु बता दिएं जाएं।
7. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
8. अध्यापक सुविधानुार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु
- प्रस्तुतीकरण
- भाषा

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वेच्छा पूर्वक किन्हीं अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- जिस समूह ने सर्वोत्तम लिखा उनकी सराहना की जायेगी तथा कक्षा में पढ़कर सुनाया जा सकता है।
- अन्य समूह के छात्रों को प्रोत्साहन दिया जाएगा जिससे उनका कार्य बेहतर हो सके।

प्रदत्त कार्य-5 : डायरी लेखन

विषय : व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी घटना का वर्णन।

उद्देश्य :

- डायरी लेखन विधा से परिचित कराना।
- अपने कार्य को योजनाबद्ध ढंग से लिखना सिखाना।
- स्वयं के विचारों को सुनियोजित रूप देना सिखाना।
- समय, तिथि, घटनाओं को स्मरण रखने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- एकाकी क्षणों में डायरी पढ़ने का आनन्द लेना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रक्रिया :

- यह कार्य अध्यापक द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक विद्यार्थी को दिया जायेगा।
- अध्यापक कुछ संकेत श्यामपट्ट पर लिखेगा जैसे स्थान, समय, कारण इत्यादि।
- छात्र अपने जीवन से जुड़ी किसी घटना का उल्लेख तिथि समयानुसार करेंगे।
- छात्र किसी आंखों देखी घटना का वर्णन भी कर सकते हैं जिसका प्रभाव उनके मानस पटल पर काफी गहरा है।
- लेखन के पश्चात् शिक्षक सबसे सामग्री एकत्र करके सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन आधार बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लेखन कौशल
- भाषायी दक्षता
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अन्य आधार बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- जो छात्र लिखने में असमर्थ हैं, उन्हें अध्यापक द्वारा मार्ग दर्शन दिया जाएगा।
- प्रतिभाशाली छात्रों की सराहना की जायेगी।
- किसी रोचक घटना को कक्षा में पढ़कर भी सुनाया जा सकता है।

www.FirstRanker.com

व्याकरण

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

क्रिया

प्रदत्त कार्य-1 : कार्य प्रपत्र

विषय : संयुक्त क्रिया

उद्देश्य :

- संयुक्त क्रिया की परिभाषा से अवगत कराना।
- संयुक्त क्रिया के शब्दों के उदाहरण देना।
- सरल एवं संयुक्त क्रिया के अन्तर को समझाना।
- व्याकरण के ज्ञान से लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह गतिविधि प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से कक्षा में करने के लिए दी जायेगी।
2. दो उदाहरण विद्यार्थियों को बताए जायेंगे जैसे बैठ जाओ, आकर बैठ जाओ, चौंका, चौंक पड़ा।

   उपर्युक्त में 'आकर' और 'पड़ा' क्रमशः क्रियाएँ हैं जो वाक्य में जुड़कर एक दूसरे वाक्य की रचना करती हैं।

   छात्रों को प्रपत्र दिया जाएगा जिसमें वह संयुक्त क्रियाएँ भरेंगे।
3. मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

कार्य प्रपत्र

		संयुक्त क्रिया
1.	पिता जी आए	.....
2.	वह चिल्लाया	.....
3.	सीमा सोई	.....
4.	शिकारी ने जानवर को मारा	.....
5.	उसने खाना बनाया	.....
6.	छात्र दौड़ता है	.....
7.	इस पत्र को दे दो।	.....

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

8. वह जाती है। .....

9. मैं खाना खाता हूँ। .....

10. विवेक खेलता है। .....

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही वाक्य

प्रतिपुष्टि :

- कमजोर छात्रों की सहायता की जायेगी।
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के कार्य को सराहा जायेगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

विशेषण

प्रदत्त कार्य-1 : व्याकरण

विषय : विशेषण / विशेष्य (खेल प्रश्नोत्तरी)

उद्देश्य :

- विशेषण एवं विशेष्य दोनों के अन्तर को समझाना।
- कल्पना शक्ति का विकास।
- शब्द ज्ञान में वृद्धि।
- विशेषण शब्द भाषायी दक्षता में सहायक, जानकारी देना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा को दो समूहों में बांटेगा।
2. इसके पश्चात् एक खेल खेला जायेगा इसके लिए दो नेता चुन लिए जायेंगे जो श्यामपट्ट पर साथ साथ अंक भी लगायेंगे।
3. दोनों समूहों को इस खेल के लिए दस दस मिनट का समय दिया जायेगा।
4. पहले एक समूह प्रश्न पूछेगा और दूसरा समूह विशेषण शब्द लगाकर उत्तर देगा।
   - जैसे आकाश कैसा है?
   - उत्तर – आकाश नीला है या विस्तृत है अथवा स्वच्छ है।
5. इस प्रकार प्रत्येक समूह पूछे गए दस प्रश्नों के उत्तर देगा।
6. प्रश्नों की सूची पहले से तैयार की जा सकती है।
7. अध्यापक के सहयोग से समूह नेता अंक श्यामपट्ट पर लिखते जायेंगे प्रत्येक प्रश्न का आधा अंक होगा।

प्रतिपुष्टि :

- अधिक अंक पाने वाले समूह की एवं क्रियाशील प्रतिभागी की प्रशंसा की जायेगी।
- दूसरे समूह को उत्साहित किया जायेगा ताकि वे अच्छा कर सकें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रदत्त कार्य–2 : व्याकरण

विषय : पाठ्य पुस्तक के अध्याय में से विशेषण शब्दों को चयन एवं प्रयोग।

उद्देश्य :

- विद्यार्थियों के समझने की शक्ति को विकसित करना।
- लेखन कुशलता का विकास करना।
- विशेषण और विशेष्य के अन्तर को स्पष्ट करना।
- कल्पना शक्ति का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम कक्षा को चार समूहों में बाँटा जायेगा।
2. प्रत्येक समूह को अलग–अलग कार्य दिया जायेगा।
   - पहला समूह दिए गए विशेषण शब्दों के स्थान पर दूसरे विशेषण शब्द लगाएगा।

     मंझोला कद, सफेद चेहरा, मूसलाधार बरसात, सुशील बहु, खाली डिब्बा, भूरी आँखें, अन्तिम गली, खेलते हुए बच्चे, साफ सुथरा कमरा, संगीत प्रेमी व्यक्ति
   - दूसरा समूह नीचे दिए गए शब्दों के स्थान पर (रेखांकित शब्द) दूसरे शब्द (विशेष्य) लिखेगा।

     स्वच्छ **आकाश**, काली **टोपी**, रंगीन **बल्ब,** उमसभरी **सांय**, सफेद **बादल**, बुद्धिमान **व्यक्ति**, निर्लज्ज **आदमी**, निर्गुण **भक्ति**, चांदनी **रात**, अशुद्ध **जल**
   - तीसरे समूह को निम्न शब्दों से विशेषण बनाने को कहा जायेगा।

     लालच, मिठास, भूल, घर, जंगल, सुंगध, बनारस, अपमान, पाप, भारत
   - चौथा समूह विशेषणों के वचन बदल कर लिखेगा।

     चमकीला, अच्छे, हठीला, कँटीला, सस्ता, बूढ़ा, चिकना, शर्मीला, ऊँचे, पुराने
3. अध्यापक विद्यार्थियों से लेखन सामग्री एकत्र कर सुविधानुसार जाँचेगा।
4. मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जाएगें

टिप्पणी : मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक स्वयं निर्धारित करेगा।

www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- जिन छात्रों को समझ में नहीं आया है उनका मार्ग दर्शन किया जायेगा।
- सफल विद्यार्थियों की प्रशंसा की जायेगी।

प्रदत्त कार्य-3 : व्याकरण

विषय : क्रिया विशेषण के भेद (सामूहिक कार्य)

उद्देश्य :

- क्रिया विशेषण की सही जानकारी देना।
- विद्यार्थियों की भाषा को व्याकरण सम्मत बनाना।
- क्रिया और क्रिया विशेषण शब्दों के अन्तर को स्पष्ट करना।
- लेखन कला का विकास करना
- व्याकरण में रुचि उत्पन्न करना

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा कक्षा को चार समूहों में बांटा जायेगा
2. उन्हें स्थान वाचक, काल वाचक, रीति वाचक और परिमाण वाचक क्रिया विशेषण नाम दिए जाएँगे।
3. प्रथम समूह को स्थानवाचक विशेषण सम्बन्धी दस वाक्य लिखने के लिए दिए जाएँगे।
4. दूसरा समूह काल वाचक विशेषण संबधी दस वाक्य लिखेगा।
5. तीसरा समूह रीति वाचक क्रिया विशेषण सम्बन्धी दस वाक्य लिखेगा।
6. चौथे समूह को परिमाण वाचक क्रिया विशेषण संबंधी दस वाक्य लिखने के लिए कहा जायेगा।
7. अध्यापक कुछ उदाहरण श्याम पट्ट पर लिख देगा ताकि छात्र समझ जाएँ।
8. मूल्यांकन बिन्दु भी श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
9. सभी समूह परस्पर चर्चा करेंगे और लिखना प्रारम्भ करेंगे।

टिप्पणी : मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक स्वयं तय करेगा।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में ऐसे छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा जो समझ नहीं पा रहे हैं।
- उत्तम छात्रों की सराहना की जायेगी और उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

पद परिचय

प्रदत्त कार्य : नाटकीकरण

विषय : पद परिचय

उद्देश्य :

- व्याकरण को मनोरंजक बनाना।
- पद परिचय के हर चरण का रोचक तरीके से ज्ञान।
- प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता होना।
- लेखन, वाचन, श्रवण, पठन सभी कौशलों का विकास होगा।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक 'पद परिचय' की स्पष्ट अवधारणा विद्यार्थियों के मन में बैठाने के लिए सम्पूर्ण कक्षा के सहयोग से उसे नाटकीकृत कराएगा।
2. पूरी कक्षा पहले आठ समूहों में बंटेगी नीचे दिखाई गई तालिका के अनुसार
3. पद परिचय के सभी भेदों से विद्यार्थी पूर्व परिचित है।
4. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, योजक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक और इनके भेद। व्याकरण के प्रत्येक अंग को एक पात्र बनाकर कक्षा में वितरित कर दिया जाएगा।
5. अब अध्यापक चार वाक्य पद परिचय के लिए श्यामपट्ट पर लिखेगा।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक
व्यक्ति वाचक	*पुरुष वाचक*	*गुण वाचक*	*अकर्मक*	*रीति वाचक*		*समानधि करण*	*विस्मय*
जाति वाचक	*निश्चय वाचक*	*परिमाण वाचक*	*सकर्मक*	*परिमाण वाचक*		*व्यधिकरण*	*शोक*
भाववाचक	*अनिश्चय वाचक*	*संख्या बोधक*	*काल वाचक*	*काल वाचक*			*हर्ष*

www.FirstRanker.com

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक
कारक	*प्रश्न वाचक*	*सार्वनामिक*		*स्थान वाचक*			*तिरस्कार*
लिंग	*संबंध वाचक*						*संवदेना*
वचन	*निज वाचक*						*भय*
							चेतावनी
							क्रोध

6. अब प्रत्येक विद्यार्थी अपने अपने पात्र के अनुसार अपनी जगह से उठकर उत्तर बताएगा।

   जैसे वाक्य है – हम देहरादून घूमने गए।

   अब जो विद्यार्थी सर्वनाम बना है वह खड़ा होगा। फिर उसका भेद पुरुषवाचक सर्वनाम खड़ा होगा। तत्पश्चात् देहरादून के परिचय के लिए संज्ञा खड़ा होगा। फिर उसका भेद व्यक्तिवाचक संज्ञा खड़ा होगा। इसी प्रकार इनके कारक, लिंग और वचन खड़े होंगे। घूमने गए के लिए क्रिया और उसका भेद खड़ा होगा।

7. इस विधि से विद्यार्थी खेल ही खेल में पद परिचय सीख लेगा

8. मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही पहचान
- तत्काल उत्तर

प्रतिपुष्टि :

- सही एवं तत्काल उत्तर देने वाले छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी सराहना की जाए।
- सही उत्तर न देने वालो को पुनः समझाया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

वाक्य के भेद

प्रदत्त कार्य-1 : व्यक्तिगत कार्य

विषय : रचना के आधार पर भेद।

उद्देश्य :

- व्याकरण को सरल एवं रोचक बनाना।
- रचना के आधार स्पष्ट करना।
- विद्यार्थियों की भाषा को व्यारकण सम्मत करना।
- व्याकरण जानने की इच्छा उत्पन्न करना।
- लेखन एवं वाचन कौशल में दक्षता।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा को वाक्य के भेदों की जानकारी देगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

2. अध्यापक बताएँगे कि वाक्य परिवार का मुखिया है। उसकी दो संताने हैं रचना और अर्थ। रचना की तीन संताने हैं – सरल, संयुक्त और मिश्र। अर्थ के आठ संताने हैं – विधि, विधान, प्रश्न, निषेध, संभावना, आज्ञा, इच्छा, विस्मय आदि। आज हम रचना की संतानों के विषय पर कार्य करेंगे।
3. अध्यापक श्यामपट्ट पर दस वाक्य लिख देगा।
4. अध्यापक को इस सब कार्य में 10–15 मिनट का समय लगेगा।
5. विद्यार्थी प्रत्येक वाक्य का रचना के आधार पर वर्गीकरण कर उसका नाम लिखेंगे।
6. इसमें 10–15 मिनट का समय लगेगा।
7. मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
8. यह प्रक्रिया 20–25 मिनट में पूरी हो जाएगी।
9. अध्यापक सही उत्तर बताकर साथ के साथ मूल्यांकन करा सकता है।
10. प्रत्येक विद्यार्थी सही उत्तर पर स्वयं अंक लगाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही उत्तर

प्रतिपुष्टि :

- सभी उत्तर सही देने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- जिस विद्यार्थी के ज्यादातर उत्तर सही न हो उसे फिर से वर्गीकरण समझाने का प्रयास किया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

वाक्य रचनांतरण

प्रदत्त कार्य-1 : समूह कार्य

विषय : वाक्य रचनांतरण।

उद्देश्य :

- वाक्यों के प्रकारों से परिचित कराना।
- वाक्य परिवर्तन में प्रवीणता लाना।
- वाक्य रचना में कुशलता प्रदान करना।
- मिल जुलकर काम करने की भावना का विकास करना।
- भाषायी दक्षता में वृद्धि करना।
- श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का विकास करना।
- विश्लेषण क्षमता में प्रखरता लाना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक कक्षा में वाक्य के भेद अच्छी तरह समझा देगा। तत्पश्चात् वे कितना समझे हैं यह जानने के लिए सम्पूर्ण कक्षा को तीन समूहों में बांट देगा जो इस प्रकार होगा।
   - सरल वाक्य समूह
   - संयुक्त वाक्य समूह
   - मिश्र वाक्य समूह
2. पहले सरल वाक्य समूह एक सरल वाक्य का संयुक्त एवं मिश्र वाक्य रचनांतरण दोनों समूहों से बनवाएगा।
3. फिर संयुक्त वाक्य समूह दोनों समूहों से एक संयुक्त वाक्य का सरल व मिश्र वाक्य बनवाएगा।
4. तत्पश्चात् मिश्र वाक्य समूह एक मिश्र वाक्य का सरल और संयुक्त रूप बनवाएगा।
5. इस प्रकार प्रत्येक समूह अपने अपने वाक्य भेद के अनुसार दूसरे समूहों से वाक्य परिवर्तन करवाएगा।

www.FirstRanker.com

6. यह प्रक्रिया प्रत्येक समूह को पांच – पांच वाक्य परिवर्तन कराने का अवसर देगी।

7. कम से कम 15 वाक्यों का रचनातरंण एक कालांश में करके विद्यार्थी विषय को अच्छी तरह हृदयंगम कर लेंगे।

8. मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- अध्यापक स्वयं निश्चित करेगा।

प्रतिपुष्टि :

- जिस समूह ने एक ही बार में सब उत्तर सही बताए, उनकी सराहना की जाए। जिस समूह का विद्यार्थी सही उत्तर देने में असमर्थ रहा उसे सही उत्तर समझाकर वाक्य रचना का सही स्वरूप समझाया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

वाक्य के आधार पर

प्रदत्त कार्य-1 : व्याकरण

विषय : वाक्य रूपान्तरण: समूह कार्य।

उद्देश्य :

- क्रिया के तीनों वाच्यों का ज्ञान।
- क्रिया में कर्ता, कर्म और भाव की प्रधानता की अवधारणा का स्पष्टीकरण।
- व्याकरण ज्ञान में वृद्धि।
- आत्म विश्वास में वृद्धि।
- व्यावहारिक ज्ञान एवं सहयोग भावना का विकास।
- विश्लेषण क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक प्रदत्त कार्य के लिए कक्षा में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य व भाव वाच्य समझाएगा।
2. सम्पूर्ण कक्षा को तीन समूहों में बांटा देगा।
   - कर्तृवाच्य समूह
   - कर्मवाच्य समूह
   - भाव वाच्य समूह
3. अब अध्यापक श्यामपट्ट पर 10 वाक्य लिख देगा और जिस वाच्य में परिवर्तन करना होगा। वही समूह उसका सही स्वरूप बताएगा।
4. दूसरे चरण में प्रत्येक समूह चार-चार वाक्य अपने प्रतिद्वंद्वी समूहों से बदलवाएगा जैसे -

   कर्तृवाच्य समूह - कर्मवाच्य, भाव वाच्य से

   कर्मवाच्य - कर्तृवाच्य, भाववाच्य से

   भाववाच्य - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य बनवाएगा

www.FirstRanker.com

5. इस तरह पूरी कक्षा को एक ही कालांश में तीनों वाच्य परिवर्तन की अवधारणा स्पष्ट हो जाएगी।

6. मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही उत्तर पर अंक दिया जाएगा।

प्रतिपुष्टि :

- पहली ही बार में सही उत्तर देने वाले विद्यार्थी / समूह की सराहना की जाए।
- अगर अधिकतर विद्यार्थी सही उत्तर नहीं दे पाए तो पुनः विषय स्पष्ट किया जाए और अभ्यास कराया जाए।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

सार लेखन

प्रदत्त कार्य-1 : सार लेखन

विषय : किसी भी साहित्यिक रचना का सार लेखन।

उद्देश्य :

- साहित्य की समझ विकसित करना।
- अभिव्यक्ति का विकास करना।
- भाषा की समझ तथा विकास।
- लेखन कौशल का विकास।
- रचनात्मक कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. इस कार्य को पाठ्यक्रम के अनुसार कराया जाएगा।
3. सर्वप्रथम शिक्षक उदाहरण के साथ गतिविधि को समाझाएंगे।
4. विद्यार्थियों को गतिविध की विधि तथा मूल्यांकन के आधार पहले बता देंगे।
5. गतिविधि के दिन किसी साहित्यिक रचना की फोटो कॉपी सभी विद्याथियों को बाँट देंगे।
6. सार लिखने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।
7. गतिवधि समाप्त होने पर अध्यापक अपनी सुविधानुसार पृष्ठों का संग्रह कर लें या बोर्ड की सहायता से मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- नोट – शिक्षक अनपी सुविधानुसार मूल्यांकन के आधार तथा अंक का निर्धारण कर सकते हैं।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण होने पर विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- कार्य में रूचि नहीं लेने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छा लिखने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

निबन्ध

प्रदत्त कार्य-1 : लेखन एवं वाचन

विषय : 'विद्यार्थी-जीवन' निबन्ध।

उद्देश्य :

- सृजनात्मकता का विकास करना।
- चिंतन एवं मनन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- विचाराभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।
- तार्किकता की क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
2. शिक्षक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे।
3. कक्षा को छह समूहों में विभाजित किया जाएगा।
4. सभी समूहों को निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श करके लिखने के लिए कहा जाएगा। एक समूह को एक विषय दिया जाए। विषय – प्रस्तावना, विद्यार्थी जीवन में ज्ञानार्जन, विद्या तथा चरित्र का महत्व, विद्यार्थी के आवश्यक गुण, प्राचीन विद्यार्थी और आधुनिक विद्यार्थी, विद्यार्थी के कर्तव्य एवं उपसंहार।
5. समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
6. इस बीच अध्यापक सभी समूहों का निरीक्षण करेंगे और देखेंगे कि सभी विद्यार्थी अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।
7. अपने अपने विषयों पर लेखन के पश्चात् सभी समूहों से एक छात्र प्रतिनिधि प्रस्तुतीकरण देगा यह कार्य निबंध के अनुसार क्रम से होगा।
8. मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

www.FirstRanker.com

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय वस्तु की जानकारी
- भाषायी दक्षता
- प्रस्तुतीकरण (उच्चारण आदि)

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों के लिए छात्रों की सराहना की जाए।
- जो विषय (विचार) विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नहीं किए गए हों अध्यापक उनको स्पष्ट करें ताकि निबंध प्रभावशाली बन सके।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

पत्र लेखन

प्रदत्त कार्य-1 : बधाई पत्र भेजना।

विषय : अध्यापक दिवस पर अध्यापक को।

उद्देश्य :

- पत्र लेखन विधा से परिचित कराना।
- भावनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- रचनात्मकता का विकास करना।
- पत्र भेजने की विधि से परिचित कराना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अध्यापक सर्वप्रथम विषय से संबंधित जानकारी देते हुए पत्र भेजने की विधि से अवगत कराएंगे।
3. सभी छात्र अपने विषय (हिंदी) अध्यापक के लिए शिक्षक दिवस पर बधाई पत्र तैयार करेंगे।
4. पत्र पर आवश्यक साज सज्जा की जाएगी (पत्र को कार्ड की भांति बनाकर / सजाकर) लिफाफे में भेजा जाएगा।
5. अध्यापक छात्रों को अपने नाम स्कूल के पते पर पत्र भेजने के लिए निर्देश देंगे।
6. इस गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व दी जाएगी ताकि विद्यार्थी आवश्यक सामग्री जैसे पेन्सिल स्कैच पैन आदि सामान ला सकें (यह कार्य 5 सितम्बर से पहले कराया जाना चाहिए)।
7. गतिविधि के समय छात्र बधाई पत्र (कार्ड) तैयार करेंगे। इस कार्य के लिए उन्हें 30 मिनट का समय दिया जाएगा।
8. गतिविधि के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों का निरीक्षण करेंगे।
9. पत्र लेखन के उपरांत शिक्षक सभी छात्रों का उसे डाकखाने में डालने के लिए मार्गदर्शन करेंगे तथा सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं देंगे (जैसे डाक टिकट लगाना आदि)

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

10. मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही छात्रों को बता दिए जाएंगे।

11. पत्र प्राप्त हो जाने के उपरांत शिक्षक सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सार्थक संदेश
- साज सज्जा
- समग्र प्रभाव

प्रतिपुष्टि :

- अच्छी कृति के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अच्छे पत्र कक्षा के प्रदर्शन बोर्ड पर अवश्य लगाएँ ताकि अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिल सके।
- जो विद्यार्थी ठीक प्रकार नहीं लिख सके उनका समुचित मार्गदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : कार्य-प्रपत्र

विषय : साहित्य में वर्णित नौ रसों पर आधारित कार्य प्रपत्र।

उद्देश्य :

- रसों की पहचान।
- रसों का महत्त्व एवं जानकारी।
- साहित्यिक समझ का विकास।
- चिंतन एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. यह कार्य विद्यार्थियों को 'रस' पढ़ाते समय कराया जाएगा।
3. अध्यापक 'रस' के बारे में विद्यार्थियों से चर्चा करेंगे।
4. मूल्यांकन के आधार विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
5. कार्य को पूरा करने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

कार्य प्रपत्र

क्रमांक	रस	स्थायी भाव	संबंधित पंक्ति
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- अध्यापक अपनी सुविधानुसार मूल्यांकन के आधार तय कर सकते हैं।

टिप्पणी :

- अध्यापक रस समझने के लिए किसी अन्य गतिविधियों का प्रयोग कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय योगदान दें।
- सभी सही उत्तरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सबसे पहले तथा उचित कार्य करने वाले विद्यार्थी की विशेष सराहना।

www.FirstRanker.com

CBSE
CONTINUOUS AND COMPREHENSIVE EVALUATION
KNOW - AS YOU GROW

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2–समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली–110092

www.FirstRanker.com